दैनिक
सांध्य प्रकाश
भोपाल की धड़कन

वर्ष 54/ अंक 5/ पृष्ठ 8 / मूल्य ₹2.10
संस्थापक- स्व. सुरेंद्र पटेल
■आर.एन.आई 22296/71 ■डाक पंजीयन मप्र/भोपाल/125/12-14

भोपाल, शुक्रवार 19 जुलाई 2024 भोपाल से प्रकाशित
dainiksandhyaprakash.in

रत्न भंडार में रखे हैं
भगवान जगन्नाथ
के कीमती आभूषण

माइक्रोसॉफ्ट सर्वर डाउन से दुनियाभर में हड़कंप... बैंक-विमान, फोन, कंप्यूटर सब पर असर

नई दिल्ली एजेंसी। माइक्रोसॉफ्ट कॉर्प की क्लाउड सर्विसेज में तकनीकी समस्या के चलते आज यानी, शुक्रवार (19 जुलाई) को भारत सहित दुनिया भर में बड़े पैमाने पर उड़ाने प्रभावित हुईं। कुछ फ्लाइट्स को कैंसिल करना पड़ा तो कुछ फ्लाइट डिले हुईं।माइक्रोसॉफ्ट के एज्योर क्लाउड और माइक्रोसॉफ्ट 365 सर्विसेज में परेशानी आई है। माइक्रोसॉफ्ट ने कहा, ÷हम इस मुद्दे से अवगत हैं और हमने कई टीमों को इसे सुलझाने के लिए शामिल किया है। हमने इसके कारण का पता लगा लिया है। दुनिया भर में विंडोज 10 यूजर्स को एक नए क्राउडस्ट्राइक अपडेट के कारण दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें ब्लू रिकवरी स्क्रीन पर अटक रही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कई यूजर्स तस्वीर शेयर करते हुए इस दिक्कत के बारे में बता रहे हैं।दुनिया भर में विंडोज 10 यूजर्स को एक नए क्राउडस्ट्राइक अपडेट के कारण दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें ब्लू रिकवरी स्क्रीन पर अटक रही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कई

यूजर्स तस्वीर शेयर करते हुए इस दिक्कत के बारे में बता रहे हैं।

बुकिंग, चेक-इन सहित अन्य ऑनलाइन सर्विसेज प्रभावित: अकासा एयरलाइंस ने बताया कि उसकी कुछ ऑनलाइन सर्विसेज मुंबई और दिल्ली एयरपोर्ट पर अस्थायी रूप से अनुपलब्ध रहेंगी। बुकिंग, चेक-इन सर्विसेज सहित हमारी कुछ ऑनलाइन सेवाएं अस्थायी रूप से अनुपलब्ध रहेंगी। स्पाइसजेट ने कहा- हम वर्तमान में उड़ान व्यवधानों पर अपडेट देने में तकनीकी समस्या का सामना कर रहे हैं। हमारी टीम इसे सुलझाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही है। किसी भी असुविधा के लिए खेद है और समस्या का समाधान हो जाने पर हम आपको सूचित करेंगे। अमेरिका की अल्ट्रा लो-कॉस्ट एयरलाइंस फ्रंटियर ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लिखा- हमारे सिस्टम वर्तमान में माइक्रोसॉफ्ट आउटेज से प्रभावित हैं, जिसका प्रभाव अन्य कंपनियों पर भी पड़ रहा है। इस दौरान बुकिंग, चेक-इन, आपके बोर्डिंग पास तक पहुंच और कुछ उड़ानें प्रभावित हो सकती हैं। हम आपके धैर्य की सराहना करते हैं। एयर इंडिया एक्सप्रेस ने कहा- डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर इश्यू को कारण ग्लोबल लेवल पर कई एयरलाइन और एयरपोर्ट प्रभावित हुए है। हमें असुविधा के लिए खेद है और इस दौरान आपके धैर्य और समझ की सराहना करते हैं।

ब्रिटेन में टीवी चैनल, ट्रेन और स्टॉक एक्सचेंज ठप

ब्रिटेन के एक प्रमुख न्यूज चैनल स्काई न्यूज का प्रसारण ठप हो गया है. चैनल के एग्जिक्यूटिव चेयरमैन डेविड रोड्स ने कहा कि स्काई न्यूज चैनल का प्रसारण नहीं हो पा रहा है. हमें इस व्यवधान के लिए खेद है. ब्रिटेन की रेल सेवाएं भी बाधित हुई हैं. न्यूज एजेंसी क्की सेवाएं भी बाधित हुई हैं. इंग्लैंड में हेल्थ बुकिंग सिस्टम भी ठप हो गया है

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने प्रदेश में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक लोकों के निर्माण कार्यों की प्रगति के संबंध में मंत्रालय में समीक्षा बैठक ली।

मानसून सत्र 22 से, 6 नए विधेयक पेश होंगे

नई दिल्ली एजेंसी। अगले सप्ताह शुरू होने वाले संसद के मानसून सत्र के दौरान आपदा प्रबंधन कानून में संशोधन सहित 6 नए विधेयक पेश किए जाएंगे। गुरुवार शाम लोकसभा सचिवालय की ओर से बताया गया कि इन विधेयकों की सूची प्रकाशित की गई। बता दें कि मानसून सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त तक चलेगा।

केंद्रीय बजट पेश करेंगी वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण: वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण मंगलवार, 23 जुलाई को केंद्रीय बजट पेश (Budget 2024) करेंगी। वित्त विधेयक के साथ ही लिस्टेड अन्य विधेयकों में भारतीय वायुयान विधेयक 2024, काफी (संवर्धन और विकास) विधेयक, बायलर विधेयक, और रबर (संवर्धन और विकास) विधेयक शामिल हैं। इस बीच लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला (Om Birla) ने संसदीय एजेंडा तय करने वाली कार्य मंत्रणा समिति का भी गठन कर दिया है।

समिति में ये लोग शामिल

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की अध्यक्षता वाली समिति में सुदीप बंद्योपाध्याय (TMC), पीपी चौधरी (BJP), लवू कृष्ण देवरायलु (तेदेपा), निशिकांत दुबे (भाजपा), गौरव गोगोई (कांग्रेस), संजय जयसवाल (BJP), दिलेश्वर कामत (जदयू), भर्तृहरि महताब (बीजेपी), दयानिधि मारन (द्रमुक), बैजयंत पांडा (भाजपा), अरविंद सावंत (शिवसेना-यूबीटी), के. सुरेश (Congress), अनुराग ठाकुर (भाजपा) और लालजी वर्मा (स्क) सदस्य बने हैं।

जबलपुर में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव कल

औद्योगिक विकास दर में मध्यप्रदेश को देश में नंबर 1 पहुंचाना है: मुख्यमंत्री

प्रमुख उद्योगपतियों सहित 3500 से अधिक निवेशक होंगे शामिल

भोपाल । मध्यप्रदेश में संतुलित और समतापूर्ण विकास की यात्रा आगे बढ़ाते हुए, राज्य सरकार शनिवार 20 जुलाई 2024 को सुबह 09.00 बजे से संस्कारधानी-जबलपुर में नेताजी सुभाष चंद्र बोस सांस्कृतिक और सूचना केंद्र में अपना दूसरा रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव (क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलन) आयोजित कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलन का शुभारंभ करेंगे। इस सम्मेलन का उद्देश्य क्षेत्रीय क्षमता का दोहन कर औद्योगिक विकास में असमानताओं को दूर करना है। जबलपुर क्षेत्र की औद्योगिक क्षमताओं और अवसरों से निवेशकों को रू-ब-रू करवाकर क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना है। नवाचारी सम्मेलन का उद्देश्य प्रमुख बाजारों से निवेशकों को एक साथ लाकर, सार्थक चर्चा करके सहयोग को बढ़ावा देना है। सम्मेलन में प्रमुख उद्योगपतियों, विभिन्न उद्योग संघों के प्रतिनिधियों, नौकरशाहों और प्रमुख विदेशी प्रतिनिधियों सहित 3500 से अधिक प्रतिभागी भाग लेंगे। आरआईसी में वैधनाथ समूह, आईटीसी, वोल्वो आयशर, बेस्ट कॉर्प, एसआरएफ और दावत समूह जैसे प्रमुख औद्योगिक समूह भाग लेंगे। आरआईसी में ताईवान, मलेशिया, यूके, फिजी, जापान और इंडोनेशिया का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख विदेशी प्रतिनिधि भी इसमें शामिल होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव वर्चुअली 60 से अधिक इकाईयों का उद्घाटन करेंगे और कार्यक्रम के दौरान उद्योगपतियों के साथ आमने-सामने चर्चा करेंगे। विशिष्ट अतिथि एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य काश्यप और पीडब्ल्यूडी मंत्री श्री राकेश सिंह सहित अन्य जन-प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे।

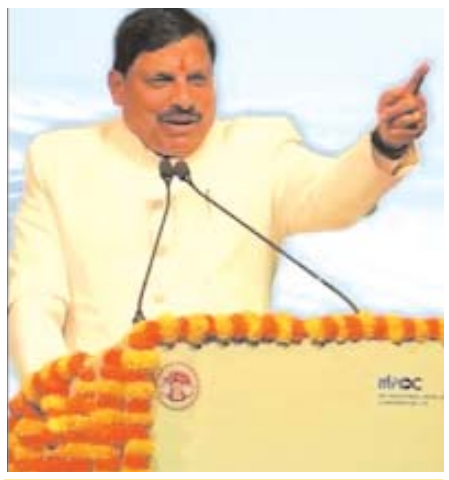

करेंगे मैन टू मैन चर्चा

सीएम मोहन यादव ने बताया कि पांच साल के रोडमैप के आधार पर काम कर रहे हैं। सिंगल विंडो सिस्टम में आ रही कमी को लेकर उन्होंने कहा कि मैन टू मैन प्रक्रिया को अपना रहे हैं। राज्य के निवेशकों से बातचीत कर रहे हैं, साथ ही बाहर के निवेशकों संपर्क कर रहे हैं। इसे और आगे बढ़ाया जाएगा। कलेक्टर दीपक सक्सेना ने बताया कि 10 करोड़ से ज्यादा का निवेश करने वाले 418 निवेशकों ने कान्क्लेव में आने की सहमति दी है। 55 निवेशक हैं ऐसे हैं जो कि 50 करोड़ से ज्यादा का निवेश करना चाहते हैं।

क्षेत्रीय सत्रों में होगी क्षेत्र विशेष में निवेश पर विस्तृत चर्चा

क्षेत्र की संभावनाओं पर केंद्रित 5 क्षेत्रीय सत्र आयोजित किए जाएंगे। इनमें कृषि, खाद्य एवं डेयरी प्र-संस्करण, रक्षा, खनन एवं खनिज, कपड़ा एवं परिधान तथा पर्यटन शामिल है। उद्योग संघों, स्टार्टअप्स और रक्षा, कपड़ा एवं परिधान के विशेषज्ञों के साथ गोलमेज चर्चा भी होगी। बताया गया कि सेक्टोरल प्रेजेंटेशन, वन-टू-वन बैठक और बायर-सेलर मीट के अलावा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में 64 इकाईयों का शिलान्यास और लोकार्पण किया जाएगा। कलेक्टर दीपक सक्सेना ने बताया कि कॉन्क्लेव को लेकर सभी हितधारकों के साथ और सेक्टोरल बैठक हो चुकी है।

योगी आदित्यनाथ का फैसला: कांवड़ यात्रा मार्ग पर खाने-पीने की दुकानों पर लिखना होगा संचालक का नाम

लखनऊ एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने फैसला लिया है कि पूरे प्रदेश में कांवड़ यात्रा मार्ग में आने वाली खाने-पीने की दुकानों पर संचालक का नाम और उसकी पहचान लिखना अनिवार्य है। पहले कहा गया था कि पश्चिमी यूपी के जिलों के लिए ही यह नियम लागू होगा, लेकिन अब सीएम कार्यालय ने स्पष्ट कर दिया है कि आदेश पूरे प्रदेश के लिए है। समाचार एजेंसी ने यूपी सीएम ऑफिस के हवाले से बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कांवड़ यात्रियों के लिए फैसला लिया है। पूरे यूपी में

कांवड़ मार्गों पर खाने-पीने की दुकानों पर %नेम प्लेट% लगानी होगी। यह निर्णय कांवड़ यात्रियों की आस्था की पवित्रता बनाए रखने के लिए लिया गया है। हलाल सर्टिफिकेशन वाले उत्पाद बेचने वालों पर कार्रवाई की जाएगी। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कहा कि कांवड़ यात्रा मार्ग के दुकानदारों का नाम लिखने का मुजफ्फरनगर पुलिस का फरमान गलत परंपरा है। यह सौहार्दपूर्ण माहौल को बिगाड़ सकता है। जनहित में प्रदेश सरकार को इस आदेश को तत्काल वापस लेना चाहिए।

धार विधायक नीना वर्मा को राहत, जानकारी छिपाने को लेकर लगी चुनाव याचिका हुई खारिज

धार। बीजेपी विधायक नीना वर्मा को बड़ी राहत मिल गई है। उनके खिलाफ लगी चुनाव याचिका हाईकोर्ट इंदौर खंडपीठ से खारिज हो गई है। उन पर आरोप था कि

चुनाव नामांकन फार्म में जानकारी छिपाई गई है। उन पर पुरानी चुनाव याचिका में दस हजार की कॉस्ट लगी थी, जो फार्म में नहीं बताई गई। लेकिन वर्मा द्वारा पेश दस्तावेज के बाद यह आपत्ति गलत पाई गई।

नीना वर्मा ने बता दिया सुप्रीम कोर्ट का आर्डर- याचिकाकर्ता सुरेश भंडारी ने आरोप लगाया था कि पुरानी चुनाव याचिका के दौरान उन पर दस हजार की कॉस्ट लगाई गई थी, जो इस नामांकन फार्म में नहीं बताया गया। नीना वर्मा की ओर से सीनियर अधिवक्ता चंपालाल यादव ने सुप्रीम कोर्ट का आर्डर रख दिया, जिसमें बताया गया कि इस कॉस्ट पर अंतरिम रोक लग गई थी। लेकिन याचिकाकर्ता भंडारी ने इस अंतरिम रोक की बात छिपा ली और सही तथ्य बताए बिना याचिका लगाई है।

एमपी के छह लाख किसानों को नहीं मिलेगी पीएम किसान सम्मान निधि की राशि

भोपाल। पीएम किसान सम्मान निधि योजना का लाभ अन्नदाताओं को तब तक नहीं मिलेगा, जब तक वह अपने बैंक खाते की ई-केवाइसी नहीं करवा लेते हैं। यही कारण है कि इस योजना के तहत मिलने वाली आर्थिक सहायता से अब भी प्रदे श के कई किसान वंचित रह जाते हैं।

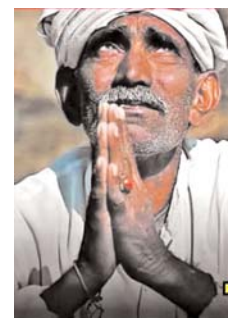

मध्य प्रदेश में हैं 87 लाख से भी अधिक किसान, मप्र में कुल 87 लाख 13 हजार 465 किसान पीएम किसान योजना के तहत पंजीकृत।, मप्र में चार लाख नौ हजार 812 किसानों की ई-केवाईसी लंबित है।, दो लाख 24 हजार 383 किसानों की ई-केवाईसी एवं रजिस्ट्रेशन लंबित।, इस तरह कुल छह लाख 34 हजार 186 किसान अब भी पीएम किसान योजना से वंचित हैं।, जानकारी के अनुसार पंजीकृत किसानों की ई-केवाईसी की जानी है।, इसके बाद ही इनको सरकार की योजनाओं का लाभ मिल सकेगा।

राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों के सीमावर्ती 49 आदिवासी बहुल जिलों को जोड़कर अलग भील प्रदेश बनाने की मांग

गोपेन्द्र नाथ भट्ट

दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़ और वागड़ अंचल में वर्षों से चली आ रही अलग भील प्रदेश की मांग गुरुवार को राजस्थान एवं गुजरात की सीमा पर स्थित आदिवासियों के जलियांवाला मानगढ़ धाम और राजस्थान विधान सभा से भी एक बार फिर से सुनाई दी। लोकसभा चुनाव 2024 में विजय का परचम लहराने के बाद बांसवाड़ा डूंगरपुर सांसद राजकुमार रोत ने संसद में शपथ लेने के वक्त भी भील प्रदेश की मांग की थी।

बांसवाड़ा जिले में मानगढ़ धाम पर राजस्थान के साथ मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र समेत 4 राज्यों के कुल 40 से ज्यादा जिलों से आदिवासी लाखों की संख्या में यहां एकजुट हुए। ये लोग इन जिलों को मिलाकर भील प्रदेश के गठन की मांग कर रहे हैं। गुजरात की सीमा से लगते मानगढ़ धाम की ऊंची पहाड़ियों पर आदिवासी सांस्कृतिक महारैली में बांसवाड़ा-डूंगरपुर से नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत और बागीदौरा विधायक जयकृष्ण पटेल मौजूद रहे। यहां पहाड़ी पर सभी वाहनों को जाने से रोक दिया गया है और करीब 3-4 किमी दूर पार्किंग स्थल बनाया गया। हालांकि इस महारैली में सिर्फ आदिवासी ही नहीं, बल्कि इस कार्यक्रम में कई मुस्लिम समाज के लोगों ने भी हिस्सा लिया। इस पूरे आयोजन में भारत आदिवासी पार्टी बाप के कार्यकर्ता और आदिवासी समाज इसलिए भी उत्साहित दिखा क्योंकि बांसवाड़ा लोकसभा चुनाव के साथ ही जिले

की बागीदौरा विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भी पार्टी ने झंडा गाड़ा है। कांग्रेस के दिग्गज नेता और फिर बीजेपी ज्वॉइन करने वाले महेंद्रजीत सिंह मालवीया की सीट पर जयकृष्ण पटेल 52 हजार वोटों से जीत गए थे. बाप पार्टी ने राजनीतिक ताकत बढ़ने के बाद से ही भील प्रदेश की मांग तेज कर दी थी. भील प्रदेश की मांग कर रहे लोगों का कहना है कि जल, जमीन और जंगल पर हमारा हक है. इस क्षेत्र में पांचवी अनुसूची लागू करने की भी मांग की जा रही है. बाप पार्टी की राजनीतिक ताकत बढ़ने के बाद बाप के कार्यकर्ताओं और नेताओं के हौसले बुलंद हो गए है।

इस मौके पर सांसद राजकुमार रोत ने कहा ÷हमारे पूर्वजों की मांग थी कि यह क्षेत्र भील प्रदेश बने। इसी को हम फिर से मांग उठा रहे हैं और यह मांग पूरी होनी चाहिए।इसको लेकर आसपास राज्यों के आदिवासी लोगों का समर्थन देकर भील प्रदेश की मांग उठा रहे हैं.÷बता दें कि राजकुमार रोत इस समय भारत आदिवासी पार्टी के एक मात्र सांसद है ।मानगढ़ धाम पर हुई इस महारैली में बांसवाड़ा डूंगरपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद राजकुमार रोत, बागीदौरा विधायक जय कृष्ण पटेल, आसपुर विधायक उमेश डामोर, धरियावद के विधायक, सैलाना के विधायक एवं अन्य प्रांतों के जनप्रतिनिधि शामिल हुए और भील प्रदेश की मांग सहित अन्य मुद्दों को लेकर अपने विचार रखें।

मानगढ़ धाम में गुरुवार को हुई आदिवासी सांस्कृतिक महारैली का आयोजन भारतीय आदिवासी पार्टी के बैनर तले हुआ इसमें आदिवासी परिवार और चार राज्यों के आदिवासी प्रमुख संगठन शामिल हुए। महारैली में भील प्रदेश के लिए राजनीतिक प्रस्ताव पारित कर केंद्र को भेजने का फैसला लिया गया। नए भील प्रदेश में 4 राज्यों के 49 जिले शामिल करने की योजना बनाई जा रही है। वैसे यह आदिवासी सांस्कृतिक महारैली हर वर्ष 17 जुलाई को होती थी पर इस बार 18 जुलाई को हो रही है। बांसवाड़ा सांसद राजकुमार रोत इस रैली में शामिल होने के लिए जनता से अपील की थी। वैसे राजस्थान की भाजपा सरकार का रुख भी इस मामले में कांग्रेस सरकार की तरह अलग भील प्रदेश

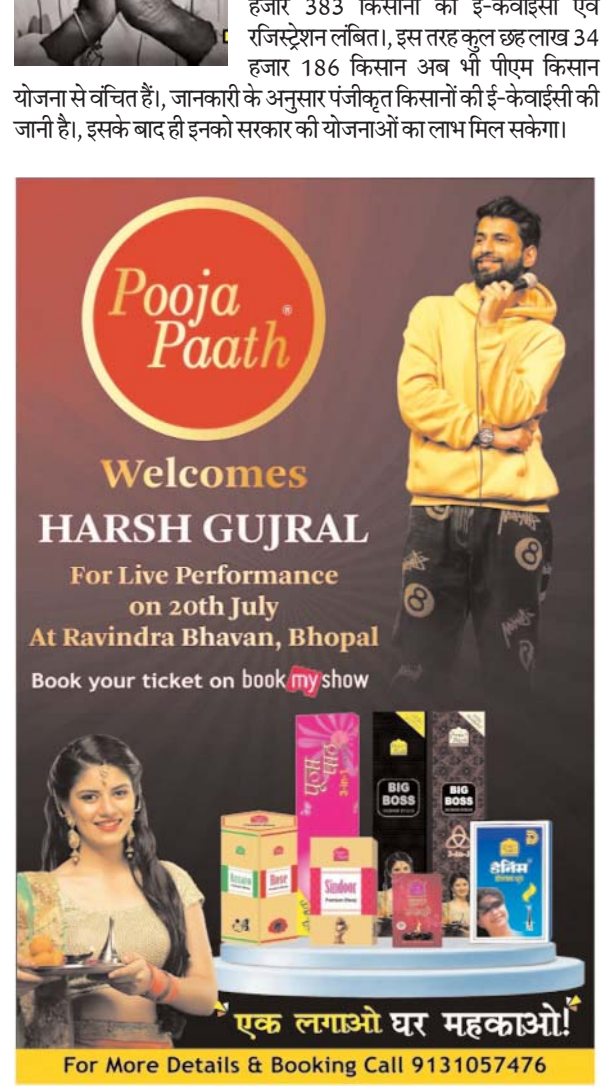

सुबह 7 बजे सिक्स लेन का दौरा करने पहुंचे विधायक रामेश्वर शर्मा, निर्माण की प्रगति को लेकर दिए निर्देश

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

हुजूर में विकास पुरुष की पहचान बनाने वाले विधायक रामेश्वर शर्मा निरंतर हुजूर की विकास परियोजनाओं का निरीक्षण कर रहे हैं। गुरुवार को उन्होंने कोलार में बन रही भोपाल की पहली सबसे लंबी सिक्स-लेन सड़क का दौरा कर निरीक्षण किया। इस दौरान संबंधित प्रशासनिक और निर्माण एजेंसी के अधिकारी साथ रहे। श्री शर्मा ने कोलार के चूना-भट्टी क्षेत्र से निरीक्षण प्रारंभ किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को पार्किंग, एप्रोच रोड, चौराहों, लेफ्ट टर्न की चौड़ाई, स्ट्रीट लाइट, हाईमास्ट लाईट सीसीटीवी कैमरे, ट्रैफिक सिग्नल आदि कार्यों के संबंध में निर्देश दिए। ज्ञात हो कि सिक्स-लेन का लगभग 95त्न काम पूरा हो चुका है। विधायक शर्मा ने शेष कार्य जल्द पूर्ण कराने के लिए भी निर्देश दिए। निरीक्षण हेतु पहुंचे विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा कि - मुखर्जी नगर कोलार जल्द ही भोपाल के यातायात में आकर्षण का केन्द्र बनने वाला है। भोपाल की सबसे लंबी सिक्स-लेन रोड का काम अब अपनी पूर्णता की ओर है। यह सड़क आधुनिक सुविधाओं से लेस होने के साथ ही बहुत सुंदर मार्ग का रूप लेगी। इससे न केवल यातायात सुगम होगा बल्कि कोलार में नई जेनरेशन के रोजगारों और व्यापारों के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। अब वो दिन दूर नहीं जब चमचमाती सिक्स-लेन कोलार की पहचान बनेगी। सिक्स लेन के रूप में कोलार की प्रगति को जल्द ही द्रुत गति मिलने वाली है।

ये निर्देश दिए

- पार्किंग स्थल सुनिश्चित करने, एप्रोच रोड के जल्द से जल्द निर्माण कार्य सहित विभिन्न निर्देश दिए।
- कोलार सिक्स लेन से 6 फॉर-लेन सड़कों के जंक्शन हैं। ऐसे में इनके चौराहे सहित सभी लेफ्ट टर्न की चौड़ाई पर विशेष ध्यान देने को कहा।
- चौराहे पर निर्वाद यातायात चलता रहे उसके लिए ट्रेफ़िक पुलिस के साथ प्लान तैयार किया जाएगा।
- कोलार सिक्स लेन में सड़क निर्माण का कार्य 95त्न पूर्ण हो गया है। शेष काम भी जल्द से जल्द पूर्ण किए जाने के निर्देश दिए।
- संपूर्ण मार्ग पर स्ट्रीट लाइट शुरू की जाए, हाई मास्ट लाइट के और अधिक पोल बढ़ाने को कहा है। रोड पर कहीं भी ब्लैक स्पॉर्ट नहीं बनना चाहिए।
- सीसीटीवी कैमरे ट्रेफ़िक सिग्नल आदि कार्य जल्द से जल्द प्रारंभ किया जाए।

करूणाधाम में कल से तीन दिवसीय गुरू पूर्णिमा महोत्सव

भोपाल। करूणाधाम आश्रम में पीठाधीश्वर गुरूदेव श्री सुदेश जी शाण्डिल्य महाराज के सानिध्य में तीन दिवसीय गुरू पूर्णिमा महोत्सव मनाया जायेगा। आश्रम के श्री शाश्वत शाण्डिल्य ने बताया कि शनिवार 20 जुलाई से शुरू होने वाले महोत्सव में सुबह 8 बजे से पिछले तीन माह में शिष्य-सेवकों द्वारा किये गये गुरू मंत्र के सवा करोड़ जाप के लिये महायज्ञ एवं आहूतियाँ होंगी। इसी शाम 7:30 बजे ब्रह्मलीन गुरूदेव श्री बालगोविन्द जी शाण्डिल्य महाराज की महाआरती होगी। रविवार 21 जुलाई को सुबह 8:30 बजे से महाअभिषेक एवं गुरू गीता का पाठ होगा। सुबह 10:30 बजे ओम स्नान और शाम 6:30 बजे से गुरूदेव पादुका पूजन एवं आशीर्वचन होंगे। सोमवार 22 जुलाई को शाम 4:30 बजे भव्य पालकी उत्सव और रात 8 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रख्यात गायक श्री तापस उपाध्याय द्वारा कबीर व गुरू भजन की प्रस्तुति दी जायेगी।

शादी का झांसा इंस्टाग्राम फ्रेंड ने युवती से किया दुष्कर्म, फिर किया इंकार

भोपाल । हबीबगंज पुलिस ने सीहोर जिले की रहने वाली युवती के साथ शादी का झांसा देकर दुष्कर्म किये जाने की शिकायत पर राजधानी निवासी युवक के खिलाफ मामला कायम किया है। पीड़ीता ने सीहोर जिले में स्थानीय थाने में शिकायत की थी, घटनास्थल भोपाल का होने पर पुलिस ने जीरो पर कायमी कर केस डायरी भोपाल पुलिस को भेज दी। पुलिस के अनुसार सीहोर जिले की रहने वाली 22 वर्षीय युवती ने अपनी शिकायत में बताया की वह निजी नौकरी करने के लिए भोपाल आई थी। और हबीबगंज इलाके की बस्ती में रहती थी। उस दौरान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम के जरिये उसकी दोस्ती जीतेन्द्र अहिरवार नाम के युवक से हो गई थी। एक ही समाज के होने के कारण जल्द ही उनके बीच दोस्ती और फिर प्रेम प्रंसग शुरु हो गया। आरोप है की जीतेन्द्र ने उसे शादी करने का झांसा देते हुए उसका शारीरिक शोषण करना शुरू कर दिया। बीते दिनो जब युवती ने उस पर शादी करने का दबाव बनाया तब उसने शादी करने से इंकार कर दिया। पीड़ीता वापस अपने घर चली गई और सारी बात परिजनो को बताई।

भोपाल से हवाई यात्रियों की दैनिक संख्या चार हजार के पार हुई, विंटर शेड्यूल में पांच हजार की उम्मीद

भोपाल। भोपाल से सीमित उड़ानें होने के बावजूद यात्रियों की संख्या बढ़ रही है। वर्तमान में चार हजार से अधिक यात्री प्रतिदिन सफर कर रहे हैं। मानसून को एयरलाइंस कंपनियां आफ सीजन मानती हैं, इसके बावजूद अपेक्षित यात्री मिलने से कंपनियों के साथ एयरपोर्ट अथारिटी भी उत्साहित

है। अथारिटी को उम्मीद है कि विंटर सीजन में उड़ानें और यात्री दोनों बढ़ेंगे।

एक समय था जब भोपाल से उड़ानों की संख्या आधा दर्जन से भी कम थी। केवल दिल्ली और मुंबई तक ही सीधा कनेक्शन था। वर्तमान में दिल्ली, मुंबई के अलावा बेंगलुरू, हैदराबाद, अहमदाबाद, जयपुर, रायपुर, प्रयागराज, लखनऊ एवं उदयपुर तक सीधी कनेक्टिविटी है। 10 शहरों तक 16 उड़ानें होने से यात्रियों को राहत मिली है। हालांकि महानगरों की एयर कनेक्टिविटी के मान से उड़ानों की संख्या अब भी कम है। पुणे, गोवा, अमृतसर, देहरादून, तिरूपति एवं चैन्नई जैसे शहरों के लिए एक भी उड़ान नहीं है, इसके बावजूद यात्रियों की बढ़ती संख्या एयरलाइंस कंपनियों को उत्साहित करने वाली है।

80 प्रतिशत तक पहुंचा पैसेंजर लोड

एयर लाइंस कंपनियों के लिए पैसेंजर लोड का बड़ा महत्व है। 50 प्रतिशत से अधिक सीटें बुक होना कंपनियों के लिए लाभ का सौदा है। इस बार समर सीजन में कंपनियों को 80 से 90 प्रतिशत पैंसेंजर लोड मिला। मानसून में भी 75 से 80 प्रतिशत सीटें बुक होना भविष्य में हवाई यातायात बढ़ने की दृष्टि से अच्छा संकेत माना जा रहा है।

विंटर शेड्यूल में बढ़ेंगी उड़ानें

एयरपोर्ट अथारिटी को उम्मीद है कियात्रियों के उत्साह को देखते हुए अक्टूबर माह से शुरू होने वाले विंटर शेड्यूल में कम से कम चार नई उड़ानें प्रारंभ होगी। इस साल के अंत तक एयर इंडिया एक्सप्रेस बेस स्टेशन शुरू कर सकता है।

14 प्रकरणों में 3.45 लाख रुपये का जुर्माना अधिरोपित

भोपाल। कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह के निर्देशानुसार खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा प्रस्तुत 14 प्रकरणों में निर्णय पारित करते हुए न्याय-निर्णायक अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी हिमांशु चन्द्र द्वारा 3 लाख 45 हजार रुपये का जुर्माना अधिरोपित किया गया है। आज पारित किए गए निर्णयों में बजरिया थाना के सामने समोसा निर्माता मो. इदरीस के विरुद्ध अस्वच्छ परिस्थितियों में समोसे बनाने के आरोप में दो प्रकरणों में कुल 50 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है। बावड़िया कला स्थित विन्टर रोज कैफे के प्रोप्राइटर विकास भूर्तिया के विरुद्ध अमानक पनीर का उपयोग करने के आरोप में 50 हजार रुपये, एमपी नगर जोन-2 स्थित हकीम रेस्टोरेंट के प्रोप्राइटर नावेद खान के विरुद्ध 50 हजार रुपये, भोपाल रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म क्रमांक-1 के सामने होटल अजीजिया के प्रोप्राइटर याहया खान के विरुद्ध बिना खाद्य पंजीयन अस्वच्छ परिस्थितियों में भोजन निर्माण करने के आरोप में 25 हजार रुपये और गेहूँखेड़ा, कोलार रोड स्थित कृष्णा डेयरी के संचालक जितेन्द्र यादव के विरुद्ध बिना पंजीयन अवमानक मिल्क केक विक्रय करने के आरोप में 25 हजार रुपये जुर्माना शामिल है। अभिहित अधिकारी देवेन्द्र कुमार वर्मा के निर्देशानुसार, निर्धारित समयावधि में जुर्माना अदा नहीं करने की स्थिति में खाद्य कारोबारकर्ताओं के खाद्य पंजीयन निलंबित किए जाएंगे।

3 महीने में 275 शिविरों में 40 000 से अधिक लाभार्थियों को मिली समग्र स्वास्थ्य सेवाएं

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

स्वास्थ्य विभाग, जिला भोपाल द्वारा प्रत्येक लाभार्थी को उसकी आवश्यकता के अनुसार स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए निरंतर नवाचार किए जा रहे हैं। पिछले तीन महीनों में, 275 विशेष स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया है, जिससे 40,000 से अधिक नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिला है। इन शिविरों के माध्यम से नागरिकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी किया गया ताकि वे बीमारियों से बच सकें और लक्षणों की पहचान कर समय पर उपचार ले सकें।

विशेष शिविरों का आयोजन: मई महीने में 10 दिवसीय श्रमिक पीठ शिविर, 5 दिवसीय रैन बसेरा शिविर और गल्ला मंडी शिविर आयोजित किए गए, जो नागरिकों के कामकाजी माहौल और रहने के स्थान के नजदीक लगाए गए थे। 27 जून से 18 जुलाई तक प्रत्येक गुरुवार को तंग बस्तियों में शिविर आयोजित किए गए।

इन शिविरों में बीमारियों के चिन्हांकन, उपचार, रेफरल और फॉलोअप सुनिश्चित किया गया है। असंचारी रोगों का परीक्षण, आंखों की जांच, वयस्क बीसीजी टीकाकरण, आयुष्मान कार्ड, आभा कार्ड, मलेरिया, क्षय रोग और कुष्ठ रोग की स्क्रीनिंग की गई। गर्भवती महिलाओं की एएनसी जांच, पंजीयन और अपडेशन भी सुनिश्चित किया गया।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल, डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि निर्धन और वंचित तबके के लोग अपने काम की व्यस्तता के कारण स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ नहीं ले पाते। ऐसे लोगों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भोपाल के विभिन्न स्थानों पर पिछले 3 महीनों से विशेष शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। शिविरों में चिन्हित मरीजों को नजदीकी स्वास्थ्य संस्थाओं में उपचार दिया जा रहा है और गंभीर बीमारियों से ग्रस्त मरीजों का नियमित फॉलोअप किया जा रहा है।

रोग पहचान और उपचार: उच्च रक्तचाप 16,262 लोगों की स्क्रीनिंग में 480 मामलों में बढ़ा हुआ रक्तचाप पाया गया।

डायबिटीज: 16,805 लोगों की जांच में 398 मामलों में बढ़ा हुआ ब्लड शुगर पाया गया।

गर्भवती महिलाओं की एएनसी जांच: 459 महिलाओं की जांच में 11 में गंभीर एनीमिया और 5 में प्रेगनेंसी इंड्यूस्ड हाइपरटेंशन पाया गया

जप्तशुदा 36 क्विंटल मावा विनष्ट

भोपाल। ग्वालियर से रेलवे पार्सल के माध्यम से भोपाल बाजार में विक्रय हेतु लाए गए मावा के गुणवत्त पर संदेह होने के कारण खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा जप्त किया गया था। मावा के स्वामित्व पर किसी व्यक्ति द्वारा दावा नहीं किए जाने तथा इसका पर्याप्त अपक्षय हो जाने के कारण अभिहित अधिकारी के आदेशानुसार आज नगर निगम अमले की सहायता से जप्तशुदा मावा की सम्पूर्ण मात्रा (लगभग 36 क्विंटल) को आदमपुर खंती में विनष्ट कराया गया। प्रगति पेट्रोल पम्प स्थित हॉकर कॉर्नर का निरीक्षण किया गया, जिसके दौरान चार स्टॉल में अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में भोजन निर्माण पाया गया। सभी खाद्य कारोबारकर्ताओं को स्वच्छता संबंधी प्रावधानों का पालन करने हेतु निर्देशित किया गया। अभिहित अधिकारी द्वारा अस्वच्छता पाए गए स्टॉल के कारोबारियों के विरुद्ध खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 की धारा 56 के अन्तर्गत प्रकरण माननीय न्याय निर्णायक अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं।

भोपाल-ग्वालियर-भोपाल इंटरसिटी ट्रेन के कोच कंपोजिशन में स्थाई रूप से परिवर्तन

भोपाल । रेल प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा में सुधार के लिए भोपाल-ग्वालियर-भोपाल इंटरसिटी ट्रेन के कोच कंपोजिशन में स्थाई रूप से परिवर्तन किया गया है। इसमें अब एक द्वितीय कुर्सीयान चेयरकार स्थाई रूप से जुड़ने से यह ट्रेन 20 जुलाई 2024 से अपने नए कोच कंपोजिशन में चलेगी। गाड़ी संख्या 12197/12198 भोपाल-ग्वालियर-भोपाल इंटरसिटी एक्सप्रेस अब दोनों दिशाओं में दिनांक 20.07.2024 से स्थाई रूप से निम्नलिखित कोच संरचना के साथ चलेगी। वातानुकूलित कुर्सीयान चेयरकार, 2 द्वितीय कुर्सीयान चेयरकार, 11 सामान्य श्रेणी 2 एसएलआरडी।

हाई-टेक पाइप्स लिमिटेड ने वित्तीय वर्ष 2025 की प्रथम तिमाही में सर्वोच्च बिक्री वॉल्यूम हासिल किया

नई दिल्ली। भारत की अग्रणी स्टील पाइप कंपनियों में से एक, हाई-टेक पाइप्स लिमिटेड ने घोषणा की है कि उसने वित्तीय वर्ष 2025 की प्रथम तिमाही में अपने इतिहास का सबसे अधिक बिक्री वॉल्यूम हासिल किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि कंपनी की उत्कृष्टता, नवाचार और ग्राहक संतुष्टि के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। प्रथम तिमाही में, हाई-टेक पाइप्स ने पिछले वर्ष की इसी अवधि के 84,489 एम टी की तुलना में कुल 1,22,155 एम टी के बिक्री वॉल्यूम के साथ 45त्न की महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है और वित्तीय वर्ष 2024 की चौथी तिमाही में 1,07,721 एम टी की बिक्री मात्रा की तुलना में तिमाही-दर-तिमाही 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह उपलब्धि कंपनी की रणनीतिक पहलों के कारण है, जिसमें प्रोडक्ट लाइनों का विस्तार, बढ़े हुए मार्केटिंग प्रयास और प्रोसेस ऑप्टिमाइजेशन (प्रक्रिया अनुकूलन) शामिल हैं।

वनट्री हिल्स में 26 लाख की लागत से नाली और सड़क का होगा निर्माण

संत हिरदाराम नगर। संत नगर वनट्री हिल्स के रहवासियों को खस्ताहाल सड़क से निजात मिल जाएगी। रहवासियों की मांग पर विधायक रामेश्वर शर्मा की निधि से गुरूवार को वन ट्री हिल्स की मुख्य सडक एवं नाली निर्माण कार्य का प्रारंभ हुआ। करीब 26 लाख रुपए की लागत से युक्त नाली एवं सड़क बनाई जाएगी। इसका भूमि पूजन पूर्व में विधायक रामेश्वर शर्मा द्वारा किया जा चुका है। ठेकेदार द्वारा पहले नाली का निर्माण कराया जाएगा नाली निर्माण पूर्ण होने के पश्चात ही सड़क निर्माण का कार्य प्रारंभ होगा। कैलाश दूध डेरी से वन ट्री हिल्स का काम शुरू कर दिया गया है। इस अवसर पर सभी रहवासियों में खुशी का माहौल है। कार्य प्रारंभ के समय भाजपा जिला उपाध्यक्ष राम बंसल, राहुल राजपूत, राजेश हिंगोरानी, चन्दू ईसरानी, कमल वीधानी, वासुदेव वाधवानी, सूरज यादव, मनीष बागवानी, सुमित आहूजा, हीरो हिन्दू, महेश खटवानी, किशोर साधवानी सहित बड़ी संख्या में भाजपा नेता उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बेहतर होम्योपैथी इलाज के लिए डॉ. एके द्विवेदी को राजधानी में सम्मानित किया

भोपाल। राजधानी में गुरुवार को निजी होटल में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में इंदौर के वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. एके द्विवेदी को सम्मानित किया गया। डॉ. द्विवेदी को यह सम्मान होम्योपैथी चिकित्सा द्वारा अप्लास्टिक एनीमिया और सिकल सेल एनीमिया को लेकर मध्यप्रदेश सहित संपूर्ण देश में किए जा रहे सबसे बेहतर कार्यों के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा दिया गया। उल्लेखनीय है कि डॉ. द्विवेदी वैज्ञानिक सलाहाकर बोर्ड, सीसीआरएच, आयुष मंत्रालय (भारत सरकार) एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में कार्यपरिषद के सदस्य हैं। आप 25 वर्ष से अधिक समय से होम्योपैथिक चिकित्सक के रूप में मरीज़ों की सेवा करते हुए पिछले कई सालों से इंदौर में एनीमिया (रक्ताल्पता) जिनमें अप्लास्टिक एनीमिया और सिकल सेल एनीमिया के रोगियों को होम्योपैथिक चिकित्सा से उपचार करते हुए काफी राहत पहुंचा रहे हैं। आप समय-समय पर एनीमिया (रक्ताल्पता) बीमारी के प्रति जन जागरूकता वाले कार्यक्रम करते हैं और लोगों को बीमारी से बचाव के लिए जागरूक कर रहे हैं। केंद्र सरकार ने 2047 तक भारत को सिकल सेल एनीमिया मुक्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है जिसमें सहयोग करने के उद्देश्य से डॉ. द्विवेदी भी स्थानीय स्तर पर सिकल सेल जागरूकता को लेकर समय समय पर कार्यशाला आयोजित करते हैं। इसके अलावा वर्षभर आपके द्वारा कई निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा शिविर भी आयोजित करते रहते हैं। डॉ एके द्विवेदी ने माननीय मुख्य मंत्री जी के साथ मंच भी साझा किया एवं प्रदेश की कई प्रतिभावान बच्चियों कु भी समान्नित किया।

नवनिध स्कूल में नवनिर्वाचित विद्यार्थी परिषद हेतु शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

संत हिरदाराम नगर। शहीद हेमू कलानी एजुकेशनल सोसाइटी द्वारा संचालित नवनिध हासोमल लखानी पब्लिक स्कूल के सभागार में विद्यालय की नवनिर्वाचित छात्र परिषद हेतु शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मंच पर मुख्य अतिथि घनश्याम बूलचंदानी, प्राचार्य अमृता मोटवानी एवं उप प्राचार्य रेखा केवलानी उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में कक्षा नवीं एवं दसवीं की छात्राओं ने समूह गान की प्रस्तुति दी। बाद में विद्यार्थी परिषद के निर्वाचित सदस्यों के नामों की घोषणा की गई। विद्यालय की प्राचार्य अमृता मोटवानी द्वारा विद्यालय की कप्तान हर्षिता रावत एवं उप कप्तान दिति भद्रा को विद्यालय ध्वज एवं परिषद के अन्य सदस्यों को बैच एवं सैश प्रदान किए गए। इसी क्रम में उन्होंने विद्यालय के चारों सदनों साधु वासवानी सदन, डॉ.राधाकृष्णन सदन, स्वामी दयानंद सदन एवं स्वामी हीरानंद सदन के कप्तान एवं उप कप्तान को सदन का ध्वज प्रदान किया। उन्होंने विद्यार्थी परिषद के सदस्यों को पद के उत्तरदायित्वों को निभाने एवं विद्यालय की गरिमा को बनाए रखने के लिए अपने कर्तव्यों के निर्वहन की शपथ दिलाई।

स्पेसेस बाय वेलस्पन ने दिखाई भोपाल की बेस्ट डीलरशिप्स

भोपाल। स्पेसेस बाय वेलस्पन ने भोपाल में स्थित अपने शीर्ष डीलरशिप स्टोर्स, दानवी इंटरप्राइजेस(शेड्स एंड स्प्रेड्स) को मिली शानदार पहचान का जोरदार स्वागत किया। यह सम्मान दानवी इंटरप्राइजेस(शेड्स एंड स्प्रेड्स) के शानदार प्रदर्शन और अटूट समर्पण को दिखाता है। यह डालरशिप्स स्पेसेस ब्रांड के एक अभिन्न अंग रहा है, जिसने असाधारण प्रतिबद्धता और वफादारी का प्रदर्शन किया है, जिसने वास्तव में ब्रांड की सफलता और विकास को आगे बढ़ाया है। प्रीमियम होम टेक्सटाइल केटेगरी में एक मार्केट लीडर, स्पेसेस बाय वेलस्पन, इनोवेटिव और प्रीमियम प्रोडक्ट की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है जो स्टाइल और फंक्शन दोनों पर ध्यान केंद्रित करती है। इनोवेशन और ग्राहक के प्रति इसके ध्यान के कारण, यह ब्रांड कम्फर्ट और रिलेक्सेशन का पर्याय बन गया है। इसका उद्देश्य सर्वोत्तम आराम और विश्राम प्रदान करना है। ब्रांड की पेशकश, हाइग्रो कॉटन बेडशीट 100त्न कॉटन से एक इनोवेटिव मैन्यूफैक्चरिंग प्रोसेस से बनाई जाती हैं। यह इनोवेटिव प्रोसेस कपड़े को नरम, हवादार और तापमान को +/- 2 डिग्री तक नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है, जो एक आरामदायक और सुखद नींद का अनुभव प्रदान करती है।

जिलों के लिए भविष्य में स्वतंत्र रूप से पुलिस बैंड की रहेगी व्यवस्था: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

नेहरू स्टेडियम में सातवीं बटालियन के 'स्वर मेघ' कार्यक्रम में पुलिस ब्रास बैंड के सदस्यों ने दी मनमोहक धुनों की प्रस्तुति

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश पुलिस को सशक्त बनाने के लिए संसाधनों की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। इसके लिए बजट में साढ़े दस हजार करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। प्रदेश में पुलिस कर्मियों के लिए 25 हजार आवास इस वर्ष बनाने का लक्ष्य है, जिसमें से 12 हजार आवास बना लिए गए हैं। प्रदेश के हर जिले में स्वतंत्र रूप से पुलिस बैंड दल कार्य करेगा। स्वर मेघ के अंतर्गत प्रस्तुत बैंड कार्यक्रम के सहभागी प्रत्येक सदस्य को 11-11 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि मिलेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मोतीलाल नेहरू पुलिस स्टेडियम में आज शाम स्वर-मेघ पुलिस बैंड कार्यक्रम के अंतर्गत मध्यप्रदेश पुलिस बैंड द्वारा प्रस्तुत संगीतमय कार्यक्रम में शामिल हुए। नव-गठित पुलिस बैंड ने संगीतमय धुनों का वादन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुलिस बल के सभी सदस्यों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी एवं उनके हुनर की सराहना की। कार्यक्रम में पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर और भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय उपस्थित थीं। प्रदेश में करीब 330 पुलिसकर्मी पुलिस बैंड के सदस्य के रूप में प्रशिक्षित हुए हैं। ये स्वतंत्रता दिवस पर विभिन्न जिलों में प्रस्तुति देंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की मंशा के अनुसार संगीत में रुचि रखने वाले मध्यप्रदेश पुलिस के जवानों को बैंड वादन का प्रशिक्षण दिलवाया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 'स्वर-मेघ' कार्यक्रम में आज अद्भुत प्रस्तुतियाँ दी गई है। पुलिस कर्मियों ने देशभक्ति-जनसेवा के ध्येय वाक्य को अपनी आत्मा में उतारकर दिन-रात सुरक्षा और सेवा में लीन रहने का कार्य किया है। इसके लिए मध्यप्रदेश के सभी पुलिसकर्मियों को मैं सैल्यूट करता हूं और बधाई देता हूं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज पुलिस बैंड के 'स्वर-मेघ' कार्यक्रम में ऐसा लग रहा है कि स्वयं मेघ भी मेजबान बनकर इसका आनंद ले रहे हैं। मैं आज प्रसन्न हूं, मुझे विश्वास है कि मेरे साथ आप सभी इस आनंद में डूबे होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पुलिस मुख्यालय में पहली मीटिंग में निर्देश दिये कि सभी जिलों के पुलिस बैंड का गठन किया जाए। प्रत्येक जिले में पुलिस बैंड की स्थापना बहुत कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन पुलिस की इच्छाशक्ति से यह कार्य सफल हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आजादी के समय में अधिकांश जिलों में पुलिस बैंड हुआ करता था, किंतु जैसे-जैसे पुलिसकर्मी सेवानिवृत्त हुए, वैसे-वैसे पुलिस बैंड में जवानों की कमी होती चली गई। इसको पूरा करना हमारे लिए चुनौती का विषय था। हमने प्रयास किया कि 15 अगस्त 2024 तक हर जिले में पुलिस बैंड प्रस्तुति दे। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि पुलिस ने उस चुनौती को स्वीकार ही नहीं किया बल्कि उसे साकार कर दिखाया। अब हर जिले में स्वतंत्रता दिवस पर पुलिस बैंड की बेहतरीन प्रस्तुति दी जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के सभी जिलों में पुलिस बैंड की व्यवस्था रहेगी, इसके लिए जहां विधिवत रूप से भर्तियां की जाएंगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 340 पुलिसकर्मियों ने स्वेच्छा से सभी जिलों में पुलिस बैंड की शुरुआत कर दी है। यह इच्छा शक्ति यह बताती है कि पुलिस जो चाहती है, प्रशासन जो चाहता है, वे कार्य साकार रूप लेता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश पुलिस के गौरवशाली इतिहास में आज का दिन स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि म.प्र. पुलिस के आधुनिकीकरण एवं सशक्तिकरण के लिए प्रदेश सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। पुलिस में 7500 पदों पर भर्तियां करने का निर्णय लिया गया है। भोपाल में 50 बिस्तर क्षमता के पुलिस अस्पताल का भी लोकार्पण किया जाएगा। मध्यप्रदेश पुलिस के जवान के शहीद होने पर 1 करोड़ रुपए की राशि में से 50 प्रतिशत राशि पत्नी और 50 प्रतिशत की राशि माता-पिता को प्रदान की जाएगी। पुलिस ने निश्चित समय में थानों की सीमाओं का भी पुनर्निर्धारण किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मुझे इस बात की भी प्रसन्नता है कि पुलिस ने इस चुनौतीपूर्ण कार्य को किया है, जिससे 22 हजार गांवों को इसका लाभ मिलेगा। डीजीपी सुधीर कुमार सक्सेना ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निर्देश पर प्रदेश की सभी पुलिस इकाइयों में पुलिस ब्रास बैंड की स्थापना की गई है। मुख्यमंत्री की पुलिस बैंड के उत्थान की परिकल्पना न केवल पुलिस बल के प्रदर्शन को मजबूती दे रही है बल्कि पुलिस और जनता के बीच निकटता के साथ ही उनमें उत्साह का संचार भी कर रही है। पुलिस बैंड, जहां जनता और पुलिस के बीच सहभागिता में वृद्धि करते हुए उसे सुदृढ़ बनाता है7

पौधा लगाएं और उसकी देखभाल का संकल्प लें: गोविंद सिंह राजपूत

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वृहद पौध-रोपण कार्यक्रम में शामिल हुए खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री

भोपाल । एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने पौध-रोपण किया और संकल्प लिया कि वे उनके द्वारा लगाए जा रहे सभी पौधों की देखभाल भी करेंगे। मंत्री श्री राजपूत ओशो हनुमान पहाड़ी, बटालियन, मकरोनिया में एक पेड़ मां के नाम अभियान अंतर्गत वृहद पौध-रोपण कार्यक्रम में शामिल हुए।

श्री राजपूत ने कहा की मात्र पौधा लगाना मकसद नहीं है बल्कि पौधे की परिवार के सदस्य जैसी जिम्मेदारी समझते हुए देखभाल करना भी जरूरी है। उन्होंने इस अभियान को स्वच्छता मिशन से जोड़ते हुए कहा कि हम यदि स्वच्छ वायु, ऑक्सीजन, स्वच्छ वातावरण चाहते हैं तो वृक्षों का उसमें सबसे अहम योगदान है। हमारा वातावरण स्वच्छ रहे इसके लिए हमारा परिवेश वृक्षों से आच्छादित होना आवश्यक है।

मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की परिकल्पना के अनुसार समाज का हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझते हुए पौध-रोपण कर रहा है। उन्होंने कहा कि आज हम जो पौधा रोप रहे हैं वह कल हमारा सच्चा मित्र बनकर बड़ा होगा, जो हमें फल, छाया के साथ स्वच्छ वातावरण भी देगा। इसलिए पौधे के लिए आवश्यक पानी, खाद सभी उचित मात्रा में मिले, इसकी भी व्यवस्था करें। हम अपने मां, पिता के नाम पर पेड़ लगाते हैं और हमारे द्वारा आज लगाए गए पौधे वर्षों तक जीवित रहकर उनका स्मरण कराते हैं।

इस अवसर पर विधायक प्रदीप लारिया ने कहा कि प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है और हमें भी प्रकृति को देने की आवश्यकता है। एक पेड़ मां के नाम अभियान हमें यह अवसर देता है कि प्रकृति के प्रति हम अपनी जिम्मेदारी निभाएं। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में भी वृक्ष पूजनीय हैं। वे हमें जीवन जीने के लिए अति आवश्यक आक्सीजन प्रदान करते हैं। हम सभी आगे आएं और एक पौधा अवश्य लगाएं और उसकी देखभाल भी करें। नगर पालिका मकरोनिया के अध्यक्ष मिहीलाल अहिरवार ने आभार व्यक्ति किया।

इस अवसर पर सांसद श्रीमती लता वानखेड़े, जनप्रतिनिधि, सागर संभाग के कमिश्नर डॉ. वीरेंद्र सिंह रावत, पुलिस महानिरीक्षक प्रमोद वर्मा, कलेक्टर दीपक आर्य, पुलिस अधीक्षक अभिषेक तिवारी, नगर निगम कमिश्नर राजकुमार खत्री सहित छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

हिट एंड रन प्रकरणों में मुआवजे के लिए समिति गठित

शासन द्वारा सडक दुर्घटना में हिट एण्ड रन प्रकरणों में प्रतिकर (मुआवजा) के लिए पु
लिस उपायुक्त, यातायात नगरीय पुलिस भोपाल का पत्र कमांक./पु.उपा./याता/भो./री
/1358/2024 भोपाल दिनांक 08.07.2024 के द्वारा अधिसूचित (मोटरयान दुर्घटना निधि) नियम
2022, द्वारा मोटरयान दुर्घटना पीडित को नगद राशि उपचार हेतु तथा अबीमाकृत यानों या हि
एण्ड रन मोटर दुर्घटना के लिए खाता योजना के अंतर्गत प्रतिकर प्रदाय किया जाना है। भोपाल
जिले अन्तर्गत नगरीया क्षेत्र हेतु समिति का गठन किया जाना है।

अतः भोपाल जिले में हिट एण्ड रन मोटरयान दुर्घटना प्रतिकर योजना 2022 के अंतर्
निम्नानुसार नगरीया क्षेत्र हेतु जिला स्तरीय समिति का गठन किया जाता है:-

कं0	पदाना	गठित समिति में सदस्य
01	अपर कलेक्टर (दक्षिण), भोपाल	अध्यक्ष
02	पुलिस उपायुक्त यातायात नगरीय, भोपाल	सदस्य
03	मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थय अधिकारी, भोपाल	सदस्य
04	क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, भोपाल	सदस्य
05	श्री संजय सोमानी मुख्य यातायात वार्डन, भोपाल	सदस्य
06	श्री अशोक शुक्ला, उप प्रबंधक, जनरल इंश्योरेंस परिषद, मुबंई	सदस्य सचिव

भोपाल। मप्र कांग्रेस कमेटी सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ ने आरटीआई एक्टिविस्ट पर हुए हमले के विरोध में पुलिस आयुक्त को ज्ञापन सौंपकर आरटीआई कार्यकर्ता और बिहिसल ब्लोअर को सुरक्षा प्रदान करने की मांग की।

गोविंदपुरा में कार्यकर्ता अभिनंदन समारोह संपन्न

भोपाल। सांसद आलोक शर्मा चुनाव में रिकार्ड मतों से विजय प्राप्त होने पर गुरुवार को आभार व्यक्त करने गोविंदपुरा विधानसभा के कार्यकर्ताओं के बीच पहुंचे। सांसद आलोक शर्मा ने गोविंदपुरा की विधायक व मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर व जिलाध्यक्ष सुमित पचौरी के साथ पार्टी के कार्यकर्ताओं पर पुष्पवर्षा कर उनका स्वागत किया, अभिनंदन किया। इस अवसर पर उन्होंने कार्यकर्ताओं का सम्मान किया और संबोधित भी किया। सांसद शर्मा ने कार्यकर्ताओं की प्रसंशा करते हुए कहा कि चुनाव में रिकार्ड बनाने के लिए आपने जो मेहनत की है वह परिणाम के रूप में सबके सामने है। आपने कांग्रेस के इरादों को ध्वस्त किया है। आप पार्टी की असली ताकत है, आत्मा है, रीढ़ है। मैं अपनी यह विजय आप सभी कार्यकर्ताओं को समर्पित करता हूं। कार्यकर्ता अभिनंदन समारोह में मध्य प्रदेश शासन की मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर जिला अध्यक्ष श्री सुमित पचौरी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सत्यार्थ अग्रवाल, विधानसभा प्रभारी, संयोजक, गोविंदपुरा विधानसभा के सभी मंडल के अध्यक्ष, एमआईसी सदस्य, पार्षदगण, वरिष्ठ कार्यकर्ता, विभिन्न मोर्चों के कार्यकर्ता, बूथ व शक्ति केंद्र के कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

गुरु शिष्य परंपरा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

ज्ञान और विवेक विद्यार्थियों को प्रदान करें शिक्षक: प्रो. सुरेश

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में गुरु शिष्य परंपरा- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। भरत मुनि शोधपीठ के तत्वावधान में द्रोणाचार्य कक्ष में गुरु पूर्णिमा पर्व के अवसर पर आयोजित इस व्याख्यान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. डॉ. के.जी. सुरेश ने की। मुख्य वक्ता श्री वैदिक मिशन ट्रस्ट राजकोट, गुजरात के संस्थापक स्वामी धर्मबंधु थे।

विशेष व्याख्यान की अध्यक्षता करते हुए प्रो. सुरेश ने कहा कि गुरु का मार्गदर्शन समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा, हमें यह देखना होगा कि गुरु की भूमिका क्या है और क्या हम उसे निभा पा रहे हैं? प्रो. सुरेश ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुरु की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि गुरु शिष्य परंपरा में विद्यार्थी के साथ संबंध सिर्फ पढ़ाई तक सीमित न रहे बल्कि आजीवन बना रहना चाहिए। उन्होंने कक्षाओं को आकर्षित बनाने पर जोर दिया और कहा कि वर्तमान युग डिजिटल क्रांति का युग है। शिक्षकों को लगातार अपडेट रहने की जरूरत है ताकि वे सूचना से अर्जित ज्ञान विद्यार्थियों को प्रदान कर सकें।

स्वामी धर्मबंधु ने कहा कि हमें प्राकृतिक संसाधनों को संभालकर रखना चाहिए। उन्होंने आंकड़ों का जिक्र करते हुए बताया कि विश्व के 70त्न आर्थिक संसाधन चीन और भारत के पास थे। भारत को आर्थिक रूप से संपन्न बताते हुए उन्होंने कहा कि हमें जॉब प्रोवाइडर बनने की दिशा में सोचना होगा। उन्होंने गुरु शिष्य परंपरा में लर्निंग को सबसे अधिक महत्व दिया और कहा कि यह फेल पास नहीं, बल्कि लर्निंग बेस्ड होनी चाहिए। उन्होंने एक अच्छा इंसान बनने की बात पर जोर दिया और स्वयं से सीखने एवं आत्म चिंतन को महत्वपूर्ण बताया।

व्याख्यान का संचालन भरतमुनि शोधपीठ के समन्वयक प्रो. गिरीश उपाध्याय ने किया और आभार प्रदर्शन प्रो. शिवकुमार विवेक ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. (डॉ.) अविनाश वाजपेयी, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

एक पेड़ मां के नाम अभियान: फोर्स कल्याण समिति ने किया वृक्षारोपण

भोपाल। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत फोर्स जन कल्याण समिति ने आज हरीश चौक कोटरा रोड भोपाल में वृक्षारोपण किया। समिति द्वारा फलदार और छायादार पौधे लगाए। समिति के सचिव नीरज राय ने बताया कि लगातार हो रही वृक्षों की कटाई से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है और तापमान में वृद्धि हो रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम के दौरान लोगों से एक पेड़ मां के नाम अभियान से जुड़ कर एक-एक पेड़ लगाने की अपील की थी। माननीय प्रधानमंत्री से प्रेरणा लेकर समिति ने आज पौध रोपण किया और इसे निरंतर रखने के साथ ही वृक्षों के संरक्षण का भी संकल्प लिया। इस दौरान समिति के सदस्य विनीत अग्रवाल, नीरज राय, अनूप द्विवेदी, नीलेश, नवल, संजू एवं व्यपारीगढ़ उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना में कारीगरों को प्रशिक्षण देकर इनके उत्पादों की भी करेंगे मार्केटिंग :जायसवाल

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा विगत 17 सितम्बर 2023 को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना प्रारंभ की गई। इस योजना में अपने हाथों और औजारों से काम करने वाले कारीगरों एवं शिल्पकारों को हर प्रकार की सहायता दी जाएगी। इस योजना में 18 प्रकार के परंपरागत व्यवसायों जैसे बढ़ई, नाव निर्माता, कवच निर्माता, लोहार, हथौड़ा और टूल किट निर्माता, ताला बनाने वाले, सुनार, कुम्हार, मूर्तिकार (मूर्तिकार व पत्थर तराशने वाले), पत्थर तोड़ने वाले, मोची (चर्मकार)/जूते बनाने वाले, राज-मिस्त्री, टोकरी/चटाई/झाड़ू निर्माता/कॉयर बुनकर, गुड़िया और खिलौने निर्माता (पारम्परिक), नाई, माला निर्माता, धोबी, दर्जी और मछली पकड़ने के जाल बनाने वाले कारीगरों को शामिल किया गया है। इस योजना में पीएम विश्वकर्मा प्रमाण-पत्र एवं आईडी कार्ड के जरिये कारीगरों और शिल्पकारों का पात्रता पंजीयन किया जाएगा। इन पात्र कारीगरों को 5 से 7 दिनों का बुनियादी प्रशिक्षण और 15 दिन या इससे अधिक दिन का उन्नत प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही प्रशिक्षण के दौरान 500 रूपये प्रतिदिन की दर से शिष्यवृत्ति भी दी जाएगी। इसके अलावा बुनियादी कौशल प्रशिक्षण की शुरूआत में ई-वाऊचर के रूप में 15 हजार रूपये तक का टूलकिट प्रोत्साहन भी दिया जाएगा। योजना में कारीगरों एवं शिल्पकारों को व्यवसाय/दुकान/आऊटलेट स्थापित करने के लिये बैंक लिंकेज व पात्रतानुसार लोन लिंकेज भी दिया जाएगा। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना में कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग 18 प्रकार के परम्परागत कामों में लगे कारीगरों एवं शिल्पकारों को विधिवत प्रशिक्षण देगा और इनके उत्पादों को बाजार तक पहुँचाने के लिये मार्केटिंग की जिम्मेदारी भी निभायेगी। कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल ने गुरूवार को मंत्रालय में प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना में कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग से जुड़े दायित्वों के संबंध में बैठक की। बैठक में उन्होंने प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की लक्ष्य पूर्ति पर तेजी से काम करने एवं योजना के आलोक में विभागीय अधिकारियों के मध्य दायित्व निर्धारण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि योजना को लक्षित वर्ग के हितग्राहियों तक पहुँचाने के लिये कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग कारीगरों एवं शिल्पकारों के उत्पादों को बाजार मुहैया कराने के लिये हर स्तर पर जाकर मार्केटिंग

कानून और न्याय: आवारा कुत्तों की नसबंदी, टीकाकरण को लेकर याचिका

विनय झैलावत

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने एनजीओ कॉन्फ्रेंस फॉर ह्यूमन राइट्स द्वारा दायर एक याचिका के संबंध में नोटिस जारी किया। इस याचिका का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि दिल्ली में आवारा कुत्तों की ठीक से नसबंदी और टीकाकरण किया जाए। न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ ने मामले की सुनवाई कर नोटिस जारी करने का यह आदेश पारित किया। याचिका में कहा गया है कि अधिकारी आवारा कुत्तों के लिए कोई प्रभावी नसबंदी या टीकाकरण कार्यक्रम चलाने में विफल रहे हैं (कमोबेस इन्दौर व अन्य स्थानों पर भी यही स्थिति है)। इससे पहले भी एनजीओ और त्रिवेणी अपार्टमेंट वेलफेयर एसोसिएशन ने जनहित याचिकाओं के साथ दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। उन्होंने पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ता), नियम, 2001 को लागू करने की मांग की, जो पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के तहत स्थापित किए गए थे।

याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि अधिकारियों द्वारा अपने वैधानिक कर्तव्यों का पालन करने में विफलता के कारण दिल्ली में आवारा कुत्तों की आबादी में तेजी से वृद्धि हुई है। साथ ही कुत्तों के काटने के मामले में भी वृद्धि हुई। दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली सरकार की पशुपालन इकाई और दक्षिण दिल्ली नगर निगम के हलफनामों से संतुष्ट होकर इन याचिकाओं को खारिज कर दिया था। इन हलफनामों में कहा गया है कि अधिकारी नियमित रूप से आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण कर रहे थे और अपने वैधानिक कर्तव्यों को पूरा कर रहे थे। इसके बावजूद, उच्च न्यायालय ने इस सार्वजनिक समारोह के महत्व पर जोर देते हुए दिल्ली सरकार और नागरिक अधिकारियों को आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण में अपने प्रयासों को जारी रखने का निर्देश दिया। उच्च न्यायालय के फैसले से असंतुष्ट याचिकाकर्ता एनजीओ ने उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। याचिकाकर्ता की ओर से कुत्ते के काटने के मुद्दे पर प्रकाश डाला गया और दावा किया कि सूचना के अधिकार की प्रतिक्रियाओं ने नसबंदी के प्रयासों की कमी का पता चलता है। उन्होंने अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे जन जागरूकता के लिए अपनी नसबंदी डेटा को अपनी वेबसाइट पर प्रदर्शित करें। न्यायमूर्ति विश्वनाथन ने कहा कि याचिकाकर्ता ने शुरू में आवारा कुत्तों को पिंजरे में बंद करने की मांग की थी। हालांकि, याचिकाकर्ता संगठनों की ओर से यह स्पष्ट किया गया कि उनका प्राथमिक अनुरोध नसबंदी और प्रासंगिक डेटा के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए था।

इससे पहले दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक याचिका में यह माना था कि आवारा कुत्ते का जन्म नियंत्रण के लिए आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य है। कॉन्फ्रेंस फॉर ह्यूमन राइट्स द्वारा दायर याचिका में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 की धारा 9, 11 और पशु नियंत्रण (कुत्ते) नियम, 2001 के नियम 3, 5, 6 और 7 के तहत परिकल्पित कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रतिवादियों को निर्देश देने की मांग करते हुए, मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति जसमीत सिंह की खंडपीठ ने नगर निगम तथा विपक्षी कर्ताओं को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था कि वे आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण के लिए अपने प्रयासों और अभियान को जारी रखें, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य है। इसे पूरी गंभीरता से करने की आवश्यकता है। याचिका में आवारा कुत्तों के लिए नियम 3 (3) नियम 5 (ए) और नियम 6 (2) पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम, 2001 के संदर्भ में नियमित ''नसबंदी और टीकाकरण''/टीकाकरण कार्यक्रमों को नियमित अंतराल पर करने का निर्देश देने की मांग की गई थी।

नियम 7 के खंड 4 में निर्धारित मानवीय तरीकों का उपयोग करने का प्रावधान है, ताकि उनकी आबादी को नियंत्रित किया जा सके और उन्हें रेबीज से पीड़ित होने से रोका जा सके। यह नियम 6 के खंड (4) के संदर्भ में पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम, 2001 के कार्यान्वयन के संबंध में की गई प्रगति के मूल्यांकन के लिए सभी डेटा/सामग्री का खुलासा करने का प्रावधान करता है, जो एक अनिवार्य खंड है। इस प्रकार, याचिकाकर्ता की मूल शिकायत यह थी, कि पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 प्रमाण के तहत बनाए गए नियम। पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ता) नियम, 2001 का अनुपालन नहीं किया गया हैकेंद्र सरकार ने पशु जन्म नियंत्रण नियम, 2023 को पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के तहत 10 मार्च, 2023 के एक गैजेट के माध्यम से अधिसूचित किया है और पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ता) नियम, 2001 को हटा दिया है। इन नियमों ने एक रिट याचिका में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों को संबोधित किया है। इसे भारतीय पशु कल्याण बोर्ड द्वारा आवारा पशु की समस्याओं के उन्मूलन के लिए बनाया गया है।

सर्वोच्च न्यायालय ने विभिन्न आदेशों में विशेष रूप से उल्लेख किया है कि कुत्तों के स्थानांतरण की अनुमति नहीं दी जा सकती है। मौजूदा नियमों के अनुसार, आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण के लिए पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम संबंधित स्थानीय निकायों/नगर पालिकाओं/नगर निगमों और पंचायतों द्वारा किया जाना है। इसके अलावा पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम को अंजाम देने में शामिल क्रूरता को संबोधित करने की आवश्यकता है। इन नियमों के प्रभावी क्रियान्वयन से, पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम स्थानीय निकायों द्वारा संचालित किया जा सकता है जो पशु कल्याण के मुद्दों को संबोधित करते हुए आवारा कुत्तों की आबादी को कम करने में मदद करेगा। नगर निगमों को एबीसी और एंटी रेबीज कार्यक्रम को संयुक्त रूप से लागू करने की आवश्यकता है। नियमों में दिशा निर्देश भी दिए गए हैं कि कुत्तों को किसी क्षेत्र में स्थानांतरित किए बिना मानव और आवारा कुत्तों के संघर्ष से कैसे निपटा जाए।

नियम के तहत आवश्यकताओं में से एक यह है कि पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम को पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम के लिए विशेष रूप से मान्यता प्राप्त एडब्ल्यूबीआई मान्यता प्राप्त संगठन द्वारा किया जाना चाहिए। ऐसे संगठनों की सूची बोर्ड की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाएगी जिसे समय-समय पर अपडेट भी किया जाएगा। केंद्र सरकार पहले ही सभी राज्यों के मुख्य सचिवों, पशुपालन विभाग और शहरी विकास विभाग के प्रधान सचिवों को पत्र जारी कर चुकी है। इसलिए, स्थानीय निकायों से अनुरोध किया जाता है कि वे नियमों को अक्षरशः लागू करें और किसी भी संगठन को ए.बी.सी. कार्यक्रम करने की अनुमति न दें जो एडब्ल्यूबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं हैं और पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम के लिए अनुमोदित हैं या अन्यथा नियमों में विस्तृत हैं।

इन नियमों के अनुसार, आवारा कुत्तों की बढ़ती आबादी को कम करने के लिए आवारा कुत्तों के लिए नियमित नसबंदी और टीकाकरण कार्यक्रम शुरू करना उत्तरदाताओं का कर्तव्य है। वैधानिक कर्तव्यों का पालन न करने के कारण, दिल्ली शहर में आवारा कुत्तों की आबादी में तेजी से वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप 'कुत्तों के काटने के मामलों में वृद्धि हुई है। याचिकाकर्ता के वकील ने तर्क दिया कि प्रतिवादी कानून के तहत निर्धारित नगर निगम तथा जवाबदार संस्थाऐं अपने कर्तव्यों और कार्यों का पालन नहीं कर रहे हैं। शहर में कुत्तों की आबादी को रोकने के लिए कोई प्रभावी नसबंदी कार्यक्रम भी नहीं किया जा रहा है।

यह आबादी एक भयावह दर से बढ़ रही है, भले ही केंद्र सरकार द्वारा इस उद्देष्य के लिए उन्हें करोड़ों रुपये आवंटित किए जा रहे हों। उच्च न्यायालय ने कहा था कि नगर निगम व अन्य संबंधित विभागों द्वारा दायर स्थिति रिपोर्ट के अवलोकन पर, न्यायालय संतुष्ट है कि वे नियमित रूप से आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण कर अपने वैधानिक कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने प्रत्यर्थियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि वे आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण के लिए अपने प्रयासों और अभियान को जारी रखें, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य है और इसे पूरी गंभीरता से करने की आवश्यकता है। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि आखिर सर्वोच्च न्यायालय इस लोकहित याचिका पर क्या निर्णय लेता है, क्योंकि पूरा देश कुत्तों के काटने की समस्या से ग्रस्त है।

पाखण्डी बाबाओं से मुक्ति की सार्थक पहल

ललित गर्ग

भारतीय हिंदू संतों की प्रमुख संस्था अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद (एबीएपी) की ओर से चौदह महामण्डलेश्वरों और संतों के निष्कासन की ताजा कार्रवाई पाखण्डी एवं छद्म बाबाओं से समाज को मुक्त करने का सराहनीय कदम है। अखाड़ा परिषद की गोपनीय जांच में अखाड़ों से जुड़े ये संत धार्मिक कार्यों के बजाय धनार्जन एवं अधार्मिक कार्यों में लिप्त पाए गए। ऐसे ही अन्य बाबाओं पर व्यभिचार, दुष्कर्म, जादू-टोटके व दूसरे अनैतिक कार्यों के भी आरोप लगते रहे हैं। इनके अलावा सौ से अधिक संतों को अखाड़ा परिषद ने नोटिस भी दिया है। निष्कासित किए गए संतों को अगले साल होने वाले कुंभ में भी प्रवेश नहीं मिलेगा। अखाड़ा परिषद की ताजा कार्रवाई इस तरह के कथित धर्मगुरुओं पर लगाम लगाने की प्रभावी कोशिश मानी जाएगी। इस तरह के प्रयास हर स्तर पर होने चाहिए, ताकि छद्म एवं पाखण्डी धर्मगुरुओं से समाज को मुक्ति मिल सके। आम लोगों में भी विवेक का जागरण जरूरी है, ताकि धर्म को विकृत करने वाली ऐसी घटनाओं को नियंत्रित किया जा सके।

अखाड़ा परिषद ने कुल चौदह ढोंगी संतों की एक सूची मीडिया में जारी की है। सूची में जेल की हवा खा रहे बाबा रामपाल, गुरमीत राम रहीम सिंह इंसां, आसाराम, नारायण साईं व असीमानंद के अलावा निर्मल बाबा, राधे मां और कई ऐसे इच्छाधारी बाबा शामिल हैं, जो पिछले कुछ सालों में अपनी करनी के चलते विवादों में रहे हैं। गोलगप्पा खिलाकर लोगों की हर समस्या का समाधान करने वाले निर्मल बाबा जैसे ढोंगियों के झांसे में लोग कैसे खिंचे चले आते हैं, इस पर भी अखाड़े की ओर से कई चौंकाने वाले तथ्य बताए गए हैं। उनका मानना है कि राधे मां और निर्मल बाबा जादू-टोटके से लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। बाबाओं की कारस्तानियों ने सबको सकते में डाल रखा है। महिलाओं की अस्मत से खिलवाड़ करना इन बाबाओं की दिनचर्याओं में शामिल था। लाज-शर्म की वजह से कुछ महिलाएं नहीं बोलती थीं, उन्हीं का ये बाबा फायदा उठाते थे। इन बढ़ती त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियों के खिलाफ अब पूरा अखाड़ा परिषद मुखर हो उठा है। जरूरत है ऐसे ही अन्य शीर्ष धर्म संगठनों के सक्रिय होकर कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाई करने की।

फर्जी एवं पाखण्डी बाबाओं के मामले में भोले-भाले एवं अशिक्षित लोगों के जीवन के साथ जो खिलवाड़ हुआ है और जिन बाबाओं ने ये कुकर्म किया है, उन्हें ढूंढकर दंड देना ही चाहिए। फर्जी एवं पाखण्डी बाबाओं की परंपरा सदैव से दुष्टों के हाथ में रही है। इसका आरंभ किया था महाभारत में शकुनि ने। हमारे समाज एवं राष्ट्र ऐसे बहुत सारे बाबा रूपी शकुनि हैं, जिन्हें हम समय पर पहचान नहीं पाते हैं। कौरवों और पांडवों के बीच जब जुए का खेल हुआ, तो शर्त यही थी कि पांसे शकुनि चलेगा। शकुनि ने पांसे भी ऐसे तैयार किए थे कि उसको परिणाम और प्रश्न मालूम थे। आधुनिक बाबा भी ऐसे ही पांसे चलते हुए हुए कइयों की जिंदगी को नरक बना रहे हैं, कइयों के घर उजाड़ रहे हैं। सबसे ज्यादा नुकसान उन लोगों का हुआ है, जो धार्मिक आस्थाओं के प्रति अटूट विश्वास रखते थे, क्योंकि भारत की पहचान सदा से ही साधु-संतों से जुड़ी रही है। लेकिन पिछले एक-दो दशक से कुछ फर्जी बाबाओं ने अपनी काम वासना एवं धनलोलुपता के चलते सबकुछ खंडित कर दिया है। इन बाबा रूपी शकुनियों को दंड देना ही पड़ेगा। आधुनिक बाबाओं की तरह महाभारत का शकुनि कभी किसी से नहीं डरता था, लेकिन वो कहता था, दुर्योधन ! मैं इस दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति से डरता हूं और वो श्रीकृष्ण हैं। तो हमें भी आधुनिक बाबाओं के लिये श्रीकृष्ण जैसी एक सख्त व्यवस्था लागू करनी पड़ेगी। क्योंकि श्रीकृष्ण जब किसी को दंड देते थे तो अपना और पराया कभी नहीं देखते थे। श्रीकृष्ण धर्म में जय और जय में धर्म देखते थे। वर्तमान में धर्मगुरुओं एवं बाबाओं का जो चरित्र एवं आचरण प्रस्तुत हो रहा है, वह कष्टदायक एवं विनाशकारी है। इसलिये उनके लिये श्रीकृष्ण रूपी अनुशासन-व्यवस्था को सख्ती से लागू करना ही होगा।

अखाड़ा परिषद का अपना अनुशासन है। अखाड़े से जुड़े संतों में कोई दोष नहीं आ जाए, चरित्रहीनता न आ जाये, आचरण एवं जीवनशैली दूषित न हो जाये, इसे देखते हुए वह समय-समय पर अपने महामण्डलेश्वर व दूसरे संतों की कार्यप्रणाली की गोपनीय जांच कराता रहता है। ऐसी ही हाल में की गयी जांच में सामने आया कि धनार्जन में लिप्त रहने वाले संतों की कार्यप्रणाली अखाड़ों की रीति-नीति के विपरीत थी। इनमें कुछ के तो आपराधिक लोगों से भी संबंध सामने आए। राजनेताओं से भी उनके प्रगाढ़ संबंध रहे हैं। हर समुदाय में संतों का अलग ही स्थान रहता आया है। वे जहां विराजते हैं वह स्थान स्वतः ही उच्च हो जाता है। आज भी बड़ी संख्या में संत-महात्मा समाज को दिशा देने के काम में निःस्वार्थ भाव से जुटे हैं। पर बदलते दौर में संत-महात्मा-मुल्ला-मौलवियों व पीर-पगारों के छद्म-पाखण्डी वेश में ऐसे लोग भी सामने आने लगे हैं जो धार्मिक कार्यकलापों की बजाय न केवल अर्थार्जन में जुटे रहते हैं बल्कि अंधविश्वास, व्यभिचार और पाखण्ड को बढ़ावा देने में जुटे हैं। छद्म धर्मगुरु और संत लोगों की धार्मिक श्रद्धा एवं अंधभक्ति का फायदा उठाकर उन्हें ठगते हैं। ऐसे लोगों का गाहे-बगाहे सियासी जुड़ाव भी सामने आता रहता है। ऐसे ही लोग संत समाज को बदनाम करते हैं, जिससे लोगों की धार्मिक आस्था भी डगमगाने लगती है।

धर्मगुरुओं के धन के प्रति बढ़ते आकर्षण ने भी अनेक तरह की विसंगतियों एवं विकृतियों को जन्म दिया है। अब तक धर्म और धर्मगुरुओं के इर्द-गिर्द ठाट-बाट और राजा-महाराजाओं जैसी वैभवपूर्ण स्थितियां ही देखने को मिलती थीं, लेकिन अब ये तथाकथित धर्मगुरु स्वयं व्यापारी बनकर बड़ी-बड़ी कंपनियों का संचालन कर रहे हैं। एक प्रमुख महिला धर्मगुरु बहुत सारे धार्मिक कार्यों के अलावा अस्पताल, एक टीवी चैनल, इंजीनियरिंग कॉलेज और बिजनेस स्कूल चलाती है। हाल ही में दिल्ली में आयोजित हुए विश्व धार्मिक सांस्कृतिक सम्मेलन में देखा कि किस तरह से पानी से लेकर खाद्य पदार्थ तक बेचे गए। एक बड़ा पंथ चलाने वाले राम-रहीम ऑर्गेनिक उत्पाद खिलाकर देश को सेहतमंद बनाने की तमन्ना रखते हैं। ये एक ऐसी लंबी सूची है जिसमें वर्तमान के लगभग सभी चर्चित धर्मगुरु ऐसे ही व्यावसायिक कार्यों और लाभकारी इकाइयों से जुड़े हैं। व्यावसायिक लाभों के लिए राजनीतिक और व्यावसायिक नेटवर्क रखने के साथ-साथ बड़ी संख्या में धार्मिक अनुयायी रखना इन तथाकथित धर्मगुरुओं की परंपरा रही है।

राजनीति पर धर्म के अनुशासन की बात उचित है, लेकिन धर्मगुरुओं को प्रतिष्ठापित करने के बहाने राजनीति का खेल न खेला जाए, इस बात की जरूरत सर्वाधिक है। अपनी लोकप्रियता के बल पर कुछ धर्मगुरु भारतीय राजनीति के बदलते दौर में कुछ सीटें जीतकर सामने आए हैं। धर्मगुरु से राजनीतिज्ञ बन जाने की ये घटनाएं न केवल धर्मक्षेत्र के लिए बल्कि राजनीति के लिए भी घातक हैं। जहां धर्मगुरुओं के अनुयायी अधिक संख्या में हैं, उन क्षेत्रों में वे स्वयं जीतें न जीतें, वहां के परिणाम को प्रभावित कर ही सकते हैं। उनका यह असर किस दिशा में होगा? कौन सी बड़ी ताकत को लाभ मिलेगा? यानी राजनीति एवं राजनेताओं पर इन धर्मगुरुओं एवं बाबाओं का गहरा प्रभाव एवं वर्चस्व भी अनेक विसंगतियों का कारण बना है। हाथरस में सूरजपाल जाटव उर्फ साकार हरि 'बाबा' के तथाकथित सत्संग में 121 लोगों की मौत का कारण बना। ऐसे फर्जी एवं तथाकथित चमत्कारी बाबाओं के चक्कर लगाने वालों में महिलाएं एवं दलित बड़ी संख्या में हैं। भगदड़ एवं अन्य हादसों की स्थिति में यही लोग मारे जाते हैं। प्रश्न है कि ढोंगी एवं पाखण्डी बाबाओं के पास जाने वाले लोग अपनी तर्क-बुद्धि एवं विवेक से काम क्यों नहीं लेते? अंधविश्वासों के सहारे तरक्की की सीढ़ियां क्यों चढ़ना चाहते हैं? ये विडंबनापूर्ण स्थितियां हैं। जनता की कमजोरी के कारण ही कभी हमारे यहां धर्म की राजनीति में घुसपैठ होती रही है तो अब आर्थिक गतिविधियों से उनका गठबंधन हो रहा है। जब-जब ऐसी स्थितियां हुई हैं, तब-तब धर्म और धर्मगुरु अपने विशुद्ध स्थान से खिसके हैं। खिसकते-खिसकते वे ऐसी डांवाडोल स्थिति में पहुंच गए हैं, जहां धर्म को अफीम कहा जाने लगा है।

विवाह अनंत: बड़ा हुआ तो क्या हुआ ?

निर्मल रानी

मीडिया के माध्यम से पूरे देश ने पिछले दिनों एक %अनंत विवाह % के आयोजन का %लुत्फ़% उठाया। उद्योगपति मुकेश अंबानी के नूर-ए-नज़र अनंत अंबानी का अलग अलग आयोजनों के नाम से लंबे समय तक चला यह विवाह समारोह भारतीय इतिहास का अब तक का सबसे ख़र्चीला विवाह बताया जा रहा है। हमारे देश में जहाँ एक मध्यम या ग़रीब वर्ग का व्यक्ति भी अपने घर के विवाह समारोह को अपनी हैसियत के अनुसार भव्य बनाने का प्रयास करता है चाहे उसे इसके लिये क़र्ज़ ही क्यों न लेना पड़े। ऐसे में यदि विश्व के अमीरों की रैंकिंग में ऊँचा स्थान रखने वाला तथा भारत का सबसे अमीर उद्योगपति अपने बेटे की शादी को अति भव्य बनाने के लिये अपनी दौलत पानी की तरह बहा दे तो इसमें आश्चर्य किस बात का ? इससे पहले मुकेश अंबानी ने अपने बड़े बेटे आकाश अंबानी की शादी जोकि श्लोका मेहता के साथ हुई थी,में भी बहुत पैसे ख़र्च किये थे। अमेरिकी पॉप-रॉक बैंड मरून 5 ने इस शादी में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। आकाश अंबानी की शादी के कुछ कार्यक्रम स्विट्ज़रलैंड में भी किए गए थे। परन्तु अनंत अंबानी की शादी के ख़र्च ने केवल भाई आकाश व बहन ईशा अंबानी की शादी के ख़र्च का ही रिकॉर्ड नहीं तोड़ा बल्कि भारत में अब तक हो चुकी सभी चर्चित व ख़र्चीली शादियों को भी पीछे छोड़ दिया।

भारत में अब तक हुई मंहगी शादियों में विशेषतयः मुकेश अंबानी की बेटी ईशा अंबानी की शादी आनंद पीरामल के साथ हुई थी जिसपर अनुमानतः औसत ख़र्च 100 मिलियन अमेरिकन डॉलर हुआ था। इसमें बियॉन्से के प्राइवेट कॉन्सर्ट से लेकर पहली सगाई की पार्टी तक इटली के लेक कोमो में हुई थी। संगीत पार्टी के लिए उदयपुर का महल बुक किया गया था और शादी एंटीलिया में हुई थी। इसी तरह 2016 में माइनिंग सरताज जनार्दन रेड्डी के बेटे राजीव रेड्डी व ब्राह्मणी की शादी जो नोटबंदी के फ़ौरन बाद हुई थी,वह भी चर्चा में रही थी । इसमें भी क़रीब 74 मिलियन अमेरिकी डॉलर ख़र्च हुये थे। इस शादी का कार्ड एलसीडी स्क्रीन के साथ था। शादी में ब्राह्मणी ने 89 करोड़ की ज्वेलरी के साथ 17 करोड़ की साड़ी भी पहनी थी। इसमें लगभग 50 हज़ार अतिथि आमंत्रित थे। इसी तरह स्टील किंग के नाम से विश्वविख्यात लक्ष्मी निवास मित्तल की भतीजी सृष्टि मित्तल की शादी गुलराज बहल से हुई थी जिसमें 70 मिलियन अमेरिकी डॉलर ख़र्च हुआ था। 2013 में हुई ये शादी स्पेन के बार्सिलोना में हुई थी। उसके बाद संजय हिंदुजा और अनु महंती के विवाह पर 150 करोड़ से ज़्यादा ख़र्च किया गया था। इस शादी में 16 अलग देशों के पकवान परोसे गए थे। यहां 16000 अतिथि आमंत्रित थे। इसके बाद लक्ष्मी निवास मित्तल की बेटी वनीशा मित्तल की शादी इनवेस्टमेंट बैंकर अमित भाटिया से हुई। 2004 में हुई इस शादी में 350 करोड़ रूपये ख़र्च हुये थे। वर्सैलिस फ्रांस में हुई इस शादी में शाहरुख़ ख़ान , सैफ़ अली ख़ान , जूही चावला, ऐश्वर्या राय, रानी मुखर्जी आदि सितारों ने शिरकत की थी और सभी परफ़ॉर्मेन्स फ़राह खान ने कोरियोग्राफ़ की थी।

उपरोक्त सभी शादियां समय के साथ साथ आम लोगों के मस्तिष्क पटल से ओझल हो चुकी हैं। परन्तु कुछ शादियां ऐसी भी हुई हैं जिन्हें देश आज भी याद करता है। ऐसी ही एक शादी सहारा प्रमुख सुब्रतो रॉय ने 2004 में अपने दोनों बेटों सुशांतो रॉय और सीमांतो रॉय की एक साथ की थी। इसमें सहारा टाउनशिप लखनऊ को महलों की तरह सजा दिया गया था। 10 फ़रवरी 2004 को सीमांतो रॉय की शादी थी जबकि 14 फ़रवरी को सुशांतो रॉय की । इसमें प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई भी शरीक हुये थे और वे यहां 90 मिनट रुके थे। इस अवसर पर सोनिया गाँधी ,चंद्रशेखर,शरद पवार ,दिग्विजय सिंह,लालू व मुलायम यादव,लाल कृष्ण आडवाणी अमिताभ बच्चन,अमर सिंह सहित दस हज़ार पांच सौ मेहमान लखनऊ पधारे थे। इसके अतिरिक्त उद्योग जगत से गोदरेज ,राजन नंदा ,सुनील मित्तल ,खेतान, किरलोस्कर, स्वराज पाल, अनिल अम्बानी व मीडिया के बड़े लोग मौजूद थे। 550 करोड़ रूपये ख़र्च होने वाली इस शादी का कार्यक्रम एक सप्ताह चला था। परन्तु देश की जनता के दिलों में जगह बनाने वाली इस शादी का सबसे बड़ा आकर्षण यह था कि इस विवाह कार्यक्रम में डेढ़ लाख बेघर लोगों को शादी का व्यंजन खिलाया गया था। इतना ही नहीं बल्कि इसी अवसर पर 101 ग़रीब जोड़ों की शादी भी उसी विवाह मंडप में की गयी थी। और इन प्रत्येक जोड़ों को एक लाख एक रुपया उपहार स्वरूप भेंट किया गया था।

परन्तु मुकेश अंबानी के नूर-ए-नज़र के इस ताज़ा तरीन %अनंत विवाह% के %विवाह अनंत% को तो देश की जनता ने कुछ अलग ही नज़रों से देखा। बेशक मंहगे से मंहगे विदेशी कार्यक्रम प्रस्तोता यहाँ आये ,अति मंहगे तोहफ़ों का लेनदेन हुआ, यहाँ भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर देश की राजनीति, उद्योग फ़िल्म व धर्म जगत की तमाम बड़ी हस्तियों ने शिरकत की। परन्तु देश की चिंता मुख्य रूप से इस बात को लेकर थी कि शादी के समय ही जिओ ने अपना रिचार्ज रेट लगभग 16 से 20 प्रतिशत तक बढ़ा दिया। देश को सन्देश यह गया कि शादी पर होने वाला ख़र्च जिओ ने अपना रिचार्ज रेट बढ़ाकर देश की जनता से वसूल किया है। सोशल मीडिया पर इसतरह के विचारों की बाढ़ सी आ गयी। और इसी शादी के दौरान व्यवसायिक रूप से सबसे बड़ा अशुभ तो यह रहा कि जिन दिनों %विवाह अनंत% के विभिन्न आयोजन हो रहे थे उसी दौरान जिओ के लाखों उपभोक्ता अपने सिम को जिओ से बी एस एन एल में पोर्ट करवा रहे थे। यदि मुझ जैसी कोई सलाहकार इस %विवाह अनंत% में होती तो कम से कम एक महीने के लिये जिओ कनेक्टिविटी अपने लगभग 48 करोड़ उपभोक्ताओं को निःशुल्क उपलब्ध करवाकर करोड़ों ग़रीब उपभोक्ताओं की दुआयें भी दिलवाती और जिओ से बी एस एन एल में पोर्ट करवाने का जो सिलसिला शरू हो चुका है वह भी रुक जाता। दूसरे यह कि रिचार्ज रेट भी शादी के बाद बढ़ाने की सलाह देती। परन्तु फ़िलहाल जिसतरह अनंत विवाह के %विवाह अनंत% के दौरान रिचार्ज रेट बढ़ाकर जनता से पैसे वसूले गये और हज़ारों करोड़ नाच गाने व समारोह के अन्य आयोजनों में अपनी शान शौकत दिखाने के लिये ख़र्च किये गये उसे देखकर तो जनता संत कबीर के उस दोहे को ही याद कर रही है जिसमें उन्होंने कहा था कि ÷बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पंथी को भी छाया नहीं फल लागे अति दूर÷।

आजादी की लड़ाई का पहली बार शंखनाद करने वाले अमर शहीद मंगल पांडेय

मंगल पांडेय का जन्म 19 जुलाई 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया में हुआ था। मंगल पांडेय का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ क्रांति की शुरुआत की थी और 29 मार्च 1857 को बैरकपुर में अंग्रेजों पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया था। हालांकि वह पहले ईस्ट इंडिया कंपनी में एक सैनिक के तौर पर भर्ती हुए थे लेकिन ब्रिटिश अफसरों की भारतीयों के प्रति क्रूरता को देखकर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल लिया था।

राजेश नारायण श्रीवास्तव (एड.)

आज यानी 19 जुलाई को देश में आजादी की लड़ाई का पहली बार शंखनाद करने वाले अमर शहीद मंगल पांडेय की जयंती है। आज का दिन इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए सुनहरे अक्षरों में लिख दिया गया है।

मंगल पांडेय का जन्म 19 जुलाई 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया में हुआ था। मंगल पांडेय का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ क्रांति की शुरुआत की थी और 29 मार्च 1857 को बैरकपुर में अंग्रेजों पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया था। हालांकि वह पहले ईस्ट इंडिया कंपनी में एक सैनिक के तौर पर भर्ती हुए थे लेकिन ब्रिटिश अफसरों की भारतीयों के प्रति क्रूरता को देखकर उन्होंने अंग्रेजों

के खिलाफ मोर्चा खोल लिया था। मंगल पांडेय कलकत्ता की बैरकपुर छावनी में 34वीं बंगाल नेटिव इफैंट्री की पैदल सेना के सिपाही नंबर 1446 थे। अंग्रेजी अफसरों पर गोली चलाने और हमला करने के आरोप में मंगल पांडेय को फांसी की सजा सुनाई गई थी, लेकिन तय तिथि से दस दिन पहले ही उन्हें फांसी दे दी गई।

बैरकपुर के सभी जल्लादों ने फांसी देने से किया इनकार–18 अप्रैल 1857 को मंगल पांडेय को फांसी दी जानी थी, ऐसा कहा जाता है कि बैरकपुर के सभी जल्लादों ने मंगल पांडेय को फांसी देने से इनकार कर दिया था। जल्लादों ने अपने हाथ मंगल पांडेय के खून से न रंगे जाने की बात कहते हुए फांसी देने से इनकार किया था। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने कलकत्ता (कोलकाता) से चार जल्लादों को बुलाया। मंगल पांडेय की फांसी की खबर सुनने के बाद कई छावनियों में ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ गुस्सा भड़क गया, जिसे देखते हुए ब्रिटिश राज ने मंगल पांडेय को फांसी 18 अप्रैल को न देकर दस दिन पहले आठ अप्रैल को ही दे दी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित तथा 226, एमपी नगर जोन-2, भोपाल से प्रकाशित। संपादक — भरत पटेल, प्रबंध सलाहकार — भारती पटेल, संपादकीय सलाहकार — विष्णु कौशिक, सलाहकार संपादक - स्मिता पटेल, स्थानीय संपादक —संजय सक्सेना, प्रकाशन से संबंधित समस्त समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकार भोपाल न्यायालय का रहेगा। रजि. नं. भोपाल डिवी. 48 म.प्र.। ई-मेल : dspbpl67@gmail.com, वेबसाईट: dainiksandhyaprakash.in

फरार 6 आरोपियों पर 27 हजार रुपए का इनाम घोषित

पुलिस अधीक्षक छतरपुर अगम जैन ने थाना सिविल लाइन में पंजीबद्ध अपराध में फरार आरोपी वीरानाला बालाजी पिता राजा गोपाल निवासी नेहरू नगर जिला जमालामादूगू कुडाप आन्ध्रप्रदेश पर 5 हजार रुपए, थाना महाराजपुर में पंजीबद्ध अपराध में दो फरार आरोपी रामनरेश दीक्षित, परशराम दीक्षित पिता राजाभैया दीक्षित निवासी कुसमा पर 10 हजार रुपए, थाना जुझारनगर में पंजीबद्ध अपराध में फरार आरोपी विनोद दुबे एवं प्रमोद दुबे निवासी बरोनाकला थाना एरवा कटरा जिला औरया उ.प्र. पर 10 हजार रुपए एवं थाना हरपालपुर में पंजीबद्ध अपराध में फरार आरोपी अजयपाल सिंह निवासी कबरई जिला हमीरपुर उ.प्र. पर 2 हजार रुपए का नगद पुरस्कार घोषित किया है। जो अपराध घटित करने के बाद से फरार है। पुरस्कार वितरण के संबंध में पुलिस अधीक्षक छतरपुर का निर्णय मान्य होगा।

धार विधायक नीना वर्मा के विरूद्ध लगाई गई चुनाव याचिका खारिज

विधायक नीना वर्मा विधानसभा निर्वाचन 2023 मे 201 धार विधानसभा से निर्वाचित हुई है। इनके निर्वाचन के शपथ पत्र को लेकर धार निवासी सुरेशचन्?द्र भण?डारी द्वारा निर्वाचन याचिका क्रमांक 16/2024 इन्?दौर खण?डपीठ के सामने प्रस्?तुत की गई थी। इस निर्वाचन याचिका में दोनो पक्षों की दलिल सुनने के पश?चात आज न्?यायालय द्वारा यह याचिका अग्रीम सुनवाई योग?य नही समझते हुए, याचिका निरस्?त कर दी गई है। उक?त जानकारी अधिवक?ता अजय लोणकर द्वारा दी गई

केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीमती ठाकुर 20 को मनावर विस क्षेत्र में प्रवास पर रहेगी

धार। केंद्रीय राज्यमंत्री महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार एवं धार- महू लोकसभा सांसद श्रीमती सावित्री ठाकुर 20 जुलाई शनिवार को जिले की की मनावर विधानसभा क्षेत्र में प्रवास रहकर विकास कार्यो का भूमि पूजन व आंगनवाड़ी निरिक्षण करेंगी। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर तय कार्यक्रम अनुसार 20 जुलाई को सुबह धामनोद से प्रस्थान कर सुबह 9 ~30 बजे मनावर विधानसभा क्षेत्र ग्राम कालीबावड़ी में जन आभार रैली में शामिल होगी। वहा से उमरबन भानपुरा रालामंडल लुन्हेरा बुजुर्ग टवलई झिर्वी होते हुए दोपहर 1 बजे अमलाठा राजपुरा आंगनवाड़ी केंद्र का निरिक्षण करेंगी। ग्राम बाकानेर में जन आभार रैली के रूप में अजंदीमान भरडपुर से दोपहर 3 बजे मनावर नगर में रैली निकलेंगी जिसका जगह जगह मंच लगाकर भाजपा कार्यकर्ता पुष्प वर्षा कर स्वागत करेंगे। मनावर से ग्राम बारूद सिंघाना होते हुए शाम 5 बजे ग्राम मांडवी में विभिन विकास कार्यो का भूमि पूजन करेंगे। ग्राम जाजम खेड़ी बालीपुर श्री अम्बिका आश्रम गुरूजी दर्शन कर रात्रि 8 बजे धामनोद के लिए प्रस्थान करेंगी। उक्त जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

विधायक विष्णु खत्री ने ली रोगी कलयाण समिति की बैठक, व्यवस्था सुधारने के दिये निर्देश

बैरसिया। सिविल अस्पताल बैरसिया की रोगी कल्याण समिति की बैठक गुरुवार को आयोजित की गई। बैठक में विधायक विष्णु खत्री ने बैठक में पहले तो एजेंडे पर चर्चा की। इसके बाद विधायक खत्री ने अस्पताल की व्यवस्थाओं में सुधार लाने के लिए सीबीएमओ को दिशा-निर्देश दिए। निर्देशों में डॉक्टरों की उपस्थिति अनिवार्य करने एवं मरीजो को इलाज को लेकर किसी भी परेशानी से ना जूझना पड़े साथ ही अस्पताल परिसर में सफाई व्यवस्था को लेकर कड़े निर्देश दिए वहीं बैठक में रोगी कलयाण समिति के पुनः गठन पर सहमति बन गई है। जल्द ही रोगी कल्याण समिति का नवीन गठन किया जाएगा। इस एजेंडे के अलावा अन्य समस्याओं को लेकर चर्चा हुई। बैठक में सीबीएमओ डॉ पुष्पा गुरु, सदस्य दीपक दुबे, वीरेंद्र जैन एवं नरेंद्र शर्मा आदि मौजूद रहे।

इन हालातों में कैसे पढ़ेगा और कैसे बढ़ेगा इण्डिया कुछ इधर भी ध्यान दो सरकार

औबेदुल्लागंज। कहते एमपी अजब हैं एमपी गजब हैं इस स्लोगन को चरितार्थ करती आज की यह खबर उन जिम्मेदारों पर सवालिया निशान हैं जिनको शिक्षा के क्षेत्र में बच्चो को सुविधाएं मुहैया कराने और बच्चों को उचित शिक्षा प्राप्त हो इसकी चिंता करने की जबाबदारी हैं। लेकिन इन जिम्मेदारों को बच्चो की शिक्षा और उस हेतु मिलने बाली सुविधाए को छोड़ कर सब करना है ताजा मामला ओबेदुल्लागंज ब्लॉक की ग्रामपंचायत तामोट का है जहाँ ग्राम सिंधी केम्प में स्थित प्राथमिक शाला तालाब बनी हुई है राष्टीय राज्य मार्ग 46 पर स्थित यह शाला खुद की दुर्दशा का बखान खुद कर रही हैं। इस तलावनुमा शाला में बच्चे पढ़ने को मजबूर हैं शिक्षको को बार बार बिभाग को अवगत कराना पड़ रहा है कि कुछ हल निकाले लेकिन अधिकारी एक दूसरे को पत्र लिखकर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ रहे हैं। इन हालातों में बच्चों की पढ़ाई तो भगवान भरोसे ही हैं ये कहते हुए कोई अतिशयोक्ति नही होगी कि ÷ कैसे पढ़ेगा इंडिया कैसे बढ़ेगा इंडिया

इनका कहना है

हम पानी की निकासी करवा रहे हैं पानी की निकासी होने के बाद जल भराव नहीं होगा
सतीश कुशवाहा बी आर सी ओबेदुल्लागंज

बच्चे तो पढ़ना चाहते हैं स्कूल भी आते हैं मगर ऐसी समस्याओं का शीघ्र समाधान होना चाहिए
शिव प्रसाद राय सहायक शिक्षक प्राथमिक शाला सिंधीकेम्प

हम इस पानी की समस्या के कारण आंगनबाड़ी दूसरी स्थान पर लगा रहे है
निर्मला ओढ़ सहायिका आंगनबाड़ी सिंधीकैंप

फरार 6 आरोपियों पर 27 हजार का इनाम घोषित

छतरपुर। पुलिस अधीक्षक छतरपुर अगम जैन ने थाना सिविल लाइन में पंजीबद्ध अपराध में फरार आरोपी वीरानाला बालाजी पिता राजा गोपाल निवासी नेहरू नगर जिला जमालामादूगू कुडाप आन्ध्रप्रदेश पर 5 हजार रुपए, थाना महाराजपुर में पंजीबद्ध अपराध में दो फरार आरोपी रामनरेश दीक्षित, परशराम दीक्षित पिता राजाभैया दीक्षित निवासी कुसमा पर 10 हजार रुपए, थाना जुझारनगर में पंजीबद्ध अपराध में फरार आरोपी विनोद दुबे एवं प्रमोद दुबे निवासी बरोनाकला थाना एरवा कटरा जिला औरया उ.प्र. पर 10 हजार रुपए एवं थाना हरपालपुर में पंजीबद्ध अपराध में फरार आरोपी अजयपाल सिंह निवासी कबरई जिला हमीरपुर उ.प्र. पर 2 हजार रुपए का नगद पुरस्कार घोषित किया है। जो अपराध घटित करने के बाद से फरार है। पुरस्कार वितरण के संबंध में पुलिस अधीक्षक छतरपुर का निर्णय मान्य होगा।

छात्रावासों में कोचिंग पढ़ाने हेतु अनुभवी शिक्षक करें आवेदन

छतरपुर,। अनु. जाति महाविद्यालयीन सीनियर छात्रावासों में अंग्रेजी विषय एवं उत्कृष्ट छात्रावासों में गणित, विज्ञान, अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर विषय के शासकीय संस्थाओं में अध्यापन कराने वाले योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों के वर्ष 2024-25 के लिए छतरपुर जिले में संचालित शासकीय अनूसूचित जाति बालक एवं कन्या उत्कृष्ट छात्रावासों में प्रवेशित छात्र-छात्राओं को कोचिंग पढ़ाने के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए है।

जिला संयोजक जनजातीय कार्य विभाग छतरपुर ने बताया कि 15 दिवस के अंदर कोचिंग पढ़ाने के इच्छुक शिक्षक सादा कागज पर संबंधित संस्था प्रमुख से सहमति, योग्यता का प्रमाण पत्र की मूल प्रति एवं अन्य योग्यता एवं शिक्षण कार्य का अनुभव प्रमाण सत्यापित छायाप्रति संबंधित प्राचार्य से अनुशंसा कराकर कर्यालयीन समय में कार्यालय में जमा कराएं।

राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा ने राजस्व महाभियान 2.0 का किया शुभारंभ

समय सीमा में कार्य निपटाने के दिए निर्देश

सांध्य प्रकाश, विदिशा। मध्यप्रदेश सरकार के राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा गुरूवार को विदिशा आए। उन्होंने राजस्व महाभियान 2.0 का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि इसके पहले चलाए गए महाभियान में 30 लाख से ज्यादा राजस्व प्रकरणों का निपटारा किया गया था। इस बार भी हम ऐसा ही उल्लेखित कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि राजस्व अधिकारी पटवारी, नायब तहसीलदार, तहसीलदार आदि को अपने हिस्से की ईमानदारी रखना है। यह कार्य सेवा भाव का है। बंटवारे, नामांतरण आदि की प्रक्रिया जो अलग-अलग प्रकार से तय की गई है। उसके अनुसार 40 से लेकर 60 दिन के भीतर इस प्रक्रिया को किया जाना है। पारिवारिक विवाद, बंटवारा विवाद, पिता की मौजूदगी में बंटवारा, बेटियों की हिस्सेदारी सहित कई अन्य बिंदुओं को लेकर भी उन्होंने समय सीमा में इस कार्य को करने के संबंध में निर्देशित किया।

मंत्री करण वर्मा दोपहर 4 बजे सर्किट हाउस पहुंचे। जहां पर विदिशा विधायक मुकेश टंडन, कुरवाई विधायक हरि सिंह सप्रे, कलेक्टर बुद्धेश कुमार वैद्य, एसपी दीपक शुक्ला के अलावा भाजपा के तमाम पदाधिकारी, कार्यकर्ता भी मौजूद रहे। सर्किट हाउस में कार्यकर्ताओं से मुलाकात करने के बाद राजस्व मंत्री कलेक्टोरेट पहुंचे। जहां उन्होंने समीक्षा बैठक में भाग लिया। 2.0 राजस्व महा अभियान को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। साथ-साथ अब तक किए कार्यों की समीक्षा भी की।

वन विभाग से पीड़ित मुन्नीबाई को मिला न्याय

प्रथम व्यवहार न्यायाधीश की अदालत ने वन विभाग को हस्ताक्षेप न करने के दिये आदेश

छतरपुर। प्रथम व्यवहार न्यायाधीश छतरपुर अरविन्द सिंह गुर्जर ने वन विभाग से प्रताड़ित मुन्नीबाई असाटी पत्नी दीनदयाल असाटी को न्याय देते हुये वन विभाग एवं राजस्व विभाग को आदेशित किया है कि वे वादग्रस्त जमीन पर कोई हस्ताक्षेप न करें क्योंकि उक्त जमीन मुन्नीबाई असाटी के स्वत्व की जमीन है।

मिली जानकारी के अनुसार छतरपुर तहसील स्थित ग्राम मारगुवां में भूमि खसरा क्रमांक 199, 200, 201, 229/1, 229/3 कुल किता 5 रकवा क्रमांक 0.915, 0.397, 0.741, 0.913, 0.662 कुल रकवा 3.428 हेक्टेयर भूमि असाटी मोहल्ला छतरपुर निवासी श्रीमती मुन्नीबाई असाटी पत्नी दीनदयाल असाटी की जमीन है। यह जमीन इन्होंने झल्लू अहिरवार, लखनलाल अहिरवार व हरिया अहिरवार से 4 लाख रूपये में दिनांक 22 मई 18 को रजिस्टर्ड विक्रय पत्र के जरिये खरीदी थी जिसका नामांतरण भी हो गया था। भूमि क्रय करने के बाद मुन्नीबाई असाटी द्वारा उक्त जमीन में रबी एवं खरीफ की फसल की जा रही थी लेकिन इसी वर्ष वन विभाग ने अचानक उक्त जमीन को अपनी जमीन बताते हुये मुन्नीबाई असाटी को खेती करने से मना कर दिया जिसके विरूद्ध मुन्नीबाई द्वारा न्यायालय की शरण ली गयी। न्यायालय प्रथम व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ खंड के चतुर्थ अतिरिक्त न्यायाधीश छतरपुर अरविन्द सिंह गुर्जर की अदालत में इस प्रकरण की सुनवाई हुई। दोनों पक्षों को सुनने के बाद न्यायाधीश अरविन्द सिंह गुर्जर ने अपने फैसले में माना कि उक्त जमीन की स्वामी एवं अधिपत्यधारी श्रीमती मुन्नी असाटी है। अत~वन विभाग एवं राजस्व विभाग न तो स्वयं हस्ताक्षेप करे और न ही किसी अन्य से हस्ताक्षेप करावे। इतना ही नहीं न्यायालय ने इस मामले में प्रतिवादी वन विभाग एवं जिला प्रशासन को यह भी आदेश दिया है कि वे स्वयं अपना तथा वादी का वाद व्यय वहन करेंगे। इस मामले में मुन्नीबाई असाटी की ओर अधिवक्ता ओपी चतुर्वेदी ने पैरवी की थी जबकि वन विभाग एवं जिला प्रशासन की ओर से शासकीय अधिवक्ता दिनेश तिवारी ने शासन का पक्ष रखा था।

ज्ञात हो कि वन विभाग द्वारा सिर्फ मुन्नीबाई असाटी ही प्रताड़ित नहीं रही हैं बल्कि कई ऐसे किसान हैं जो वन विभाग की मनमानी कार्रवाई के शिकार हैं। इनमें अधिकांश किसान ऐसे हैं जो वर्षों से खेती कर रहे हैं तथा राजस्व रिकार्ड में उनका नाम दर्ज है लेकिन वन विभाग उनकी जमीन को वन भूमि बताकर खेती नहीं करने दे रहा है बल्कि जो भी खेती करने की कोशिश करता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। जिला न्यायालय के इस फैसले से उम्मीद की जा रही है कि अब वन विभाग अपनी मनमानी कार्यप्रणाली से बाज आयेगा और निरीह किसानों को प्रताड़ित नहीं करेगा।

सडक़ पर भीख मांगकर किया विरोध प्रदर्शन

अटल सेना ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। अटल सेवा के तत्वावधान में गुरूवार को छात्रावास के अंशकालीन कर्मचारियों का वेतन समय पर मिलने और वेतन वृद्धि को लेकर मुख्यमंत्री और आदिमजाति कल्याण विभाग मंत्री के नाम से जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। इससे पूर्व संगठन के पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने सैंकड़ों की संख्या में शहीद भवन से रैली निकली निकाली और महिला कर्मचारियों ने शहर में भीख मांग कर विरोध प्रकट किया। इस संबंध में संगठन के प्रांताध्यक्ष राजेन्द्र सिंह चौहान (केन्दु बाबा) ने बताया कि एससी व एसटी छात्रावास में कार्यरत अंशकालीन कर्मचारियों को लगभग एक वर्ष से वेतन नहीं मिला है। केन्दु बाबा ने बताया कि समय पर वेतन नहीं मिलने से उनको अपनी घर गृहस्थी चलाने में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। बच्चों की पढ़ई पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। परिवार में कोई बीमार हो जाए तो उसका इलाज भी नहीं हो पाता है। केन्दु बाबा ने बताया कि ऐसा एक परिवार में हुआ भी है कि पैसों के अभाव में कुछ परिवार के सदस्य की मृत्यु भी हो गई है। अंशकालीन के नाम पर शासन इनसे पूर्ण समय याने 8 घंटे कार्य करवाती है। बहुत से कर्मचारी पूर्णत~ इसी पर निर्भर हैं उनके पास अन्य दूसरा कार्य नहीं है। किसी कर्मचारी के घर में दूसरा कमाने वाला नहीं है। कोई विधवा है कोई परित्याक्ता है। ज्ञापन में मांग की गई है कि अंशकालीन कर्मचारियों को कलेक्टरेट से वेतन दिया जाए और हर माह समय पर वेतन दिया जाए।

यह थे मौजूद

इस अवसर पर रामलाल धुर्वे, श्रीमती शोभा धुर्वे, रानी धुर्वे, शांति बाई, गीता मरकाम, सविता धुर्वे, ममता धाड़से, रमेश कुमार, फुलवंती उइके, किरण सोनी, अनीता धुर्वे, प्रमिला सोनारे, चंपावती, राधा धुर्वे, वंदना पारधे, बबलू गायकवाड, दुर्गाबाई, श्रीमती दुर्गा हिवराय सहित बड़ी मौजूद थी।

प्रदेश की संभवत~पहली अनूठी पहल

सांवलमेढा पंचायत ने बनाया अपना बाल संरक्षण कोष

सांध्य प्रकाश बैतूल। भैंसदेही विकासखंड की सांवलमेढा पंचायत की पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति की अनूठी पहल की है। समिति ने बाल संरक्षण के मुद्दे को प्राथमिकता से लेते हुए बाल संरक्षण कोष बनाने की पहल शुरू की। समिति ने देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों के संरक्षण के लिए यह कोष बनाया है। इस कोष के लिए सरपंच श्रीराम भलावी ने अपने एक माह का मानदेय लगभग 4200 रुपये, उपसरपंच रामकिशोर दहीकर, सचिव रमेश बारस्कर, रोजगार सहायक सुश्री कल्पना कासदेकर एवं मोबिलाईजर सुश्री जैवन्ति सरियाम द्वारा 1000 रुपए की राशि देना तय किया। उल्लेखनीय है कि पंचायत के सभी पंच, जिन्हें कोई निश्चित मानदेय भी नहीं मिलता है। उन्हें वर्ष भर में बैठकों में शामिल होने का सिर्फ भत्ता मिलता है। उन्होंने वह भत्ता भी बच्चों के संरक्षण कोष में देने का फैसला लिया है एवं निर्माण समिति के अध्यक्ष कादर शाह द्वारा 1100 रुपये संबंधित क्षेत्र के वन अधिकारी (रेंजर) मानसिंह परते, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस (एसडीपीओ) भूपेंद्र सिंह मौर्य व थाना प्रभारी सुश्री अंजना धुर्वे द्वारा भी 1100 रुपये, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता तथा बीट कांस्टेबल द्वारा भी 500 रुपये की राशि देना तय किया है। वर्तमान की स्थिति में यह राशि 29,000 रुपयों के आसपास होगी, ग्राम सभा के दिन यह राशि बढने् की भी संभावना है। समिति ने यह भी निर्णय लिया है कि पंचायत में अब बाल संरक्षण कर भी लिया जाएगा जिसकी शुरुआत भी अगस्त माह में आयोजित होने वाली ग्राम सभा से ही की जाएगी। ज्ञात हो कि पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समितियों का गठन महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वावधान में हुआ है। आवाज संस्था द्वारा परवाह परियोजना के अंतर्गत बाल संरक्षण हेतु पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समितियों के प्रशिक्षण और बैठक की जा रही हैं और इसके उत्साहजनक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। इसकी एक बानगी सांवलमेंढ़ा पंचायत में देखने को मिली। इस बार स्थानीय पंचायत भवन में बैठक आयोजित कराई गई जिसमें बीट कांस्टेबल अजय भट्ट के साथ-साथ अन्य सभी सदस्य भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस बार की बैठक में ड्राप-आउट बच्चों और देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों के संबंध मे विस्तृत चर्चा हुई। इस पूरी पहल के बारे में बताते हुए आवाज संस्था के जिला समन्वयक भूपेन्द्र लोखंडे कहते हैं कि हमें बेहद खुशी हो रही है कि पंचायत ने बाल संरक्षण के क्षेत्र में अपनी भूमिका को समझा है। श्री लोखंडे ने कहा कि संभवत~ यह प्रदेश में पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति द्वारा बाल संरक्षण कोष बनाने का पहला मामला है। उन्होंने इस पहल में आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग हेतु महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी गौतम अधिकारी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपनी टीम के सदस्य विनीत धोटेकर, संगीता लिखितकर तथा भावना मस्की के प्रयासों की प्रशंसा की।

विशाल हिन्दू वाहिनी महिला संगठन ने किया पौधारोपण

बैतूल। वर्तमान समय में महिलाएं रसोई के साथ जॉब करते हुए समाज हित में भी अपना उल्लेखनीय योगदान निभा रहीं हैं। महिलाएं आज सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दे पर प्रखर हैं और पर्यावरण संरक्षण को भी गंभीर विषय समझ रहीं हैं। विशाल हिन्दू वाहिनी महिला संगठन की राष्टीय अध्यक्ष श्रीमती नीतू चोलिया की अध्यक्षता में शासकीय आयुर्वेद चिकित्सालय में 11 लक्ष्मीतरु पौधों का रोपण किया और उनके पालन एवं सुरक्षा की जिम्मेदारी गायत्री परिवार द्वारा ली गई। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष डॉ.सुषमा सोनी एवं गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पूर्व सैनिक मधु वर्मा, पर्यावरण समन्वयक मुकेश गुड्डा वर्मा, अनिल साहू, आदर्श वर्मा,श्री कवडक़र तथा संगठन की प्रेमलता मालवीय, अर्चना वर्मा, मीरा वर्मा, मीनाक्षी सोनी, मेघा गोयल, वान्या गोयल, प्रांजली तन्हालकर, संध्या पाल, निर्मला कवडक़र आदि पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

तीर्थ क्षेत्र बांदकपुर जिसे 13 वां ज्योतिलिंग भी कहा जाता है, यहां पर प्रति सोमवार

दमोह ~सावन सोमवार 22 जुलाई से प्रारंभ हो रहे हैं और 2 तारीख को सोमवती अमावस्या भी है, इसके मद्देनजर तीर्थ क्षेत्र बांदकपुर जिसे 13 वां ज्योतिर्लिंग भी कहा जाता है, यहां पर प्रति सोमवार लगभग 60 से 70 हजार श्रद्धालुओं के आने की संभावना है, इसको देखते हुए यहां की व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए पुलिस अधीक्षक के साथ भ्रमण कर बांदकपुर की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। यह बात कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर ने आज बांदकपुर में श्रद्धालुओं की व्यवस्थाओं के संबंध में मंदिर समिति के साथ बैठक में कही। पुलिस अधीक्षक श्रुतकीर्ति सोमवंशी, एसडीएम एलआर बागरी, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस, एडवोकेट सुरेश मेहता, एडवोकेट पंकज हर्ष श्रीवास्तव, पंडित कृपाल पाठक सहित अन्य विभागों के अधिकारीगण एवं समिति सदस्य मौजूद थे।

इस अवसर पर कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक श्रुतकीर्ति सोमवंशी ने समिति सदस्यों के साथ मंदिर परिसर का भ्रमण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

कलेक्टर श्री कोचर ने कहा समिति और बाकी सभी अधिकारियों के साथ बैठक ली है, सारी व्यवस्थाओं का पूरा जायजा लेकर सभी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं, ताकि 22 जुलाई से जब सावन सोमवार शुरू होंगे तो जितने भी श्रद्धालु यहां पर आएंगे उन सभी का अनुभव आनंदमय हो, वे पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवान के दर्शन और पूजन कर सकें, इसके लिए सुरक्षा, साफ-सफाई, दर्शन के लिये पंक्तिबद्ध रूप से श्रद्धालुओं के जाने और आने की व्यवस्था, निकास और प्रवेश, एबुलेंस-चिकित्सा, फायरफाइटर, जनरेटर, विद्युत, ट्रैफिक, पार्किंग यह सब भी पूरी तरह से सुनिश्चित किया जाएगा। इसके अलावा बाकी सभी लॉजिस्टिक और दूसरी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए सभी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं।

भर्ती

आवश्यकता है भोपाल सीएससी (समग्र) में एम & ई के पद पर आवेदन के लिए ग्रेजुशन व कंप्यूटर डिप्लोमा होना आवश्यक है
लोकेशन -भोपाल, पद - 01,
प्राथमिकता - सोशल वर्क का अनुभव, मासिक वेतन - 12000
भोपाल सीएससी (समग्र) में आवश्यकता है 8 सीएलएच की जो फील्ड का कार्य कर सके आवेदन करने के लिए 10th पास होना व अनिवार्य है,
लोकेशन - भोपाल, रायसेन, होशंगाबाद, राजगढ़, सीहोर, विदिशा, पद - 08
प्राथमिकता - सोशल वर्क का अनुभव व स्वयं की बाइक
पद - 08-प्राथमिकता – सोशल वर्क का अनुभव व स्वयं की बाइक
- अपना बायोडाटा नीचे दी गयी मेल आईडी के माध्यम से भेजे साक्षात्कार सम्बंधित जानकारी आपको कॉल करके दी जाएगी
- बायोडाटा जमा करने की अंतिम तिथि 25-07-2024 है !

Gmail ID - bhopalcsc@gsnpplus.org
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे।

बालाप्रसाद दांगी जी परियोजना संचालक
लोकेश मैथिल परियोजना समन्वयक
भोपाल नेटवर्क ऑफ़ पीपल लिविंग विथ एच.आई.वी/एड्स सोसाइटी
Mo – 9713524654 , 6267646549

पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन शनिवार 20 से फिर शुरू

इंदौर। पश्चिम रेलवे ने यात्रियों की माँग व उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन फिर शुरू करने का निर्णय लिया है। यह ट्रेन 20 जुलाई से प्रति शनिवार एवं रविवार को चलेगी।

वरिष्ठ जन संपर्क अधिकारी के अनुसार ट्रेन संख्या 52965 पातालपानी-कालाकुंड हेरिटेज ट्रेन 11.05 बजे पातालपानी से चलकर 13.05 बजे कालाकुंड पहुँचेगी तथा वापसी में ट्रेन संख्या 52966 कालाकुंड-पातालपानी हेरिटेज ट्रेन कालाकुंड से 15.34 बजे चलकर 16.30 बजे पातालपानी पहुँचेगी। इस ट्रेन में दो एसी चेयरकार ष्ट1 व ष्ट2 एवं तीन नॉन एसी चेयर कार ष्ट1, ष्ट2 व ष्ट3 रहेंगे। इस हेरिटेज ट्रेन में आने-जाने के लिए अलग-अलग टिकट लेना होगा। इस ट्रेन के एक दिशा के लिए एसी चेयर कार का किराया रु 265/- एवं नॉन एसी चेयर कार का किराया रू 20/- प्रति टिकट प्रति व्यक्ति रहेगा ।

पायनियर एम्ब्रॉयडमिटेड लिमिटेड कढ़ाई, लेस और विशेष पॉलिएस्टर फिलामेंट यार्न में अग्रणी

मुंबई , एजेंसी। पायनियर एम्ब्रॉयडरीज़ लिमिटेड (बीएसई 514300, एनएसई) एम्ब्रॉयडरी, टॉर्चन/बॉबिन लेसेस, रास्केल लेसेस और अन्य गारमेंट एक्सेसरीज़ के सबसे बड़े निर्माता-निर्यातक में से एक है। इससे पहले, कंपनी ने 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए मज़बूत आय दर्ज की थी। फाइनेंशियल ईयर के दौरान, दोनों व्यवसाय - स्पेशलाइज्ड पॉलिएस्टर फिलामेंट यार्न और एम्ब्रॉयडरी और लेसेस - लगभग समान रूप से बढ़े, जिसमें कंपनी के राजस्व के लिए पूर्व का योगदान लगभग 84 प्रतिशत था। दोनों व्यवसायों में पिछले वर्ष की तुलना में एबिटा : और मार्जिन में भी वृद्धि देखी गई और पायनियर एम्ब्रॉयडरीज़ लिमिटेड का एबिटा 153.1 मिलियन रुपये से 72 प्रतिशत बढ़कर लगभग 263.9 मिलियन रुपये हो गया। जैसे ही वर्ष के दौरान दोनों व्यवसायों में एक्सपेंशन कपैसिटी पूरी हुई, फाइनेंशियल ईयर 2023-24 में इंट्रेस्ट कॉस्ट में पर्याप्त वृद्धि देखी गई, जो 36.4 मिलियन रुपये से बढ़कर लगभग 92.6 मिलियन रुपये हो गई। वर्ष के दौरान डेप्रिसिएशन (मूल्यह्रास) भी लगभग 48 प्रतिशत बढ़कर लगभग 125.4 मिलियन रुपये हो गया। इन दोनों कॉस्ट आइटम्स ने कर के पश्चात लाभ और असाधारण मदों में वृद्धि को सीमित कर दिया, जो 32.1 मिलियन रुपये से बढ़कर लगभग 45.8 मिलियन रुपये ही हो गया।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और छत्तीसगढ़ सरकार ने एसएमई आईपीओ पर एक इंटरैक्टिव कार्यशाला का किया आयोजन

मुंबई एजेंसी। छत्तीसगढ़ सरकार और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड ने 12 जुलाई 2024 को रायपुर में एसएमई आईपीओ ङ्क एसएमई के लिए फंड जुटाने का आशाजनक मार्ग विषय पर एक इंटरैक्टिव कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ राज्य के एसएमई प्रमोटरों के चुनिंदा समूह ने भाग लिया। छत्तीसगढ़ सरकार के श्रम एवं वाणिज्य मंत्री श्री लखन लाल देवांगन ने कहा, छत्तीसगढ़ सरकार के माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में हम अपने राज्य में एमएसएमई क्षेत्र को विकसित करने और सुविधा प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। आज हमने अपने राज्य के एमएसएमई को विकास के अवसरों के लिए पूंजी बाजार का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करने और समर्थन देने के लिए नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के साथ रायपुर में एसएमई आईपीओ पर एक इंटरैक्टिव कार्यशाला आयोजित की। एनएसई इमर्ज प्लेटफॉर्म पर लिस्टिंग से हमारे राज्य के एमएसएमई को वैश्विक स्तर पर वांछित दृश्यता और विश्वसनीयता मिलेगी। हम एमएसएमई को फंड जुटाने की प्रक्रिया और स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टिंग के लाभों को समझने में मदद करने के लिए सुविधा प्रदान करेंगे।

महिन्द्रा युनिवर्सिटी ने स्कूल ऑफ डिज़ाइन इन्नोवेशन प्रारंभ किया

नई दिल्ली/ हैदराबाद, एजेंसी। महिन्द्रा यूनिवर्सिटी ने हैदराबाद में स्कूल ऑफ डिज़ाइन इन्नोवेशन शुरू करने की घोषणा की। इस स्कूल ऑफ डिज़ाइन इन्नोवेशन ने इटली के टोरिनो स्थित पिनिनफैरिना डिज़ाइन एकैडमी और शेनॉय इन्नोवेशन स्टूडियो आईडीसी आईआईटीबी के साथ साझीदारी की है और यह विद्यार्थियों को भारत और पूरे विश्व से डिज़ाइन के दिग्गजों से मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध कराएगा। प्रथम अकादमिक सत्र, बैचलर्स प्रोग्राम इन डिज़ाइन के साथ 15 अगस्त, 2024 को प्रारंभ होगा।

अनूठे ढंग से तैयार यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को स्केचिंग, इंजीनियरिंग लैब्स, प्रोटोटाइपिंग और डिजिटल टूल्स सहित डिजाइन की बुनियादी चीज़ों और तीन क्षेत्रों- इंडस्ट्रियल डिज़ाइन, कम्युनिकेशन डिज़ाइन और एक्सपीरिएंस डिज़ाइन में से किसी एक में विशेषज्ञता का मिश्रण उपलब्ध कराएगा और साथ ही एआर, वीआर और एआई जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित एकीकृत पाठ्यक्रम का लाभ देगा। यह कोर्स एक कैप्सटन प्रोजेक्ट के साथ पूरा होगा जिसका लक्ष्य इस उद्योग में वास्तविक दुनिया की चुनौतियों को हल करना है और यह उन विद्यार्थियों की विशेषज्ञता के लिए आधार होगा।

स्पेसेस बाय वेलस्पन ने दिखाई भोपाल की बेस्ट डीलरशिप्स

भोपाल। स्पेसेस बाय वेलस्पन ने भोपाल में स्थित अपने शीर्ष डीलरशिप स्टोर्स, दानवी इंटरप्राइजेस(शेड्स एंड स्प्रेड्स) को मिली शानदार पहचान का जोरदार स्वागत किया। यह सम्मान दानवी इंटरप्राइजेस(शेड्स एंड स्प्रेड्स) के शानदार प्रदर्शन और अटूट समर्पण को दिखाता है। यह डालरशिप्स स्पेसेस ब्रांड के एक अभिन्न अंग रहा है, जिसने असाधारण प्रतिबद्धता और वफादारी का प्रदर्शन किया है, जिसने वास्तव में ब्रांड की सफलता और विकास को आगे बढ़ाया है।

प्रीमियम होम टेक्सटाइल केटेगरी में एक मार्केट लीडर, स्पेसेस बाय वेलस्पन, इनोवेटिव और प्रीमियम प्रोडक्ट की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है जो स्टाइल और फंक्शन दोनों पर ध्यान केंद्रित करती है। इनोवेशन और ग्राहक के प्रति इसके ध्यान के कारण, यह ब्रांड कम्फर्ट और रिलेक्सेशन का पर्याय बन गया है। इसका उद्देश्य सर्वोत्तम आराम और विश्राम प्रदान करना है। ब्रांड की पेशकश, हाइग्रो कॉटन बेडशीट 100 प्रतिशत कॉटन से एक इनोवेटिव मैन्यूफैक्चरिंग प्रोसेस से बनाई जाती हैं। यह इनोवेटिव प्रोसेस कपड़े को नरम, हवादार और तापमान को +/- 2 डिग्री तक नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है, जो एक आरामदायक और सुखद नींद का अनुभव प्रदान करती है।

दानवी इंटरप्राइजेस(शेड्सएंडस्प्रेड्स) के विपिन गेहानी ने कहा, हम शीतल फर्निशिंग में पिछले 5 वर्षों से स्पेसेस ब्रांड का एक अभिन्न अंग बनकर खुश हैं। हमें सर्वश्रेष्ठ डीलरशिप स्टोरों में से एक के रूप में पहचाने जाने और वेस्ट जोन मे सेल्स में नंबर होने पर गर्व है। हम स्पेसेस बाय वेलस्पन के साथ अपनी मजबूत साझेदारी को जारी रखने के लिए उत्सुक हैं।

31 जुलाई के बाद आईटीआर फाइल करने पर 5 हजार जुर्माना के साथ होंगे कई नुकसान

ढ्ढञ्जक्र-भारत में हर वह व्यक्ति जिनकी इनकम, इनकम टैक्स दायरें में आती है उन्हें आईटीआर फाइल करना होता है. आमतौर पर आयकर विभाग आपकी आमदनी पर टैक्स वसूली करता है. आपकी ओर से अपनी आमदनी पर दिए गए टैक्स का इस्तेमाल देश के विकास में किया जाता है. इस वर्ष 2023-24 में इनकम टैक्स रिटर्न दायर करने की अंतिम तारीख 31 जुलाई 2024 रखी गई. अब तक करीब देश में 5.92 लाख लोग इनकम टैक्स रिटर्न भर चुके. लेकिन अभी भी कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपना इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं किया है. अगर आप सरकार की दी गई समय सीमा को पार कर देते हैं तो आपके ऊपर जुर्माना लग सकता है. भारत में अधिकतर टैक्स पेयर यह सोचते हैं कि देर से रिटर्न भरने पर सिर्फ उन्हें पेनल्टी के तौर पर कुछ रक्म देने पड़ेंगे. लेकिन इसके और भी बहुत से नुकसान है, तो आइए समझते हैं आईटीआर फाइल न करने के प्रभाव.

कितना देना होगा जुर्माना

जुर्माना लगने की राशि आपकी कर योग आय पर निर्भर करती है. अगर आपके वित्त वर्ष 2023 24 के कुल कर आय 5 लाख से अधिक है, तो आपको अधिकतम 5000 तक जुर्माना भरना पड़ सकता है. लेकिन अगर आपकी कुल कर आय 5 लाख या उससे कम है ,तो आपको जुर्माना राशि केवल हजार रूपये तक लगती है. यह जुर्माना आपको सरकार की तय सीमा पार करने के बाद लगती है. यह जुर्माना 31 दिसंबर के बाद आईटीआर फाइल करने पर और भी बढ़ सकता है. और आपको 10 हजार रुपये जुर्माना देना होगा. जुर्माना कुछ खास स्थितियों में माफ किया जाता है.

जुर्माना के साथ होंगे यह नुकसान

आप अपने घाटे को कैरी फारवर्ड भी नहीं कर पाएंगे. यानी अगर आपने अपना रिटर्न समय पर फाइल नहीं किया है तो उस वित्त वर्ष के दौरान हुए घाटे को आप अगले वित वर्ष में कैरी फॉरवर्ड नहीं कर सकेंगे. जिसके कारण आपकी अगले साल की टैक्स देनदारी बढ़ जाएगी. जिसके कारण आपको अच्छे खासे रकम गवाने पड़ सकते हैं.

कुछ छूट आपको समय पर रिटर्न फाइल करने पर ही मिलती है. जिसके कारण अगर आप अपना रिटर्न समय पर फाइल नहीं करते हैं तो आपको अपने टैक्स पर कोई छूट नहीं मिल पाएंगे. इसके अलावा देर से रिटर्न फाइल करने पर आपके सेक्सन 10a, 10b, 80-IA, 80-IB, 80-IC ,80-ID और 80-IE के तहत मिलने वाली सभी तरह की डिडक्शंस और एक्सेंप्शंस का लाभ नहीं मिल पाएगा.

किन मामलों में ITR दाखिल करना जरूरी

निश्चिति लिमिट से अधिक बैंक डिपॉजिट- अगर एक या उससे अधिक सेविंग अकाउंट में बैंक में सालाना 50 लाख रुपये से अधिक डिपॉजिट है और एक या उससे अधिक करंट अकाउंट में सालाना 1 करोड़ से अधिक रुपये डिपॉजिट हैं, तो आयकर रिटर्न (ढ्ढञ्जक्र) दाखिल करना जरूरी है.

प्रोफेशनल इनकम 10 लाख से अधिक- अगर आपके प्रोफेशन से आमदनी 10 लाख से अधिक है, तो आपके लिए आयकर रिटर्न (ढ्ढञ्जक्र) दाखिल करना जरूरी है.

1 लाख से अधिक बिजली बिल- अगर आप साल में 1 लाख रुपये से अधिक के बिजली बिल का भुगतान करते हैं, तो आयकर रिटर्न (ढ्ढञ्जक्र) दाखिल करना आवश्यक है.

25 हजार से अधिक टीडीएस-टीसीएस कटौती- अगर आपका टीडीएस या टीसीएस 25 हजार रुपये से अधिक कटता है या वरिष्ठ नागरिकों का टीडीएस 50 हजार से अधिक कटता है, तो ऐसी स्थिति में आयकर रिटर्न (ढ्ढञ्जक्र) दाखिल करना जरूरी हो जाता है.

इंदौर बना प्रदेश का पहला शहर, जहाँ ध्वनि प्रदूषण की होगी निगरानी

इंदौर। अब शहर में वायु प्रदूषण को लेकर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है, जहां चार विभिन्न इलाकों में रियल टाइम ध्वनि प्रदूषण मॉनिटरिंग सिस्टम लगाए जा रहे हैं। ये सिस्टम पूरे दिन इलाके के ध्वनि प्रदूषण के संदर्भ में आंकड़े जुटाएंगे और उन्हें एक पोर्टल पर अपडेट करेंगे। इस पहल के तहत, एमवाय अस्पताल, सांवेर रोड औद्योगिक क्षेत्र, विजय नगर और स्मार्ट सिटी ऑफिस में यह सिस्टम स्थापित किया जा रहा है।

अगस्त के पहले सप्ताह से इंदौर में ध्वनि प्रदूषण मॉनिटरिंग सिस्टम कार्यान्वित होने की योजना है, जिससे यह प्रदेश का पहला शहर बनेगा जहां ऐसे चार सिस्टम लगाए जाएंगे। विशेषज्ञों के अनुसार, ध्वनि प्रदूषण सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है और यह स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है, जैसे कि गुस्सा, चिढ़चिढ़ापन, अनिद्रा, और बीपी के रिस्क को बढ़ा सकता है। इंदौर में इन समस्याओं के संदर्भ में पिछले तीन साल में मरीजों की संख्या दोगुनी हो गई है, जिसके कारण इस पर अब ध्यान देने की योजना बनाई जा रही है।

वैज्ञानिक अतुल कोटिया ने बताया कि इंदौर प्रदेश का पहला शहर होगा, जहां चार स्थानों पर ध्वनि प्रदूषण मापक मंडल के चार लोगों की टीम महीने में एक बार 24 घंटे मैनुअल मॉनिटरिंग करती है। नई व्यवस्था के बाद भी यह प्रक्रिया अपना काम जारी रखेगी। इस उपयुक्ति के तहत, ध्वनि प्रदूषण को मापने के लिए सांवेर रोड औद्योगिक क्षेत्र में स्थित इंडो जर्मन टूल रूम, विजय नगर में प्रदूषण मंडल कार्यालय, और स्मार्ट सिटी के नेहरू पार्क कार्यालय में ये सिस्टम लगाए जाएंगे।

संवेदनशील और रिहायशी इलाकों में 25 फीसदी अधिक शोर ध्वनि प्रदूषण को मापने वाली टीम से जुड़े राकेश सिंह बघेल और आशीष राजोरिया ने बताया कि शहर के इन इलाकों में औसतन 20 से 25 फीसदी अधिक शोर की समस्या है। उन्होंने यह भी बताया कि औद्योगिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में तय मानक से 18 से 20 फीसदी अधिक शोर पाया जाता है। संवेदनशील इलाकों में शहर के सभी अस्पताल, हाईकोर्ट, कलेक्टर भवन, और शैक्षणिक संस्थान शामिल हैं, जहां विशेष सुधार की आवश्यकता है।

बेहतर प्लानिंग और आधुनिक टेक्नोलॉजी से संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित होता है: उप-मुख्यमंत्री

भोपाल। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा है कि बेहतर प्लानिंग और आधुनिक टेक्नोलॉजी के उपयोग से सुनियोजित, संवहनीय विकास होता है साथ ही संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित होता है। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आर्थिक महाशक्ति बन गया है। देश को सुनियोजित रूप से आगे बढ़ने में सभी वर्गों के प्रबुद्ध जनों का योगदान अहम है। हम सब मिलकर भारत को विश्वगुरु बनायेंगे। उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने भोपाल के होटल ताज में कंसल्टिंग इंजीनियर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया (सीईएआई) द्वारा ÷अर्बन मोबिलिटी एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी÷ विषय पर आयोजित सेमिनार का शुभारंभ किया।

उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि अधोसंरचना विकास के साथ कृषि और औद्योगिक क्रांति से नागरिकों की क्रय क्षमता में वृद्धि हुई है, जिससे आर्थिक गतिविधियों में निरंतर विस्तार हो रहा है। पर्यावरण संरक्षण को केंद्रित रख योजनाबद्ध रूप से विकास किया जा रहा है ताकि आगामी पीढ़ियाँ संरक्षित रहें। उप-मुख्यमंत्री ने सीईएआई द्वारा शहरों के सुनियोजित विकास के संदर्भ में आयोजित सेमिनार की सराहना करते हुए कहा कि निश्चित रूप से इस सेमिनार से महत्वपूर्ण तथ्य सामने आयेंगे जिनका उपयोग सरकार द्वारा दूरगामी विकास की योजना में किया जायेगा। सेमिनार में सांसद भोपाल श्री आलोक शर्मा, सीईएआई के प्रेसिडेंट श्री आरएस शर्मा सहित सीईएआई के पदाधिकारी, विभिन्न कंपनियों के प्रतिनिधि, शोधकर्ता और छात्र उपस्थित थे।सांसद श्री शर्मा ने कहा कि जनसंख्या का दबाव और बढ़ती औद्योगिक गतिविधियों से शहर के इंफ्रास्ट्रक्चर में दबाव बढ़ता है, इस दबाव को सीमा में रखने के लिए आधुनिक तकनीकी का युक्तिपूर्ण रूप से उपयोग अहम है। इस दिशा में ट्रांसपोर्ट प्लानिंग बहुत महत्वपूर्ण विषय है, उन्होंने कहा कि सेमिनार में प्रबुद्धजनों के मंथन से निकले निष्कर्ष का उपयोग शहरी विकास में किया जायेगा।

जेएसडब्ल्यू ग्रुप ने कामयाबी और नाकामी से परे एथलीटों के अथक परिश्रम का जश्न मनाने के लिए फिर से जीवंत किया कैम्पेन

मुंबई एजेंसी। पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों के करीब आने के साथ जेएसडब्ल्यू ग्रुप ने अपने लंबे समय से चल रहे और बेहद सफल कैम्पेन - रुकना नहीं है - को एक नई फिल्म के लॉन्च के साथ फिर से जीवंत कर दिया है। यह कैम्पेन उन एथलीटों पर आधारित है जो अब से दो सप्ताह से भी कम समय में दुनिया के सबसे बड़े खेल आयोजन के दौरान भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।

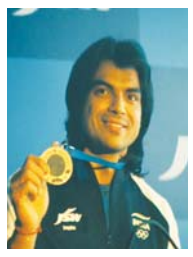

भारत के गोल्डन बॉय और मौजूदा ओलंपिक चौंपियन नीरज चोपड़ा द्वारा बुधवार को लॉन्च किए गए इस अभियान में डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए एक लंबा संस्करण और खेलों से पहले और उसके दौरान लोकप्रिय चैनलों पर प्रसारित होने वाला एक छोटा टीवी विज्ञापन शामिल है।

पिछले एक दशक में भारत में ओलंपिक आंदोलन का नेतृत्व करने वाले जेएसडब्ल्यू ग्रुप ने हमेशा खेलों को आधार बनाकर आकर्षक अभियान चलाए हैं और पेरिस ओलंपिक की तैयारियां भी इससे अलग नहीं रही हैं। यह फ़िल्म एथलीटों की तैयारी को उजागर करने के साथ-साथ खेलों में जीत न पाने के भावनात्मक परिणामों को भी दर्शाती है। यह एथलीट के प्रदर्शन के बारे में लोगों की धारणा को दर्शाती है - अगर वे जीतते हैं तो जश्न और प्रसिद्धि, और अगर वे हारते हैं तो शर्मिंदगी और आलोचना। और इस प्रक्रिया में, यह कैम्पेन इस बात पर ज़ोर देता है कि एथलीटों को किसी भी परिणाम से विचलित नहीं होना चाहिए, जल्दी से अभ्यास पर लौटना चाहिए और अपनी अगली चुनौती के लिए तैयारी करनी चाहिए। सरल लेकिन विचारोत्तेजक, यह फ़िल्म एथलीटों के मजबूत संकल्प और चाहे कुछ भी हो जाए, रुकने से इन्कार करने के जज्बे को रेखांकित करती है। ओगिल्वी द्वारा परिकल्पित और गुड मॉर्निंग फ़िल्म्स के शशांक चतुर्वेदी द्वारा निर्देशित, इसमें विभिन्न ओलंपिक विषयों के जाने-माने और उभरते हुए एथलीटों को जोड़ा गया है, जिनमें नीरज चोपड़ा, निशांत देव, प्रीति पवार, मनु भाकर, मनिका बत्रा और मुहम्मद अनस शामिल हैं। सेलिब्रिटी फिल्म स्टार अजय देवगन ने इस फिल्म को अपनी आवाज दी है।

अंतर्राष्ट्रीय चंद्रमा दिवस- वैज्ञानिक दृष्टिकोण से चंद्रमा गुरुत्वाकर्षण शक्ति और सारी पृथ्वी के जल तत्व को नियंत्रित करता है

मानव का मन और भावनायें चंद्रमा से प्रभावित होती है - योग गुरु महेश अग्रवाल

आदर्श योग आध्यात्मिक केंद्र स्वर्ण जयंती पार्क कोलार रोड़ भोपाल के योग गुरु महेश अग्रवाल ने बताया कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से चंद्रमा गुरुत्वाकर्षण शक्ति और सारी पृथ्वी के जल तत्त्व को नियंत्रित करता है। मानव का मन और भावनायें चंद्रमा से प्रभावित होती है। चंद्रयान -3 के सफलता से प्राप्त निष्कर्ष एवं खोज का लाभ पूरे विश्व समुदाय को होगा -

योग गुरु अग्रवाल ने बताया कि चन्द्रमा मन का अधिष्ठाता है। मन की कल्पनाशीलता चन्द्रमा की स्थिति से प्रभावित होती है। ब्रह्मांड में जितने भी ग्रह हैं, उन सभी का व्यक्ति के जीवन पर विशेष और अत्यंत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मानव ने जब से काल चिंतन का आरंभ किया, उसी समय से चन्द्रमा उसके लिए अपने घटने-बढ़ने की प्रक्रिया के कारण प्रकृति का अखंड और निर्विवाद पंचांग रहा है। संसार के सभी धर्मों के धर्मग्रंथों में प्रत्येक काल में चन्द्रमा की तिथियों के अनुसार ही धार्मिक विधि रचने का उल्लेख पाया जाता है। व्यक्ति के चरित्र के सूक्ष्म रूप, विशिष्ट-गुण, उसकी प्रतिभा, भावनाओं, प्रवृत्तियों, योग्यताओं तथा भावनात्मक प्रवृत्ति आदि का ज्ञान जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति से मालूम हो जाता है। समुद्र में उत्पन्न होने वाले ज्वार-भाटे का मूल कारण चन्द्रमा की स्थिति है। पूर्णिमा का प्रभाव पशु-पक्षियों और रेंगने वाले कीड़ों पर ही नहीं पड़ता, बल्कि उन्मादग्रस्त मनुष्यों पर भी पड़ता है। वे सभी अन्य दिनों की अपेक्षा पूर्णिमा के दिन ही अधिक उत्तेजित और अव्यवस्थित दिखाई देते हैं। संसार के जितने की ऊष्ण प्रदेश हैं, वहां को लोगों को पूर्णिमा की रात को चंद्रमा की चांदनी में सोने पर विचित्र स्वप्न दिखाई देते है। इस प्रकार के विचित्र स्वप्न अन्य किसी दिन में दिखाई नहीं देते। यही नहीं, स्त्रियों के मासिक धर्म और चंद्रमा के 28 दिवस चक्र के बीच सीधा संबंध है। चंद्रमा के घटने-बढ़ने का व्यक्ति के मस्तिष्क के साथ परंपरागत संबंध होता है। शुक्ल पक्ष में मनुष्य का मस्तिष्क जागरूक होता है। इन दिनों उसे नींद भी अच्छी आती है। हम अपने जीवन में चंद्रमा के प्रभाव का स्पष्ट अनुभव करते हैं। चंद्रमा का सृष्टि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संपूर्ण प्रकृति, ही वह जड़ हो या चेतन, उसमें धड़कन होती है, स्पंदन होता है और वह नित्य परिवर्तनशील है। चन्द्रमा का अपनी तिथियों के अनुसार विश्व के जड़ और चेतन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जो मछुआरे नाव लेकर मछलियां पकड़ने जाते हैं, वे चंद्रमा के इस प्रभाव से भलीभांति परिचित होते हैं।

चन्द्रमा की राशि कर्क जलतत्व है और स्वयं चंद्र भी जलतत्व कारक होकर मनुष्य की भावना का कारक है। शरीर में सबसे अधिक मात्रा जल की है इसलिए मन और बुद्धि दोनों चन्द्रमा से प्रभावित होती है। सांस लेने के लिए हमारे पास दो नासिका छिद्र हैं। योग में इसे नाड़ी कहा जाता है, जिसमें दायीं नासिका को सूर्य नाड़ी और बायीं नासिका को चंद्र नाड़ी के नाम से जाना जाता है। गर्मियों में जरूरी है चंद्रभेदन प्राणायाम - पेट की गर्मी, खट्टी डकारें व मुंह के छाले दूर होते हैं। इसे प्रतिदिन करने से रक्त शुद्ध होता है और ये प्राणायाम त्वचा के रोगों में भी लाभकारी है। क्योंकि इसको करने से चन्द्र नाड़ी क्रियाशील हो जाती है, जिससे उच्च रक्तचाप, चिड़चिड़ेपन, अनिद्रा व तनाव को दूर किया जा सकता है।योगियों का कहना है कि चंद्र नाड़ी से श्वास-प्रश्वास प्रवाहित होने पर वह मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करता है। चंद्र नाड़ी से ऋणात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है। जब सूर्य नाड़ी से श्वास-प्रश्वास प्रवाहित होता है तो शरीर को उष्मा प्राप्त होती है यानी गर्मी पैदा होती है। सूर्य नाड़ी से धनात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है। हर साल 20 जुलाई को चंद्रमा दिवस मनाया जाता है। इस दिन को इसलिए मनाया जाता है क्योंकि चंद्रमा पर 20 जुलाई साल 1969 को मनुष्य ने पहली बार चंद्रमा पर कदम रखा था। नासा द्वारा चंद्रमा पर मनुष्य के पहली बार कदम रखने को आज तक की सबसे बड़ी तकनीकी उपलब्धि माना जाता है। इसलिए इस दिन को चंद्रमा दिवस के तौर पर मनाया जाता है। 20 जुलाई 1969 को 20-17 बजे अपोलो 11 पृथ्वी के एकमात्र सेटेलाइट पर उतरा था। और तभी से इस दिन को बहुत उत्साह के साथ सेलिब्रेट किया जाता है, क्योंकि इस दिन के बाद से सभी लोगों को यह विश्वास हो गया था, कि मनुष्य पूरे ब्रह्मांड की यात्रा करने में सक्षम है।

मध्य प्रदेश आज नार्मदीय भवन में मध्य प्रदेश सेवानिवृत्ति डिप्लोमा इंजीनियरों की त्रैमासिक बैठक प्रांत अध्यक्ष प्रांत अध्यक्ष श्री एस कंजागावकर के नेतृत्व में के नेतृत्व में आयोजित की गई इस बैठक में धारा 46 धारा / 6/ को समाप्त करने के संबंध में आयोजित की गई इस कार्यक्रम में प्रदेश भर से सेवानिवृत्ति डिप्लोमा इंजीनियर शामिल हुए

टैक्स फाइलिंग में आया बड़ा बदलाव, भारत का पहला अनूठा मोबाइल ऐप किया लॉन्च

इंदौर। : स्कोरिडोव ने अपना नया मायआईटीरिटर्न मोबाइल ऐप लॉन्च करने की घोषणा की है। इस ऐप को भारतीयों के इनकम टैक्स रिटर्न भरने के तरीके को सरल व आसान बनाने और इस प्रक्रिया में बड़ा बदलाव लाने के लिए डिजाइन किया गया है। यह अभिनव ऐप भारत में अपनी तरह का पहला ऐप है, जो यूजर्स को किसी भी दस्तावेज को अपलोड किए बिना सीधे अपने स्मार्टफोन से अपना टैक्स रिटर्न फाइल करने की सुविधा देता है और रिटर्न फाइल करने की पूरी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करके इसे पहले की तुलना में तेज और अधिक कुशल बनाता है।

स्कोरिडोव के फाउंडर साकार यादव ने नए ऐप के बारे में बताते हुए कहा, ÷भारत में हमें इस गेम-चेंजिंग ऐप को पेश करते हुए खुशी हो रही है। मायआईटीरिटर्न में, हमारा मिशन हमेशा टैक्स फाइलिंग को आसान, सुरक्षित और कुशल बनाना रहा है। यह ऐप उस मिशन का प्रमाण है, जो एक अनूठा सॉल्यूशंस मुहैया कराते हुए यूजर्स के डेटा को सुरक्षित रखता है और उन्हें अधिकतम संभव रिफंड सुनिश्चित करते हुए पूरी प्रक्रिया को सरल बनाता है। हमारा मानना है कि यह ऐप आने वाले दिनों में भारतीयों के टैक्स भरने के तरीके में बड़ा बदलाव लेकर आएगा।÷

मायआईटीरिटर्न ऐप टैक्स रिटर्न भरने के तरीकों में बदलाव ला रहा है। मायआईटीरिटर्न ऐप को उपभोक्ता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जो कागजी जरूरतों को खत्म करते हुए टैक्स फाइलिंग को सभी के लिए सुलभ बनाता है। स्मार्टफोन पर बस कुछ ही टैप से कोई भी व्यक्ति अपने घर या ऑफिस से आराम से टैक्स रिटर्न पूरा कर सकता है। ऐप यूजर्स के अनुकूल है और स्पष्ट, नियमों के पालन में आसान निर्देशों के साथ प्रत्येक चरण में यूजर्स की मदद करता है। चाहे व्यक्ति वेतनभोगी कर्मचारी हो या अपने व्यवसाय वाले, उन सभी के लिए यह प्रक्रिया आसान और सरल है। इसके साथ सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि टैक्स रिटर्न फाइल करने के लिए किसी तरह के डॉक्यूमेंट्स या दस्तावेज को अपलोड करने की जरूरत नहीं है। ऐप सुरक्षित रूप से सभी आवश्यक जानकारी सीधे सरकारी डेटाबेस से प्राप्त करता है, जिससे टैक्स फाइलिंग की प्रक्रिया में किसी दस्तावेज की जरूरत नहीं होती है और इससे समय और कोशिशों दोनों की बचत होती है। मायआईटीरिटर्न का बैकएंड यह सुनिश्चित करता है कि सभी योग्य कटौतियों और छूट की पहचान कर करदाता को उसका पूरा रिफंड वापस मिले।

सी.एम.ओ विहिन है दमुआ

नगर पालिका और हर्रई नगर परिषद

अमरवाड़ा/हर्रई। नगर परिषद की सी.एम.ओ पूजा बुनकर को हर्रई से हटाकर दमुआ स्थानांतरित किया गया। पूजा बुनकर के स्थान पर राजेश बाथम को अमरवाड़ा के अलावा हर्रई का चार्ज दिया था। राजेश बाथम ने अभी तक चार्ज नहीं लिया है। पूजा बुनकर को दमुआ नगर परिषद द्वारा चार्ज नहीं दिया जा रहा है। वे लगभग 15 से से दमुआ का चक्कर लगा रही है। बताया जाता है कि हर्रई और दमुआ में नये सी.एम.ओ की पदस्थापना होने वाली है। पूजा बुनकर को कमलेश शाह की शिकायत पर हटाया गया था।

शरद पाठक बने स्टार परफ़ॉर्मर

यूज़ 24 के कार्यक्रम विजनरीज़ऑफ मध्यप्रदेश में किया गया सम्मानित

छिंदवाड़ा। देश के सुप्रसिद्ध चेनल न्यूज़24 के छिंदवाड़ा प्रतिनिधि शरद पाठक को भोपाल में न्यूज़ 24, दैनिक जागरण और बिग एफ एम द्वारा आयोजित कार्यक्रम विजनरिज ऑफ मध्य प्रदेश में चेनल के स्टार परफ़ॉर्मर का अवार्ड देकर सम्मानित किया गया । शरद पाठक पहले भी बेस्ट परफ़ॉर्मर का अवार्ड हासिल कर चुके हैं । न्यूज़ 24 एवम लल्लूराम द्वारा हर वर्ष ये सालाना कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिनमे वार्षिक परफॉर्मेंस के आधार पर संवाददाताओं को अवार्ड दिया जाता है । इस कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न विभागों के मन्त्रीगण एवम प्रदेश के सुपरिचित व्यक्तित्व भी शामिल हुए जिन्होंने मध्यप्रदेश के विकास पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई ।

निगम आयुक्त ने कियापौधरोपण

छिंदवाड़ा। मुख्यमंत्री द्वारा दिये गए निर्देश एवं

कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह के द्वारा दिये गए निर्देश पर नगर पालिक निगम छिन्दवाडा के तत्वाधान में एक पौधा मां के नाम कार्यक्रम निगम कर्मियों हरित क्रांति के शपथ दिलाई। साथ ही इस अवसर पर मु य अतिथि के रूप में उपस्थित नगर निगम कमिश्नर चंद्र प्रकाश राय एवं अधीक्षक मोहन नागदेव एवं कर्मचारी नरेश फरकसे की उपस्थिति में एक पौधा माँ के नाम अभियान के निगम द्वारा पौधारोपण किया जिसमें फालदार छायादार औषधि वाले पौधेरोपित किया गये। पौधारोपण कार्यक्रम के पूर्व निगम कमीश्नर एवं अन्य ने अपने अपने विचार व्यक्त किया गया।उक्त कार्यक्रम में नगर निगम के कर्मचारी एवं अधिकारीगण द्वारा पेड़ लगाए गए नगर निगम कमिश्नर चंद्र प्रकाश राय एवं अधीक्षक मोहन नागदेव एवं कर्मचारी नरेश फरकसे सहित निगम के कर्मचारी उपस्थित रहे।।

जिले में 97 प्रतिशत बोनी हो चुकी

कृषि एवं सह संबद्ध विभागों की समीक्षा बैठक

छिन्दवाड़ा। कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में आज कृषि एवं कृषि सह संबध्द विभागों की समीक्षा बैठक कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित की गई। जिसमें विभागवार विभिन्न योजनाओं में लक्ष्यपूर्ति की समीक्षा के साथ ही जिले में खाद एवं बीज की उपलब्धता और खाद्यान्न वितरण की भी समीक्षा की गई और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में कृषि वैज्ञानिक, उप संचालक कृषि, उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं, महाप्रबंधक जिला केंद्रीय सहकारी बैंक, उपायुक्त सहकारिता, जिला आपूर्ति अधिकारी सहित उद्यानिकी, वेयर हाउस, नागरिक आपूर्ति निगम व सभी संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में सर्वप्रथम किसान कल्याण तथा कृषि विभाग के अंतर्गत वर्तमान के कार्यों एवं गतिविधियों से उप संचालक कृषि जितेंद्र कुमार सिंह द्वारा अवगत कराया गया । उन्होंने बताया कि खरीफ के अंतर्गत 97 प्रतिशत की बोनी हो चुकी है, कुटकी और रामतिल की बोनी शेष रह गई है। वर्षा की जानकारी के साथ ही उर्वरक भंडारण एवं वितरण की समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री सिंह ने निर्देशित किया कि एनपीके उपयोगकर्ता किसानों के द्वारा उनके खेत में उपयोग के परिणाम की जानकारी प्राप्त करें और डीएपी के उपयोग एवं एनपीके के उपयोग का विश्लेषण प्रस्तुत करें। इसके बाद नगद विक्रय केंद्र में उर्वरकों की उपलब्धता पर चर्चा की गई। उप संचालक कृषि द्वारा जिले में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के तहत लिए गए नमूने एवं प्राप्त विश्लेषण परिणाम से अवगत कराया गया एवं जिले में नाइट्रोजन फास्फोरस पोटाश एवं अन्य माइक्रोन्यूट्रिएंट की स्थिति के बारे में बताया गया। कलेक्टर श्री सिंह ने निर्देश दिए कि किसान स्वाईल हेल्थ कार्ड के परिणामों के अनुसार उर्वरकों का उपयोग कर रहे हैं या नहीं इसका अवलोकन करें। जिले में पहली बार पैडी ट्रांसप्लांटर से धान की तैयार नर्सरी की रोपाई देलाखारी में की गई है, जिससे प्रेरित होकर अन्य किसानों द्वारा पैडी ट्रांसप्लांटर की मांग की जा रही है, जिस पर कलेक्टर श्री सिंह ने कृषि में यंत्रीकरण को बढ़ावा दिए जाने के निर्देश दिए गए। इस ग्रीष्मकालीन सीजन में जीरो टिलेज तकनीक से लगाई मूंग फसल के परिणामों पर भी चर्चा की गई।

जीरो टिलेज तकनीक के प्रति जागरूक करने के लिए किसानों के बीच सुपर सीडर एवं हैप्पी सीडर का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए। बैठक में जिले में निर्मित नाडेप टांकों पर भी चर्चा की गई और शत-प्रतिशत नाडेप टांकों में जैविक खाद तैयार कराने एवं मैदानी अमले के माध्यम से इसका व्यापक प्रचार-प्रसार कराने के निर्देश दिए, जिससे किसान व्यक्तिगत रूप से भी जैविक खाद बनाने के लिए प्रेरित हों। ग्रीष्मकालीन मूंग उपार्जन के तहत एफ.ए.क्यू.क्वालिटी का ही मूंग उपार्जन किए जाने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि आज दिनांक तक 511 किसानों द्वारा स्लॉट बुक कराया गया है एवं 78 किसानों द्वारा 1078 क्विंटल मूंग का विक्रय निर्धारित उत्पादन केंद्रों में किया गया है । कलेक्टर श्री सिंह ने निर्देश दिए कि आगामी रबी सीजन की तैयारी पूर्व से कर ली जाये, इसके लिए उच्च उत्पादक किस्मों की व्यवस्था पहले से सुनिश्चित कर लें एवं कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषि के मैदानी अमले को संपूर्ण पैकेज और प्रैक्टिस से अवगत करा दिया जाए, जिससे रबी फसल के अंतर्गत गेहूं के उत्पादन को बढ़ाया जा सके।

पशुपालन विभाग की समीक्षा करते हुए सभी योजनाओं में लक्ष्यों की शत-प्रतिशत पूर्ति के निर्देश दिए एवं बैंकों में प्रेषित प्रकरणों के अनुसार सभी पात्र हितग्राहियों को लाभ वितरण कराने के लिए निर्देशित किया। उद्यानिकी विभाग के अंतर्गत प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के तहत गतिविधियों का चयन करने एवं संबंधित विभागों के सहयोग से लक्ष्य के अनुसार पूर्ति करने के निर्देश दिए। साथ ही सभी विभागीय योजनाओं में लक्ष्य के अनुसार शत-प्रतिशत पूर्ति के निर्देश दिए गए। कलेक्टर श्री सिंह ने उद्यानिकी विभाग को ऑर्किड एवं ड्रैगन फ्रूट की खेती के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। पीडीएस खाद्यान्न के उठाव और वितरण की समीक्षा में पाया गया कि माह जुलाई का खाद्यान्न उठाव 83 प्रतिशत हुआ है, कलेक्टर ने आगामी 5 दिवसों में शत-प्रतिशत उठाव पूर्ण कर पीडीएस हितग्राहियों को खाद्यान्न का वितरण समय पर सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं। बैठक में महाप्रबंधक जिला केंद्रीय सहकारी बैंक मर्यादित श्री ए.के.जैन द्वारा बैंक की समस्त गतिविधियों से अवगत कराया गया एवं बैंक द्वारा की गई वसूली एवं वितरण राशि की जानकारी दी गई ।

राज्य में परिवहन सेवा सरकारी भी हो

गोविन्द चौरसिया

छिंदवाड़ा। म.प्र. में राज्य परिवहन निगम पुनः बनाकर बसों का संचालन किया जाना चाहिये। निश्चित ही बस माफियों के दबाव में सरकारी बस नहीं चल पा रही है।आये दिनों अखबारों में ग्रामीण क्षेत्रों में निजि खटारा बसे संचालित हो रही है, बसों में मनमाना किराया भी लिया जा रहा है। प्रदेश में आवागमन का महत्व पूर्ण साधन रेल एवं बसें है, बस आपरेटर मलाई वाली सड़कों पर बसें चलाते है, वैसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी सड़के बन गई है। बसों का संचालन आसानी से होता है, बसों में सवारी क्षमता से अधिक भरी जाती है। प्राईवेट बसों वाले लाखों रूपए कमा रहे है। किन्तु ड्राईवर-कन्डेक्टरों को वेतन सरकारी नियम से नहीं देते।

इनके अधिनस्थ जितने कर्मचारी रहते है, इनका शोषण होता है। कम्प्यूटर युग में बसों में कन्डेक्टर टिकट न देवे ऐसा हो नहीं सकता, साधन इतने बढ़ गये है कि बेईमानी हो नहीं सकती, परिवहन निगम होगा तो कर्मचारियों का पर्याप्त वेतन मिलेगा, यात्रियों को अच्छी बसों में सफर करने को मिलेगा। पहले राज्य परिवहन के कर्मचारी बसों में कम टिकट काट कर चोरी भी करते थे और वर्कशाप में नई बसों का सामान भी निकाल कर बेच देते थे। सरकार जब बसे खरीदे तो उसके प्रत्येक पार्टस में परिवहन की शील एवं नम्बर हो, जिससे किसी अन्य व्यक्ति द्वारा खरीदने पर उसे पकड़ा जा सके।

रेल्वे 75 किलो मीटर के बजाय 25 क्लिो मीटर दूरी के गांव को जोड़े

छिंदवाड़ा।। देश एवं प्रदेश के कई हिस्से ऐसे है जहां से रेल नहीं चलती इन स्थानों को शहर या मुख्य रेल लाईन से जोड़ना चाहिये। रेल मंत्रालय ने इस बजट में 75 किलो मीटर तक के क्षेत्र को जोड़ने के प्रावधान पर विचार कर रही है। रेल्वे 75 के बजाये 25 किलो मीटर क्षेत्र की योजनायें बनाये, इससे ढेर सारी नई रेल लाईन बनेगी, छोटे-छोटे गांव जुड़ेगें, रेल नेटवर्क बढेगा, डीजल एवं पेट्रोल की खपत कम होगी, जो हमारी विदेशी मुद्रा बचायेगी, रेल्वे इस पर विचार करे ।

पातालकोट को फिरोजपुर के बजाए हरिद्वार-देहरादून तक चलाये

छिंदवाड़ा। छिंदवाड़ा- दिल्ली चलने वाली पातालकोट एक्सप्रेस को रेल्वे ने फिरोजपुर तक कर दिया, जबकि छिंदवाड़ा का फिरोजपुर से कोई संबंध नहीं है। छिंदवाड़ा की जनता की मांग है कि पातालकोट को फिरोजपुर के स्थान पर हरिद्वार देहरादून चलाया जावे। पातालकोट हरिद्वार-देहरादून तक चलती है तो इससे धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन दोनों को बढावा मलेगा। हरिद्वार, ऋषिकेश में गंगा स्नान, इसके अलावा चारधाम यात्रा आसान होगी और देहरादून में प्राकृतिक पर्यटन एवं मसूरी आ आनन्द यात्री ले सकेंगे।

10 वाहनों से लिया गया 9500 रूपये का जुर्माना

छिन्दवाड़ा। कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह द्वारा दिये गये निर्देशों के परिपालन में परिवहन विभाग के जांच दल द्वारा आज छिंदवाड़ा-मोहखेड़ मार्ग में सभी वाहनों की बारीकी से जांच की गई। जिसमें सवारी बसों, ऑटो रिक्शा व सभी प्रकार के यात्री वाहनों सहित अन्य सभी छोटे-बड़े वाहनों के सभी दस्तावेजों जैसे वाहनों के परमिट, फिटनेस, बीमा, प्रदूषण प्रमाण पत्र, वैध लाइसेंस आदि की जाँच की गई। साथ ही जाँच के दौरान वाहनों में सुरक्षा संबंधी उपकरण जैसे अग्नि शमन यंत्र, फर्स्ट एड बॉक्स, आपातकालीन द्वार आदि की जांच भी की गई। जिन वाहनों में कमियां पाई गई ऐसे वाहनों पर चालानी कार्यवाही की गई । अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी मनोज तेहनगुरिया ने बताया कि छिंदवाड़ा-मोहखेड़ मार्ग में वाहनों की चैकिंग की जानकारी मिलने पर वाहन चालकों में हड़कंप मच गया और उन्होंने अपने रास्ते को बदल लिया। मोटरयान अधिनियम का उल्लंघन करने पर 10 वाहनों से 9500 रूपये का जुर्माना लिया गया । वर्तमान में माननीय उच्च न्यायालय जबलपुर के आदेशानुसार हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के संबंध में भी जांच की जा रही है,

परासिया जुन्नारदेव में सांसद एवं विधायक का स्वागत

छिंदवाड़ा। सांसद विवेक साहू एवं अमरवाड़ा के नव निर्वाचित भाजपा विधायक कमलेश शाह का परासिया एवं जुन्नारदेव में भाजपा नेताओं ने जोरदार स्वागत किया एवं नपा परासिया, दमुआ, जुन्नारदेव, बड़कुही, चान्दामेटा एवं न्यूटन के अध्यक्षों ने आर्थिक सहायता की मांग की ।

सुश्रुत जयंती के साथ आरंभ...

नेमा क्षारसूत्र संस्थान का 5 दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर

कार्यक्रम में अध्यक्ष डॉ रश्मि नेमा के हस्ते भगवान धनवंतरि का पूजन कर नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर प्रारंभ किया गया। इस शिविर में नेमा क्षारसूत्र संस्थान द्वारा 248 व्यक्तियों की नि:शुल्क जांच कर उन्हें नि:शुल्क औषधि का वितरण किया गया। सभी अतिथि को औषधीय पौधों एवम औषधि पौधों के बीज का वितरण भी किया।

शिविर संचालक डॉ पवन नेमा ने बताया शिविर में जहां हर वर्ग के लोगों ने अपनी स्वास्थ जांच करवाई वही दूसरी ओर जिन लोगों को घातक गुदारोग हुआ था इसमें से अति गरीब मरीजों का 35 हजार तक उपचार निशुल्क किया गया। कार्यक्रम सेवा देने वाले सभी स्वास्थ सहायको का सम्मान किया। डॉ रश्मि नेमा, एम.एस. प्रसूति एवं स्त्री रोग, एनआईए जयपुर द्वारा बताया गया की मां बनने का सपना हर औरत देखती है, लेकिन स्वास्थ्य की कुछ समस्याओं के कारण उनका सपना टूट सा जाता है। एक और महिलाएं गर्भधारण करने के लिए आईवीएफ जैसे महंगे इलाज ले रही हैं, वहीं दूसरी और आयुर्वेद के जरिए प्राकृतिक रूप से गर्भधारण भी कर रही है। संस्थान मे अंतिम दिनों में मा को बस्ती थेरेपी दी जाती हैं। नेमा क्षारसूत्र संस्थान के संस्थापक डॉ पवन नेमा ने बताया कि निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में वात रोग के 68, चर्म रोग के 23, उदर रोग के 8, प्रतिश्याय के 19, अर्श के 28, उच्च रक्तचाप के 102, स्त्रीरोग के 48, मधुमेह के 50, एनीमिया के 2 और अन्य रोगों के रोगियों का उपचार कर उन्हें दवाइयों का निःशुल्क वितरण किया गया। शिविर में पंचकर्म टेक्निसिय में चाँद भालावी, ममता उइके, आकाश दोडके के द्वारा चिकित्सकीय परामर्श दिया गया।

आज होगा महाराजा का पट पूजन

छिंदवाड़ा। गणराज वेलफेयर सोसाइटी छिंदवाड़ा के

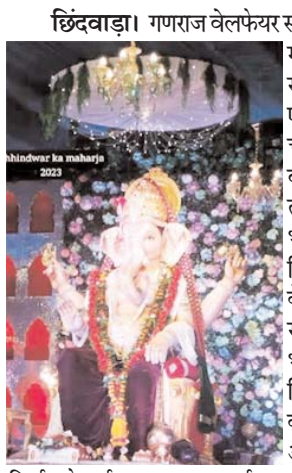

महाराजा के संस्थापक अमित राय एवं कोषाध्यक्ष डॉ चंद्रकांत विश्वकर्मा ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भगवान श्री गणेश छिंदवाड़ा के महाराजा के 13 वे वर्ष के लिए स्थापना के पूर्व भगवान श्री गणेश छिंदवाड़ा के महाराजा की दिव्य एवं भव्य आकर्षक मूर्ति के निर्माण के पूर्व पट पूजन का कार्यक्रम आज अनगढ़ हनुमान मंदिर में रखा गया उन्होंने बताया कि पट पूजन कार्यक्रम में हमारे सांसद विवेक बंटी साहू मुख्य रूप से उपस्थित रहेंगे। आगे जानकारी में महाराजा परिवार के वरिष्ठ संदीप अग्निहोत्री, छिंदवाड़ा के महाराजा के मुख्य पुजारी पंडित श्रवण कृष्ण शास्त्री ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भगवान श्री गणेश छिंदवाड़ा के महाराजा की दिव्य एवं आकर्षक मूर्ति के निर्माण के पूर्व 19 जुलाई दिन शुक्रवार को स्थान अनगढ़ हनुमान मंदिर में दोपहर 12:00 बजे भगवान श्री गणेश छिंदवाड़ा के महाराजा की दिव्य मूर्ति का पटा पूजन पूरे विधि विधान एवं धार्मिक अनुष्ठानों के साथ संपन्न होगा महाराजा के 13 वर्ष की गणेश मूर्ति के निर्माण के पूर्व पूजन में महाराजा परिवार के मार्गदर्शक हमारे सांसद सपत्नीक इस पूजन को पूरे विधि विधान से करेंगे साथ ही महाराजा परिवार के सभी सदस्य भी पूजन में सम्मिलित रहेंगे ।

सांसद का होगा सम्मान

गणराज वेलफेयर सोसाइटी छिंदवारा के महाराजा द्वारा नवनिर्वाचित सांसद विवेक बंटी साहू सम्मान समारोह आयोजित किया गया है सांसद महोदय का सोसाइटी के सभी पदाधिकारी द्वारा सम्मान किया जाएगा। संस्था के वरिष्ठ सदस्य संदीप अग्निहोत्री ने सभी से इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने आग्रह किया है।

समाजसेवी दयानंद ने नल वॉल आपरेटरों को वितरित की बरसाती

छिंदवाड़ा - समाजसेवी दयानंद चौरसिया विगत् लंबे समय से समाजसेवा से जुड़े हुये हैं, और गरीब, जरूरमंदों की सेवा के साथ-साथ मूक पशुओं की सेवा करते भी उन्हे देखा जा सकता हे । आज उनके द्वारा बारिस में भीगते देख नगर निगम में कार्यरत नल खोलने वाले वॉल आपरेटरों एवं निगम के कुछ कर्मचारियों को बारिश से बचने हेतु बरसातियों का वितरण किया गया । दरअसल यह कर्मचारी शहर के समस्त वार्डों मैं हर घर में पानी पहुंचने का काम करते हैं ठंड हो या गर्मी या फिर बरसात ये मौसम की परवाह किए बगैर अपना काम समय पर पूर्ण करते हैं । समाजसेवी दयानंद चौरसिया ने बताया कि वे विगत दिनों पूर्व शहर में सुबह की सैर करने के लिए निकले तभी अचानक उन्हे कुछ नल खोलने वाले निगम कर्मियों को भीगते हुये देखा और कुछ कर्मचारियों को प्लास्टिक की पन्नी पहने हुये तब उन्होनें इन जरूरतमंद कर्मचारियों को बारिस से बचाव हेतु बरसाती देने का निश्चय किया और आज निगम के नल चालकों सहित अन्य कर्मचारियों को इस तरह से लगभग 20 कर्मचारियों को बरसाती भेंट की । बरसाती पाकर कर्मचारियों के चेहरे खिल उठे और उन्होनें दयानंद की भूरी-भूरी प्रशंसा की। इस कार्य में प्रखर रूपड़ा, आदित्य बनारसी, सुमेर सिंह नैयर ने भी सहयोग किया।

श्री झूलेलाल चालीसा उत्सव आज से

दूध से होगा भगवान का अभिषेक

छिंदवाड़ा। श्री झूलेलाल चालीसा सेवा समिति और पूज्य सिंधी पंचायत मिलकर छिंदवाड़ा में श्री झूलेलाल चालीसा उत्सव मनाने जा रहें हैं। इस उत्सव

का शुभारंभ 19 जुलाई दिन शुक्रवार को सुबह 8 बजे होगा। मोहन नगर स्थित श्री झूलेलाल मंदिर में भगवान झूलेलाल जी का दूध से अभिषेक होगा और ज्योत जलाई जाएगी। भजनों-कीर्तन और अरदास के माध्यम से सिंधी समाज भगवान झूलेलाल जी से छिंदवाड़ा सहित पूरे विश्व की सुख-शांति और समृद्धि की कामना करेगा। साथ ही छिंदवाड़ा में अच्छी बरसात की मंगल कामना भी की जाएगी। श्री झूलेलाल चालीसा के दौरान रोजाना सुबह-शाम झूलेलाल मंदिर में आरती और पल्लव होगा। इन चालीस दिनों में देश के नामी संतों और भजन मंडलियों का छिंदवाड़ा आगमन होगा और मोहन नगर स्थित सिंधु भवन में सत्संग-भजन-कीर्तन होंगे। भगवान श्री झूलेलाल जी के मंदिर में चालीसा व्रत महोत्सव का आयोजन 19 जुलाई से शुरू होकर 28 अगस्त को सम्पन्न होगा। खास बात यह है कि चालीसा के दौरान हर शुक्रवार सुबह 9 बजे बहराणा साहिब की पूजा की जाएगी और रात 9 बजे आरती के बाद साढ़े 9 बजे दीपदान किया जाएगा। हर शुक्रवार की रात झूलेलाल मंदिर में भंडारे का आयोजन भी होगा। पिछले 16 वर्षों से यह व्रत छिंदवाड़ा के इस प्रसिद्ध मंदिर में मनाया जा रहा है और हर साल 100- 120 भक्त इस व्रत को रखते हैं, यह विश्वास करते हुए कि भगवान श्री झूलेलाल उनकी सभी इच्छाओं को पूरा करेंगे। छिंदवाड़ा में श्री झूलेलाल चालीसा का यह 17 वां साल है। भगवान श्री झूलेलाल सिंधी समाज के ईष्ट देवता है एवं जल देवता के रूप में पूजे जाते हैं। भगवान श्री झूलेलाल जी को वरुण देवता का भी अवतार माना जाता है। चालीसा व्रत महोत्सव के दौरान,भक्त विशेष पूजा,बहराणां साहिब, अखो साहिब, आरती पल्लव, पंजडा और धुनी भजन-कीर्तन का आयोजन करते हैं। इस दौरान चालीसा पाठ पढ़ने का विशेष महत्व है। व्रत के दौरान सात्विक और सादा भोजन किया जाता है और बाल एवं दाढ़ी भी नहीं बनाए जाते हैं।

हिंदू युवती को प्रताड़ित कर रहा है मुस्लिम युवक

छिंदवाड़ा। विश्व हिंदू परिषद के नगर अध्यक्ष हिमाचल सिंह ठाकुर ने ,जानकारी देते हुए बतलाया कि, शिवपुरी

निवासी सीता कहार ने, शेख हनीफ उर्फ सूरज से 2016 में स्टांप पेपर में विवाह किया था ,हनीफ ने गुमराह कर विवाह कर लिया था, और अब उस हिंदू युवति को धर्म परिवर्तन करने का दबाव बना रहा है, और उसे मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रताड़ित भी कर रहा है। जानकारी में आगे बतलाया कि इस हिंदू युवति सीता कहार का, ढाई वर्ष का बेटा भी है, अब हिंदू युवति उसे ले लेकर न्याय के लिए दर-दर भटक रही है। इसी विषय को लेकर आज सीता कहार के साथ विश्व हिंदू परिषद के विनीत साहू इंद्रजीत पटेल कुणाल शर्मा सक्षम सरस्वार एवं अन्य हिंदूवादी संगठन के,कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में आवेदन लेकर पुलिस अधीक्षक के पास पहुंचे थे।

कांग्रेस संगठन के सक्रिय व निष्ठावान कार्यकर्ताओं की तैयार होगी सूची

विधायकगण, प्रभारी, पर्यवेक्षक व ब्लॉक अध्यक्ष की बैठक सम्पन्न

छिन्दवाड़ा। राजीव कांग्रेस भवन में आज पांढुर्ना एवं छिन्दवाड़ा जिला कांग्रेस की आवश्यक बैठक सम्पन्न हुई जिसमें संगठनात्मक विषयों को लेकर विमर्श किया गया साथ ही अमरवाड़ा विधानसभा उप चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी आंचलकुण्ड वाले श्री धीरनशा सुखरामदास (दादा जी) के विधानसभा क्षेत्र में ग्रामवार जनसम्पर्क की रूपरेखा तैयार की गई।

विधायकगण व पांढुर्ना एवं छिन्दवाड़ा जिला कांग्रेस के प्रभारी, पर्यवेक्षक एवं ब्लॉक अध्यक्ष की आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुये जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष श्री विश्वनाथ ओक्टे ने कहा कि 10 जुलाई को सम्पन्न हुये अमरवाड़ा विधानसभा उप चुनाव में कांग्रेस परिवार के प्रत्येक सदस्य ने मेहनत की तो वहीं इस चुनौती भरी परिस्थिति में कांग्रेस प्रत्याशी धीरनशा का भी हमें पूरा साथ मिला और हम जीते भी, किन्तु भाजपा ने षड्यंत्र से हमारी जीत को हार में बदला है यह बात कांग्रेस का प्रत्येक पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं आमजन भी जान चुके हैं। उन्होंने अपने उदबोधन में आगे कहा कि लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस छोड़ने वाले एवं इस दौरान पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ हमसे जुड़े रहे प्रत्येक कार्यकर्ता व पदाधिकारी की ब्लॉकवार सूची तैयार करने का आग्रह किया। कुछ लोग हमारे साथ दिख रहे हैं, किन्तु मानसिक रूप से वे हमारे साथ नहीं है ऐसे लोगों की भी कांग्रेस सूची तैयार करेगी।प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष श्री गंगाप्रसाद तिवारी ने आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज आवश्यकता है कि हम अपनी गलतियों को स्वीकार करें ना कि किसी पर उसे थोपें। यह आत्मसात करने का विषय है कि हमसे चूक कहां हुई और किन कारणों से हुई है उसे सुधारें ताकि भविष्य में वह पुर्नावत्ति ना हो। श्री तिवारी ने अपने सारगर्भित उदबोधन में आगे कहा कि सभी अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ पूरी करें कोई ताकत कांग्रेस को हरा नहीं सकती। कौन पद पर रहेगा और कौन नहीं रहेगा यह बाद का विषय है किन्तु वर्तमान विषय यह है कि सभी को एकजुट होकर कांधे से कांधा मिलाकर चलते हुये संगठन को मजबूत करने की दिशा में काम करना है साथ ही चार प्रमुख मोर्चा संगठन के अध्यक्ष, पर्यवेक्षक, प्रभारी व ब्लॉक अध्यक्ष सक्रियता के साथ कार्य करें एवं संगठन की आयोजित कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें।कांग्रेस मोर्चा संगठन के प्रभारी गोविंद राय ने कहा कि कठिन परिस्थितियों में भी जिन्होंने हमारा साथ नहीं छोड़ा वे ही हमारे सच्चे व निष्ठावान साथी है। हम सभी साथ मिलकर अब आगे की लड़ाई लड़ेंगे। अमरवाड़ा विधानसभा उप चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी आंचलकुण्ड वाले धीरनशा सुखरामदास (दादा जी) ने कहा कि उप चुनाव में कांग्रेस परिवार की ओर से पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है साथ ही अमरवाड़ा विधानसभा क्षेत्र की जनता का प्यार और विश्वास भी भरपूर प्राप्त हुआ है।

मातमी पर्व मोहर्रम मनाया...

क्षेत्र में निकाली गई ताजिया, बस स्टाप गुढ़ी में बटा लंगर

जुन्नारदेव गुढ़ी अंम्बाडा। मुशलमान समुदाय की और से मनाया जाने वाला मातमी पर्व मोहर्रम क्षेत्र में बड़े ही धूम धाम से मनाया गया, इस दौरान क्षेत्र की सड़?कों पर ताजिया निकाल भ्रमण कराया गया वही बस स्टाप गुढ़ी एवं गुढ़ी निवासी शहीद सुलेमानी एवं परिवार की और से लंगर बाटा गया। सनद रहे कि इस समूचे क्षेत्र में प्रतिवर्ष ही मातमी पर्व मोहर्रम बड़े ही धूम धाम से मनाया जाता है अंम्बाडा के इमाम% वाड़ा से ताजिया निकलती अम्बाड़ा गुढ़ी मायनस भ्रमण करते हुये ईद गाह (उपर टेक) करबला में ठंडी होती, इस दौरान बस स्टाप सहित गुढ़ी के शहीद सुलेमानी के यहा लंगर का आयोजन रहता, जहाँ सेकड़ो लोग आ पुलाव, शरबत, काफी का आनंद प्राप्त करते। गत 17 जुलाई को भी उक्त पर्व क्षेत्र में धूम धाम से मनाया गया, इस दौरान पुनः ताजिया निकाली गई, एवं बस स्टेन्ड गुढ़ी में अखाड़े का आयोजन किया गया ।

इस मातमी पर्व के अवसर में बस स्टाप गुढ़ी में लंगर बाटा गया, इस दौरान सैकड़ों लोगों ने यहा आ पुलाव का आनंद प्राप्त किया, इस अवसर पर समीति सर्व श्री *मैशर* *अली याकूब सिद्दीकि, अय्यूब (बबलू) सिद्धीकि, अतीक खान, ए टाईप इमरान, उपस्थित रहेः इस मातमी पर्व पर प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी गुढ़ी निवासी शहीद सुलेमानी की और से लंगर का आयोजन किया गया, जिसमें वेज- पुलाव, शरबत, एवं काफी बाटी गई, जिसमें क्षेत्र के सैकड़ो लोग आये एवं ग्रहण किया।इस अवसर पर वशी अहमद, मो. अलताब, मो. नसीम, मो. शहजाद, मो. राजा सुलेमानी अकील भाई आसिफ खान, एवं भोपाल से आये अब्दुल सलाम ने पूरे समय अच्छी व्यवस्था बनाये रखे, एवं अन्त में करबला (ऊपर टेक) ईद?गाह में ताजिया को ठंडा कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

कब मनाई जाएगी गुरु पूर्णिमा? जानें पूजा का तरीका और शुभ मुहूर्त

हर साल आषाढ़ माह में गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। शास्त्रों के अनुसार इस अवसर पर स्नान-दान और गुरु पूजा करने से जातक को जीवन में सभी प्रकार की समस्याओं से छुटकारा मिलता है। साथ ही स्नान-दान जगत के पालनहार भगवान विष्णु और गुरु की पूजा करने से जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में व्याप्त अंधकार दूर होता है।

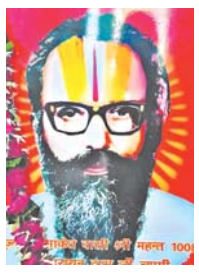

कब मनाई जाएगी गुरु पूर्णिमा? जानें पूजा का तरीका और शुभ मुहूर्त

गुरु पूर्णिमा आषाढ़ माह में पड़ती है।

इस दिन पूजा करने से जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

यह पर्व ज्ञान के महत्व का प्रतीक है।

सनातन धर्म में गुरु पूर्णिमा के त्योहार का अधिक महत्व है। हर साल यह पर्व आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि के दिन हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इसे आषाढ़ पूर्णिमा और गुरु पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। इस वर्ष यह पर्व 21 जुलाई रविवार को है। धार्मिक मान्यता है कि इस शुभ अवसर पर स्नान-दान और गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करने से सुख- समृद्धि की प्राप्ति होती है। ऐसे में आइए जानते हैं गुरु पूर्णिमा का शुभ मुहूर्त और पूजा विधि के बारे में।

गुरु पूर्णिमा 2024 शुभ मुहूर्त

पंचांग के अनुसार, आषाढ़ माह की पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 20 जुलाई को शाम 05 बजकर 59 मिनट से होगी और वहीं, इसका समापन अगले दिन यानी 21 जुलाई को दोपहर 03 बजकर 46 मिनट से होगा। सनातन धर्म में उदया तिथि का अधिक महत्व है। ऐसे में गुरु पूर्णिमा का पर्व 21 जुलाई को मनाया जाएगा।

गुरु पूर्णिमा पूजा विधि

गुरु पूर्णिमा के दिन सुबह जल्दी उठें और दिन की शुरुआत भगवान के ध्यान से करें। इसके बाद स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। सूर्य देव को जल अर्पित करें। इस समय निम्न मंत्र का जाप करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः

इसके बाद पूजा स्थल पर बैठकर जगत के पालनहार भगवान विष्णु और वेद व्यास जी को फूल, धूप, दीप, अक्षत, हल्दी आदि चीजें अर्पित करें। इसके बाद दीपक जलाकर आरती करें। सच्चे मन से गुरु कवच का पाठ करें। फल, मिठाई और खीर आदि चीजों का भोग लगाएं। अंत में प्रभु से जीवन में बुद्धि, विद्या और शांति की प्रार्थना करें। इस दिन गुरु की सेवा करना फलदायी होता है। श्रद्धा अनुसार गरीबों को अन्न, धन और वस्त्र का दान करें।

राजधानी भोपाल के धार्मिक आस्था के केन्द्र सनातन वैदिक धर्म के प्रमुख धर्मस्थल श्री रामानन्द संप्रदाय के श्री रामानन्द आश्रम गुफा मंदिर धाम लाल घाटी में गुरु पूर्णिमा महामहोत्सव वर्तमान मंहत श्री रामप्रवेश दास जी महाराज के सानिध्य में आयोजित होगा प्रातः 9 बजे व्यास गादी पूजन कर सभी शिष्य मंहत जी का पाद पूजन कर आशीर्वाद लेंगे उपरांत नये शिष्य गुरु मंत्र लेंगे कार्यक्रम देर शाम तक चलेगा।

पंडित लेखराज शर्मा ज्योतिषाचार्य
श्री गुफ़ा मंदिर धाम भोपाल

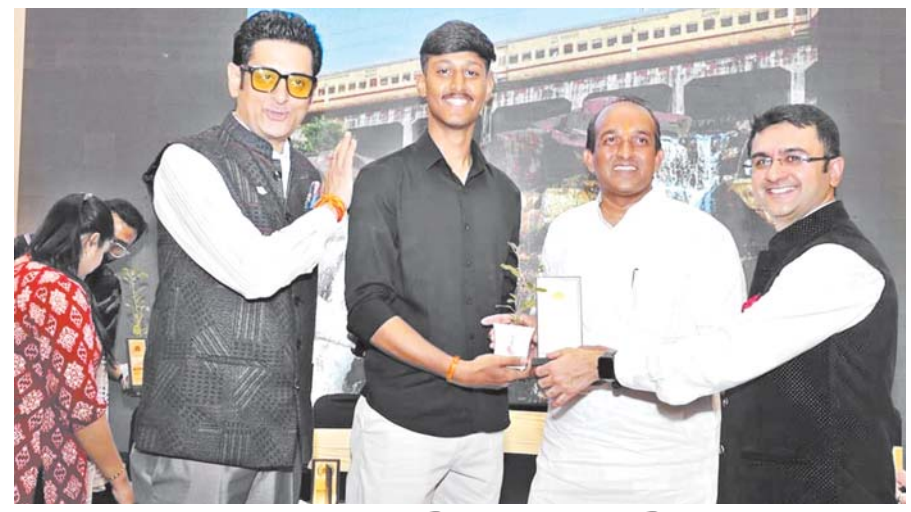

भोपाल एक साथ टीम (BEST) द्वारा विगत दिवस आयोजित 'भोपाल ब्रांड स्टोरी' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि

भोपाल। विश्वास कैलाश सारंग जी,खेल एवं सहकारिता मंत्री, मध्यप्रदेश शासन,श्री आलोक शर्मा जी,सांसद,भोपाल,श्रीमती मालती राय जी,महापौर,नगर निगम, भोपाल,श्री किशन सूर्यवंशी जी,अध्यक्ष, नगर निगम,भोपाल,श्री तेजकुलपाल सिंह पाली जी,अध्यक्ष बीसीसीआई द्वारा ÷भोपाल ब्रांड बुक÷ का विमोचन एवं भोपाल के ब्रांड को राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने वाले नागरिकों का सम्मान किया गया बेस्ट टीम द्वारा प्रदत्त कार्यक्रम संचालन की महती भूमिका का निर्वहन हमारे द्वारा सफलतापूर्वक किया गया बेस्ट फाउंडर श्री स्श्चड्डद्धह्वद्ध ष्ठ2द्व1द्गस्त्रद्ध के कुशल नेतृत्व में सपूर्ण इवेंट, भोपाल ब्रांडिंग टॉक शो,भोपाल ब्रांड बुक विमोचन,भोपाल ब्रांड एंडोर्सर्स अवार्ड-2024 का वितरण भी किया गया भोपाल वर्ल्ड क्लास विकसित राजधानी के संकल्प साथ आयोजित सार्थक कार्यक्रम के लिए समस्त साथियो का आत्मीय आभार कार्यक्रम में भोपाल के उद्योगपति विभिन्न व्यापारिक एवम सामाजिक संस्थाओ के पदाधिकारीगण, विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली मातृशक्ति व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह आज 12:00 बजे भोपाल पुलिस कमिश्नर को देंगे शिकायती आवेदन।

मंत्री कंसाना को विजयपुर विस का प्रभारी बनने पर बधाई

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी ने विधानसभा उपचुनाव को ध्यान में रखते हुए मुरैना जिले की विजयपुर विधानसभा के प्रभारी किसान एवं कल्याण मंत्री ऐदल सिंह कंसाना को तथा सह प्रभारी नरेंद्र बिरथरे वही बुधनी का प्रभारी मंत्री करण सिंह वर्मा सह प्रभारी पूर्व मंत्री रामपाल को बनाया गया है ज्ञातरहे कि विजयपुर विधानसभा रामनिवास रावत के इस्तीफा देने के कारण तथा बुधनी विधानसभा पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के इस्तीफा देने के कारण खाली हुई है हालांकि अभी चुनाव आयोग ने चुनाव की तिथि घोषित नहीं की है लेकिन भाजपा के अध्यक्ष बीडी शर्मा अभी से चुनाव जीतने की रणनीति बनाने में जुट गए हैं ऐदल सिंह कंसाना को विजयपुर का प्रभारी बनाए जाने पर पार्षद प्रतिनिधि जगदीश यादव कप्तान यादव एवंविजयपुर क्षेत्र के कई वरिष्ठ जनों ने उनके शासकीयआवास पर जाकर उन्हें बधाई दी।

गोविंदपुरा में कार्यकर्ता अभिनंदन समारोह संपन्न

रिकार्ड विजय के रूप में दिखी कार्यकर्ताओं की मेहनत : सांसद आलोक शर्मा ने जताया आभार

भोपाल। सांसद आलोक शर्मा चुनाव में रिकार्ड मतों से विजय प्राप्त होने पर गुरुवार को आभार व्यक्त करने गोविंदपुरा विधानसभा के कार्यकर्ताओं के बीच पहुंचे। सांसद आलोक शर्मा ने गोविंदपुरा की विधायक व मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर व जिलाध्यक्ष सुमित पचौरी के साथ पार्टी के कार्यकर्ताओं पर पुष्पवर्षा कर उनका स्वागत किया, अभिनंदन किया। इस अवसर पर उन्होंने कार्यकर्ताओं का सम्मान किया और संबोधित भी किया। सांसद शर्मा ने कार्यकर्ताओं की प्रसंशा करते हुए कहा कि चुनाव में रिकार्ड बनाने के लिए आपने जो मेहनत की है वह परिणाम के रूप में सबके सामने है। आपने कांग्रेस के इरादों को ध्वस्त किया है। आप पार्टी की असली ताकत है, आत्मा है, रीढ़ है। मैं अपनी यह विजय आप सभी कार्यकर्ताओं को समर्पित करता हूं। कार्यकर्ता अभिनंदन समारोह में मध्य प्रदेश शासन की मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर जिला अध्यक्ष श्री सुमित पचौरी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सत्यार्थ अग्रवाल, विधानसभा प्रभारी, संयोजक, गोविंदपुरा विधानसभा के सभी मंडल के अध्यक्ष, एमआईसी सदस्य, पार्षदगण, वरिष्ठ कार्यकर्ता, विभिन्न मोर्चों के कार्यकर्ता, बूथ व शक्ति केंद्र के कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

इंदौर में पहली बार इंटरनेशनल ब्यूटी पेजेंट, देशभर की 30 मॉडल्स होगी शामिल

इंदौर। इंदौर शहर में पहली बार एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का ब्यूटी पेजेंट आयोजित होने जा रहा है। 19 और 20 जुलाई को होने वाले इस ब्यूटी पेजेंट ÷मिस एंड मिसेसे एशिया पेसिफिक वर्ल्ड÷ में देशभर की 30 मॉडल्स भाग लेंगी। इनमें से 3 प्रतिभागी इंदौर से, 2 एनआरआई, और बाकी अन्य राज्यों से हैं।

इवेंट डायरेक्टर मिसेस इंडिया यूनिवर्स प्रिया शुक्ला ने बताया कि यह इंटरनेशनल लेवल का पहला इवेंट इंदौर में आयोजित किया जा रहा है। यहां से चयनित मिसेस को साउथ कोरिया में होने वाले मिसेस यूनिवर्स और मिस को कनाडा में होने वाले कॉस्मॉस वर्ल्डवाइड पेजेंट में भाग लेने का मौका मिलेगा।

इवेंट डायरेक्टर निरुपमा वर्मा ने जानकारी दी कि 19 जुलाई से शुरू होने वाले पेजेंट का फाइनल 20 जुलाई को होगा, जिसे अभिनेत्री जया प्रदा, अदिति गोवित्रिकर और इंडियन आइडल फेम आध्या मिश्रा जज करेंगी।

18 से 55 साल तक की प्रतिभागी, सात राउंड होंगे- इवेंट कॉर्डिनेटर पियूष जैन ने बताया कि पेजेंट में 18 से 55 साल तक की प्रतिभागी शामिल होंगी। इनके बीच सात राउंड्स होंगे, जिनमें इंट्रोडक्शन, पर्सनल इंटरव्यू, टैलेंट, पोजिंग स्किल्स, कैटवॉक, ट्रेडिशनल और नेशनल कास्ट्यूम राउंड शामिल हैं। एक राउंड में सभी प्रतिभागी खुद को किसी न किसी देवी के रूप में प्रस्तुत करेंगी। विजेता की घोषणा 20 जुलाई को देर रात होगी।

लाइव बैंड पर परफॉर्मेंस- प्रिया शुक्ला ने बताया कि रैम्प वॉक और विभिन्न राउंड्स के साथ ही इस पेजेंट में एक लाइव सूफी बैंड भी परफॉर्म करेगा। कोरस सूफी बैंड अपनी परफॉर्मेंस से लोगों का ध्यान खींचेगा।

दैनिक सांध्य प्रकाश

15 जुलाई दैनिक सांध्य प्रकाश
54 वें स्थापना दिवस
के मौके पर में जमीअत उलमा मध्यप्रदेश एवं मध्यप्रदेश सर्वधर्म सद्भावना मंच की और से पुरखुलूस मुबारक पेश करता हूँ

पिछले कई वर्षो से दैनिक सांध्य प्रकाश द्वारा हमारी समाज सेवा से जुड़ी गतिविधियों को आम जन तक पोहचाने मे समाचार पत्र का अहम किरदार रहा है हमारी टीम द्वारा जब जब भी ज़रूरत बेवाओं यतीमों बे सहारो की मदद ज़रूरत मंद बच्चों की शिक्षा में मदद या बे रोज़गारों को रोजगार देने के प्रयास हों या शहर में सद्भावना अमनो अमान क़ायम रखने हर तेहवारो को हमारी टीम द्वारा मिल जुल कर मनाया गया होली मिलन ईद मिलन सामुहिक सर्वधर्म रोज़ा अफ्तार या अन्य कोई सद्भावना के कार्य म हुए हो या मानव सेवा से जुड़े कोई भी कार्य हमारी टीम द्वारा किए जा रहे हो तब तब समाचार पत्र सांध्य प्रकाश द्वारा उसको प्रकाशित कर हमारे द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की है हम और हमारी पूरी टीम सांध्य प्रकाश समाचार पत्र की पूरी यूनिट को 54 वें स्थापना दिवस की मुबारकबाद पेश करते है और उम्मीद करते है आगे भी ये समाचार पत्र शहर से जुड़े अहम मुद्दों पर प्रकाश डालता रहेगा।

हाजी मोहम्मद इमरान
हारून ख़ादिम जमीअत उलमा मध्यप्रदेश एवं
सचिव मध्यप्रदेश सर्वधर्म सद्भावना मंच

इंदौर में भीख मांगना और देना अपराध, कलेक्टर ने प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए!

इंदौर। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी आशीष सिंह ने भिक्षा वृत्ति/बाल भिक्षा वृत्ति की रोकथाम के संबंध में भारतीय नागरिक सुरक्षा अधिनियम 2023 की धारा 163 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए है। जारी आदेश का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। उल्लंघन दण्डनीय अपराध के श्रेणी में आएगा।

जारी आदेश के अनुसार भिक्षुओं को भीख स्वरूप कुछ भी देना या नाबालिग बच्चों से किसी सामान को खरीदना इस आदेश से निषेध किया गया है। इसका उल्लंघन दण्डनीय होगा। जो व्यक्ति भिक्षुओं या किसी नाबालिग बच्चे को भीख स्वरूप कोई चीज प्रदान करता है या देता है या नाबालिग बच्चे से कोई सामान खरीदता हैं तो उसके विरूद्ध इस आदेश के उल्लंघन पर कानूनी कार्यवाही की जायेगी। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है जो 14 सितम्बर 2024 तक प्रभावशील रहेगा।

यह आदेश समाचार पत्रों एवं अन्य माध्यमों से ध्यान में लाये गये तथ्य एवं सड़क पर रहने वाले बच्चों के पुर्नवास नीति 2022 के परिपालन में जारी किया गया है। इन्दौर जिले में ट्रैफिक सिग्नल, चौराहों, धार्मिक स्थलों, पर्यटन स्थलों एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे स्वयं या अपने परिवारों के साथ भिक्षा वृत्ति में संलग्न पाये जाते देखे गये है। शहर में बाल भिक्षा वृत्ति में संलग्न बच्चों के साथ कई बार अन्य राज्यों/जिलों के बच्चे भी सम्मिलित होते है। भिक्षा वृत्ति कार्य में संलग्न अधिकांश बच्चे नशे या अन्य गतिविधियों में लिप्त भी होते है। इसी तरह बाल भिक्षा वृत्ति कराने के लिए बच्चों की तस्करी के मामले संज्ञान में आये है।

बच्चों के ट्रैफिक सिग्नल पर भिक्षा वृत्ति के कारण बच्चों की दुर्घटना होने की आशंका अधिक होने के साथ-साथ यह एक सामाजिक बुराई है। भिक्षावृत्ति पर रोक हेतु किशोर न्याय (बालकों की देख रेख और संरक्षण) अधिनियम 2015 तथा राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा भी भिक्षा वृत्ति को रोकने हेतु समुचित निर्देश जारी किये गये हैं। ज्ञातव्य है कि जिले में भिक्षा वृत्ति/बाल भिक्षा वृत्ति को रोकने के लिए विभिन्न विभागों के सात दल गठित किये गये है, जो लगातार भिक्षा वृत्ति/बाल भिक्षा वृत्ति को रोकने के लिए प्रयास कर रहे है।

दैनिक सांध्यप्रकाश के 53 वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई, शुभकामनाएं

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री

नगरपालिक निगम छिंदवाड़ा

शहर में स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 को लेकर तैयारियां तेज चल रही है निगम आयुक्त श्री चंद्रप्रकाश राय के निर्देशानुसार शहर में स्वच्छता संबंधी वॉल पेंटिंग, बाउंड्रीवाल को आकर्षण रूप से रंगरोगन किया जा रहा है, डोर टू डोर कचरा वाहन के माध्यम से 100 प्रतिशत कचरा कलेक्शन व सेग्रीगेशन के साथ लिया जा रहा है

बंटी विवेक साहू
सांसद, छिंदवाड़ा

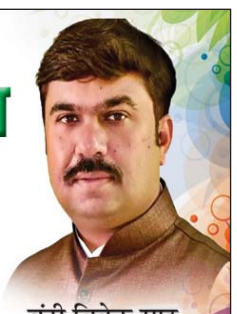

- वर्ष 2022 में जी.एफ.सी. स्टार रेटिंग में नगर निगम को 03 स्टार प्राप्त हुआ।
- छिंदवाड़ा में बेस्ट सिटीजन फिडबेक में 01 से 10 लाख जनसंख्या में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ एवं राष्ट्रीय पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2023 में शहर को 01 स्टार प्राप्त हुआ तथा बेस्ट सिटीजन फिडबेक में राज्य स्तर पर द्वितीय एवं स्वच्छ बुटीफिकेशन में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।
- शहर में प्लास्टिक प्रतिबंध हेतु विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही ठोस एवं तरह अपशिष्ट प्रसंस्करण द्वारा उच्च गुणवत्ता वाली खाद तैयार की जा रही है।

चंद्रप्रकाश राय
आयुक्त

समस्त सभापति
एवं पार्षदगण

विक्रम अहाके
महापौर

नगरपालिक निगम छिंदवाड़ा